जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

जयपुर, गुरुवार 17 जुलाई, 2025

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

2025
International Year
of Cooperatives
Cooperatives Build a Better World

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के अवसर पर

सहकार एवं रोजगार उत्सव

मुख्य अतिथि

श्री अमित शाह

माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री

गरिमामय उपस्थिति

श्री भजनलाल शर्मा

माननीय मुख्यमंत्री

- अन्न भण्डारण योजना के तहत निर्मित 24 गोदामों का लोकार्पण
- श्री अन्न के प्रोत्साहन हेतु संचालित 64 मिलेट्स आउटलेट्स का लोकार्पण
- गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के तहत 1400 लाभार्थियों को ₹ 12 करोड़ का ऋण वितरण
- दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों को 2346 माइक्रो एटीएम का वितरण
- श्वेत क्रांति 2.0 पीडीसीएस ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन प्लेटफार्म की लॉन्चिंग
- थानों,सशस्त्र बलों,ट्रूप कैरीअर तथा प्रशिक्षण हेतु 100 नए पुलिस वाहनों का फ्लैग ऑफ़

8 हजार से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी के नियुक्ति पत्रों का वितरण

17 जुलाई, 2025 । प्रातः 11:00 बजे । स्थान - दादिया, वाटिका, जयपुर

सहकार से समृद्धि

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

माननीय केंद्रीय गृह एवं
सहकारिता मंत्री
श्री अमित शाह जी
अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के
ऐतिहासिक अवसर पर आयोजित सहकार एवं रोजगार उत्सव
में जयपुर आगमन पर हार्दिक स्वागत एवं
अभिनंदन
दिनांक :- 17 जुलाई 2025, गुरुवार
समय :- प्रातः 10.30
स्थान :- ग्राम-दादिया, जयपुर-दौसा बाई पास (रिंग रोड), जयपुर
भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान

फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 345 प्रभात जयपुर, गुरुवार 17 जुलाई, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

ARBIT

The Mughal Women Ruled

One person was bitter about Jahanara's huge popularity: Aurangzeb's other sister, Roshanara. Feisty and fun-loving, but resentful that she had to live in Jahanara's shadow

Tears For Life

We Give Medicines To Our Children Too Soon

दादिया में गुरुवार को सहकार एवं रोजगार उत्सव का आयोजन

केन्द्रीय मंत्री अमित शाह प्रदेश को बड़ी सौगात देंगे, युवाओं को नियुक्ति पत्र मिलेंगे- मुख्यमंत्री भजनलाल

■ दादिया में बड़ा सभा स्थल तैयार किया जा रहा है। रिंग रोड पर सभा स्थल पर तीन डोम बनाये गये हैं। तीनों डोम में लगभग एक लाख लोगों के बैठने की व्यवस्था की गई है।

जयपुर के ग्राम दादिया में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के मुख्य आतिथ्य में गुरूवार को होने वाले सहकार एवं रोजगार उत्सव के सभा स्थल की तैयारियों का मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने निरीक्षण किया और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, सांसद मदन राठौड़, सीपी जोशी, मुख्य सचिव सुधांश पंत मौजूद थे।

जयपुर, 16 जुलाई। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के मुख्य आतिथ्य में गुरुवार को जयपुर के ग्राम दादिया में सहकार एवं रोजगार उत्सव का आयोजन होगा। इसी क्रम में, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार शाम को सभा स्थल पर पहुंचकर तैयारियों का विस्तृत जायजा लेकर संबंधित अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए।

शर्मा ने कार्यक्रम स्थल पर मीडिया से बातचीत में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हमारी डबल इंजन की सरकार आमजन से संकल्प पत्र में किए गये वादों को पूरा कर रही है। अंतिम पायदान पर खड़े जरूरतमंद व्यक्ति को सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। युवाओं से किये वादे को पूरा करते हुए गुरुवार को आयोजित होने वाले रोजगार उत्सव में नियुक्ति पत्र दिये जाएंगे। उन्होंने कहा कि सहकारिता का गांव, किसान, गरीब और मजदूर से अहम जुड़ाव है। केन्द्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में इसके विस्तार से इन वर्गों का उत्थान हो रहा है।

मुख्यमंत्री ने सभा स्थल का निरीक्षण करते हुए, बैठक, पेयजल, पार्किंग सहित अन्य व्यवस्थाओं के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट का ''उदयपुर फाइल्स'' पर रोक हटाने से इन्कार

उदयपुर,16 जुलाई (कासं)। सुप्रीम कोर्ट ने उदयपुर के कन्हैयालाल हत्याकांड पर बनी फिल्म की रिलीज पर रोक हटाने से फिलहाल इन्कार कर दिया। अब सुप्रीम कोर्ट इस मामले में 21 जुलाई को सुनवाई करेगा।

जस्टिस सूर्यकांत और जॉयमाला बागची की बैंच ने ये निर्देश फिल्म निर्माता कंपनी, जानी फायर फॉक्स मीडिया प्राइवेट लिमिटेड की अपील और कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपी मोहम्मद जावेद की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

■ अदालत ने मौखिक टिप्पणी की कि फिल्म के रिलीज़ होने से मामले का ट्रायल प्रभावित हो सकता है।

जानकारी के अनुसार, इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने मौखिक टिप्पणी करते हुए कहा कि प्रथम दृष्ट्या ऐसा लगता है कि अगर उदयपुर फाइल्स फिल्म रिलीज होती है तो मामले में चल रहा ट्रायल प्रभावित हो सकता है। यदि ऐसा होता है तो यह बड़ा नुकसान होगा। अगर मूवी की रिलीज में देरी हो रही है तो आर्थिक नुकसान की भरपाई के लिए मुआवज़ा दिया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र की ओर से गठित कमेटी से भी कहा है कि वह मामले में जल्द फैसला ले।

प्रार्थी के वकील गौरव भाटिया ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारत को ''फिफ्थ जैनरेशन'' लड़ाकू विमानों को शामिल करने की स्वीकृति मिली

यह विमान भारत स्वयं ''डीआरडीओ'' में विकसित कर रहा है। इन आधुनिकतम विमानों को शामिल करने के बाद अमेरिका, रूस व चीन की श्रेणी में आ जायेगा भारत, जिनके पास ''फिफ्थ जैनरेशन'' आधुनिकतम लड़ाकू विमान की टुकड़ी है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जुलाई। पाकिस्तान के साथ अपनी पश्चिमी सीमा पर सैन्य ताकत बढ़ाने के लिए भारत एक बड़ा कदम उठाने जा रहा है। अमेरिका में बने अपाचे अटैक हेलीकॉप्टर जल्द ही फ्रंटलाइन पर तैनात किए जाएंगे। साथ ही, भारत के घरेलू 5वीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान प्रोजेक्ट- 'एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एएमसीए)' को भी हरी झंडी मिल गई है।

ये दोनों पहल भारत की वायु शक्ति को अभी और भविष्य, दोनों में मज़बूत करने की दिशा में अहम मानी जा रही हैं, खासकर तब, जब क्षेत्र में तनाव और शक्ति संतुलन तेजी से बदल रहे हैं।

21 जुलाई को एएच -64ई अपाचे हेलीकॉप्टरों की पहली खेप हिंडन एयर फोर्स स्टेशन पर उतरेगी, जिससे भारतीय सेना की हमलावर और निगरानी क्षमता बढ़ेगी। अपाचे अटैक हेलीकॉप्टर्स को ''टैंक्स इन द एयर''

■ साथ ही, 21 जुलाई को ''अपाची हैलिकॉप्टर'' जिन्हें ''टैंक्स इन दी एयर'' भी कहा जाता है, की पहली टुकड़ी हिण्डन एयर फोर्स स्टेशन पर पहुँचेगी, भारतीय सेना में शामिल होने के लिए।

■ भारतीय सेना ने इन अपाची हैलिकॉप्टर की सप्लाई के लिए, 15 माह पहले ऑर्डर दिया था, पर, कई कारणों से, विशेषकर यूक्रेन-रूस युद्ध के कारण, हैलिकॉप्टरों की सप्लाई में भारी विलम्ब हो गया था। पर, अब ये हैलिकॉप्टर, हिण्डन एयरबेस पर पहुँच रहे हैं।

■ भारत की इसी बढ़ी हुई हवाई ताकत की बराबरी करने में अभी पाकिस्तान को काफी समय लगेगा।

अर्थात ''हवाई तोपखाना'' कहा जाता है, क्योंकि ये अत्याधुनिक टारगेटिंग सिस्टम, नाइट विज़न नेविगेशन और मल्टी-रोल सेंसर से लैस हैं। ये हर मौसम और कई तरह के मिशनों, जैसे फ्रंटलाइन हमला, शांति मिशन और निगरानी में इस्तेमाल किए जा सकते हैं।

हालांकि, इनकी डिलीवरी लगभग 15 महीने की देरी से हो रही है, जिसकी वजह करोना महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध जैसे वैश्विक कारणों से आपूर्ति श्रृंखला में आई बाधाएं रही हैं।

भारतीय वायुसेना पहले से ही पठानकोट और जोरहाट में अपाचे के दो स्क्वाड्रन चला रही है। उन्हें ये

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जम्मू-कश्मीर में उर्दू की अनिवार्यता पर मचा बवाल

नायब तहसीलदार परीक्षा में उर्दू की अनिवार्यता के राज्य सरकार के आदेश पर सैंट्रल एडिमिनिस्ट्रेटिव ट्रिब्यूनल ने रोक लगाई

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जुलाई। केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण (सेन्ट्रल एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रिब्यूनल-सीएटी) ने जम्मू-कश्मीर सरकार के 9 जून के उस आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें नायब तहसीलदार पद के आवेदकों के लिए उर्दू भाषा का ज्ञान अनिवार्य किया गया था।

नौकरी के आकांक्षी उम्मीदवारों द्वारा इस शर्त को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई करते हुए, सीएटी ने जम्मू-कश्मीर सेवा चयन भर्ती बोर्ड (जेकेएसएसआरबी) को निर्देश दिया कि वह जम्मू-कश्मीर राजकीय भाषाएँ अधिनियम, 2020 के तहत हिंदी, कश्मीरी, अंग्रेज़ी, डोगरी या उर्दू-इन पांच आधिकारिक भाषाओं में से किसी एक भाषा का ज्ञान रखने वाले स्नातक उम्मीदवारों के आवेदन स्वीकार करे।

■ जम्मू-कश्मीर सरकार के इस आदेश का राज्य भाजपा व कई अभ्यर्थियों ने भारी विरोध किया था।

■ फिर कुछ अभ्यर्थियों ने इस आदेश को सैंट्रल एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रिब्यूनल में चुनौती दी।

■ ट्रिब्यूनल की दो सदस्यीय बैंच ने जम्मू-कश्मीर सलैक्शन रिक्रूटमैंट बोर्ड को आदेश दिया कि जम्मू-कश्मीर ऑफिशियल लैंग्वेज एक्ट 2020, के तहत हिंदी, कश्मीरी, अंग्रेजी, डोगरी और उर्दू में से किसी भी एक भाषा का जानकार परीक्षा का पात्र है।

सीएटी की दो सदस्यीय पीठ, जिसमें न्यायिक सदस्य राजिंदर डोगरा, जिन्होंने बैंच की अध्यक्षता की, और प्रशासनिक सदस्य राम मोहन जौहरी शामिल थे, ने इस शर्त को ''प्रथम दृष्टया भेदभावपूर्ण'' बताया और प्रतिवादियों को नोटिस जारी करते हुए अगली सुनवाई की तारीख 13 अगस्त निर्धारित की।

भाजपा ने सीएटी के इस फैसले का स्वागत करते हुए उर्दू भाषा की अनिवार्यता को ''अवैध और भेदभावपूर्ण'' करार दिया है।

भाजपा के वरिष्ठ विधायक और अधिवक्ता आर. एस. पठानिया ने पत्रकारों से कहा, ''हम सीएटी द्वारा नेशनल कॉन्फ्रेंस सरकार के इस अवैध और भेदभावपूर्ण आदेश पर रोक लगाने के फैसले का स्वागत करते हैं। यह हमारी जीत है।''

हाईकोर्ट ने व्यवसायी की अवैध हिरासत पर जवाब मांगा

जयपुर, 16 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने शहर के एक व्यवसायी को अवैध रुप से हिरासत में रखने के मामले में भांकरोटा थाने के एसएचओ को 22जुलाई को अदालत में उपस्थित रहने का निर्देश दिया है। वहीं, मामले में जयपुर पुलिस कमिश्नर को शपथ पत्र सहित जवाब देने के लिए कहा है। जस्टिस समीर जैन ने सांगानेर निवासी

■ जयपुर पुलिस कमिश्नर को शपथ पत्र देने व भांकरोटा एसएचओ को उपस्थित होने के निर्देश दिए।

रामदेव हरितवाल की याचिका पर यह निर्देश दिया। अदालत ने आगामी सुनवाई तक मामले की अग्रिम कार्रवाई पर भी रोक लगा दी है। मामले से जुड़े अधिवक्ता मोहित खण्डेलवाल ने बताया कि शिकायतकर्ता व प्रार्थी के बीच में रुपयों के लेन-देन व इकरारनामे का विवाद था और कोर्ट में सिविल केस लंबित था। इस मामले में हाईकोर्ट ने भी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चंद्रबाबू नायडू ने चुनाव आयोग को पत्र बहुत सोच समझकर लिखा है

नायडू ने मतदाता सूची में ''रिविज़न'' कर चिंता जताई है, जिससे मुसलमानों का मताधिकार संकट में पड़ सकता है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जुलाई। तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) प्रमुख और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने नरेन्द्र मोदी-अमित शाह नेतृत्व को स्पष्ट रूप से अपने असंतोष का संकेत दे दिया है। उन्होंने भारतीय निर्वाचन आयोग (ईसीआई) के उस निर्देश को लेकर असहमति जताई है, जिसमें बिहार में चल रही विवादास्पद प्रक्रिया की तर्ज पर, सभी राज्यों में मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण की बात कही गई है।

टीडीपी के शीर्ष सूत्रों ने इस बात की पुष्टि की है कि नायडू ने निर्वाचन आयोग को अपनी आपत्तियां बता दी हैं। उन्हें आशंका है कि इस तरह की प्रक्रिया से अल्पसंख्यक मतदाताओं, विशेष रूप से आंध्र प्रदेश के बड़े मुस्लिम मतदाता वर्ग, के मताधिकार पर असर पड़ सकता है। आयोग को भेजे गए टीडीपी के इस सुस्पष्ट पत्र ने राजनीतिक

■ नायडू मुस्लिम मतदाताओं को आश्वस्त करना चाहते हैं, जो ''रिविज़न'' में मताधिकार खोने की आशंका व भ्रम से आतंकित हैं।

■ नायडू, मोदी व संघ परिवार के बीच सब कुछ ठीक न होने की चर्चा से प्रभावित हैं। अगर मोदी पचहत्तर साल की उम्र पार करने के बाद, प्र.मंत्री पद त्यागते हैं तो संघ व भाजपा के संबंधों में नये समीकरण बनेंगे। नायडू, इन नये समीकरणों को भी ध्यान में रखते हुए, मतदाता सूचियों पर अपना विकल्प खुला रखना चाहते हैं।

हलकों में बहस छेड़ दी है, और कई विश्लेषकों का मानना है कि यह पार्टी की एक रणनीतिक कोशिश है, ताकि पार्टी स्वयं को मतदाता सूची प्रबंधन के कथित सांप्रदायिक एजेंडे से दूर दिखा सके।

जहाँ नायडू अब भी भाजपा नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन का हिस्सा हैं, वहीं, टीडीपी के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि पार्टी पर बिल्कुल स्पष्ट रुख अपनाने का दबाव बढ़ता जा रहा है। मिश्रित जनसंख्या वाले क्षेत्रों में पार्टी कार्यकर्ता इस बात को लेकर चिंतित हैं कि यदि टीडीपी निर्वाचन आयोग के कदमों का समर्थन करती दिखाई देगी, तो पार्टी को मतदाताओं की नाराज़गी झेलनी पड़ सकती है।

इस बीच, नायडू अपने विकल्पों पर सावधानीपूर्वक विचार कर रहे हैं। उनकी सरकार को केन्द्र से वित्तीय सहायता का लाभ मिला है, खासकर पिछले चुनावी चक्र में। एक वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक के अनुसार, नायडू की रणनीति में व्यावहारिकता और पूर्वानुमान, दोनों शामिल हैं। उसमें यह भी शामिल है कि चूँकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इसी साल 75 वर्ष के हो जाएंगे, इसलिये भाजपा और आरएसएस में नेतृत्व परिवर्तन की संभावना पैदा हो सकती है।

संघ परिवार के भीतर भी मोदी की नीतियों को लेकर असंतोष बढ़ने की खबरें हैं। हालांकि नायडू की एनडीए से तत्काल बाहर निकलने की कोई योजना नहीं है, लेकिन टीडीपी सूत्रों की मानें, तो वे संघ-भाजपा के बदलते समीकरणों और राज्य स्तर की राजनीतिक हलचलों पर पैनी नज़र रखे हुए हैं।

फिलहाल, टीडीपी सर्तकता से सहयोग की नीति पर चल रही है, लेकिन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एसीबी केस में कनिष्ठ लेखाकार को 17 साल बाद सजा

जयपुर, 16 जुलाई। एसीबी मामलों की विशेष अदालत क्रम-2, महानगर द्वितीय ने 17 साल पहले जिला शिक्षा अधिकारी के झुंझुनूं कार्यालय में रिश्वत से जुड़े मामले में तत्कालीन कनिष्ठ लेखाकार शीशराम को दो साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही, पीठासीन अधिकारी प्रहलाद राय शर्मा ने अभियुक्त पर चालीस हजार रुपए का जुर्माना भी

■ कनिष्ठ लेखाकार 12 मई 2008 को 5 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया था।

लगाया है।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक मंजुला जैन ने अदालत को बताया कि ग्राम कांजड़ा-पिलानी स्थित एक निजी स्कूल के सचिव मंजीत सिंह तंवर ने एसीबी में शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायत में कहा गया था कि स्कूल को सीनियर सैकण्डरी में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'न्यायिक सेवा में तीन साल की प्रैक्टिस की अनिवार्यता ''मौलिक अधिकारों का उल्लंघन'' है'

एडवोकेट चंद्रसेन यादव ने सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका में यह दावा किया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जुलाई। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता कॉलिन गोंजाल्विस ने सर्वोच्च न्यायालय में एक पुनर्विचार याचिका दायर की है, जिसमें न्यायालय के उस हालिया निर्णय को चुनौती दी गई है, जिसमें सिविल जज (कनिष्ठ श्रेणी) पद के लिए तीन साल की वकालत अनिवार्य कर दी गई थी।

मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई की अध्यक्षता वाली पीठ, जिसमें न्यायमूर्ति ए. जी. मसीह और के. विनोद चंद्रन शामिल थे, ने 20 मई को निर्णय सुनाया था कि न्यायिक सेवा में आने के लिए उम्मीदवार को कम से कम तीन साल की वकालत का अनुभव होना चाहिए।

कोर्ट ने देश के सभी उच्च न्यायालयों और राज्य सरकारों को निर्देश दिया था कि वे अपने सम्बन्धित सेवा नियमों में संशोधन कर के इस निर्णय को लागू करें।

हालांकि, अदालत ने यह भी स्पष्ट किया था कि जहाँ हाई कोर्ट सिविल जज (जूनियर डिविज़न) के पद के चयन प्रक्रिया इस निर्णय से पहले ही शुरु हो गई है, वहाँ यह नियम लागू नहीं होगा।

यह पुनर्विचार याचिका अधिवक्ता सत्य मित्र के माध्यम से दाखिल की गई है। इसमें इस फैसले को 17 आधारों पर चुनौती दी गई है।

याचिका के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट ने, अन्य बिन्दुओं के साथ ही, 1924 से 1986 तक की पाँच विधि आयोग रिपोर्टों को नज़रअंदाज किया है, जिनमें सर्वसम्मति से वकालत की अनिवार्यता

■ सुप्रीम कोर्ट ने मई 2025 में न्यायिक सेवा के लिए 3 साल की प्रैक्टिस का नियम बहाल कर दिया था और तब से इसके खिलाफ याचिकाएं दायर हुई हैं, इस फैसले को 17 आधारों पर चुनौती दी गई।

■ याचिका दायर करने वालों का कहना है कि इसमें सबसे बड़ा नुकसान न्यायिक सेवा में जाने की इच्छुक महिलाओं का होगा, क्योंकि उन पर जल्दी शादी करने का दबाव होता है। इसलिए वे तीन साल प्रैक्टिस की अनिवार्यता की शर्त को पूरा नहीं कर पाएंगी।

को न्यायिक नियुक्तियों के लिए अनिवार्य मानने से इनकार किया गया था।

इसके अलावा, याचिका में दूसरे न्यायिक वेतन आयोग की रिपोर्ट (2022) का भी हवाला दिया गया है, जिसमें कहा गया था कि इस तरह के पात्रता नियमों को लागू करने से पहले, विस्तृत परामर्श की प्रक्रिया आवश्यक है।

पुनर्विचार याचिका के अनुसार, इस निर्णय में भारत के जुड़िसियल ट्रेनिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर में हुए महत्वपूर्ण परिवर्तन एवं विकास की अनदेखी की गई है।

याचिका में यह भी कहा गया है कि 2002 के बाद से राज्य न्यायिक अकादमियों द्वारा एक साल का ''स्ट्रक्चर्ड'' पूर्व-सेवा प्रशिक्षण, जिसमें एक साल का रेजिडेन्सियल प्रोग्राम भी शामिल है, अदालती और प्रशासनिक संलग्नता, और सख्त निर्देशों वाली न्यायालय की कार्यप्रणाली, साक्ष्य कानून, और स्थानीय कानूनी प्रक्रियाओं पर गहन प्रशिक्षण दिया जाता रहा है, जिससे नए जजों की तैयारी सुनिश्चित होती है।

याचिका में प्रक्रिया संबंधी निष्पक्षता (प्रॉसिजरल फेयरनैस) के बारे में प्रश्न खड़े किये गये हैं। पिछली सुनवाई के दौरान, उच्च न्यायालयों से प्राप्त शपथ-पत्रों को सार्वजनिक नहीं किया गया और न ही उम्मीदवारों के साथ साझा किया गया था, तथा इस प्रकार उन्हें प्रतिक्रिया देने या प्रक्रिया में सार्थक रूप से भाग लेने का अवसर नहीं मिल सका था।

इसके अतिरिक्त, महिलाओं पर प्रायः कम उम्र में विवाह करने का दबाव रहता है, इसलिये वे वकालत की अनिवार्य अवधि पूरी नहीं कर पातीं।

तीन साल की वकालत की अनिवार्यता से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के उम्मीदवारों को नुकसान होने की बात कही गई, क्योंकि उन्हें वरिष्ठ वकीलों का मार्गदर्शन तथा वित्तीय सहयोग नहीं मिल पाता है।

याचिका में यह दलील भी दी गई

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेस शासन में लगे सरकारी वकीलों को हटाने पर अंतरिम रोक

जयपुर, 16 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के दौरान शहर की निचली अदालतों में नियुक्त हुए सरकारी वकीलों को हटाने पर अंतरिम रोक लगा दी है। इसके साथ ही, अदालत ने इन्हें कार्य करते रहने देने की अनुमति दी है। अदालत ने मामले में मुख्य सचिव, प्रमुख विधि सचिव,

■ हाई कोर्ट ने मुख्य सचिव, प्रमुख विधि सचिव आदि को नोटिस जारी किये।

एसीएस गृह और जयपुर कलेक्टर सहित अन्य को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। जस्टिस अनिल उपमन की एकलपीठ ने ये आदेश साजिया खान व अन्य की याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता रिपुदमन सिंह नरूका ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता पूर्व में शहर की निचली अदालतों में सरकारी वकील के तौर पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

प्रतिभा का अर्थ है बुद्धि में नई कोपलें फूटते रहना। नई कल्पना, नया उत्साह, नई खोज और नई स्फूर्ति प्रतिभा के लक्षण हैं। –विनोबा

साहित्य, कला और संस्कृति अकादमियों में सन्नाटा पसरा है

राजस्थान में भजन लाल शर्मा सरकार के गठन के 19 माह बाद भी प्रदेश की साहित्य कला, भाषा और संस्कृति के उन्नयन के लिए गठित एक दर्ज़न से अधिक अकादमियों में सन्नाटा पसरा है। अकादमियों में व्याप्त इस सन्नाटे को अगर जल्द नहीं तोड़ा गया तो इसका असर बहुत गहरा होगा। गहलोत सरकार के दौरान गठित अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारी अपना इस्तीफ़ा दे चुके है मगर भजन लाल सरकार एक लम्बे अर्से बाद भी अब तक इन अकादमियों को पुनर्गठित नहीं कर पायी है जिससे सम्बंधित सभी प्रकार की गतिविधियां ठप्प पड़ी है। कला,संस्कृति और साहित्य के बिना जीवन अधूरा है। इसीलिए किसी भी देश, प्रदेश, सरकार और समाज को वहां की संस्कृति, कला साहित्य को बढ़ावा देने के लिए समुचित प्रयास करने होंगे।

राज्य सरकार की अकादमियों के प्रति इस बेरुखी से प्रदेश भर के साहित्य और संस्कृति कर्मियों में भारी रोष व्याप्त है। एक जानकारी के मुताबिक राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ,राजस्थान ललित कला अकादमी, राजस्थान साहित्य अकादमी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, राजस्थान उर्दू अकादमी, राजस्थान सिंधी अकादमी, राजस्थान संस्कृत अकादमी, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी एवं राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, बाल साहित्य अकादमी, पंजाबी अकादमी, आदि प्रशासनिक अधिकारियों के हवाले है। अध्यक्ष, सचिव और सदस्यों की नियुक्तियां नहीं होने से प्रशासनिक अधिकारियों के भरोसे चल रही अकादमियां कलाकारों और विद्वानों के लिए पुरस्कार समारोह के आयोजन, ग्रंथों के प्रकाशन के साथ ही नीतिगत निर्णय नहीं ले पा रही हैं।

राजस्थान अपनी आन, बान,शान, शौर्य, साहस, कुर्बानी, त्याग, बलिदान तथा वीरता के लिए सम्पूर्ण विश्व में ख्यात है। राजस्थान को भारतीय संस्कृति का गौरव कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ की स्थापत्य कला, संगीत, नृत्य, लोकगीत, वेशभूषा, हस्तशिल्प, वीर-प्रथाएँ, लोक कथाएँ और बोलियाँ - ये सभी भारत की विविधता में एकता का भव्य उदाहरण हैं। हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं से पूरी दुनिया प्रभावित है। राजस्थान साहित्य और संस्कृति के साथ त्योहारों और मेलों के लिए विश्व विख्यात है जो आमजन को कोई न कोई सन्देश देते है। इस सांस्कृतिक सम्पदा को संरक्षित करने और अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य अकादमियों, संस्कृति विभागों और साहित्य संस्थानों का होता है। लेकिन जब वही संस्थान निष्क्रिय हो जाएँ या खाली पड़े हों, तो यह सम्पदा दम तोड़ने लगती है।

पिछली गहलोत सरकार के दौरान भी कई वर्षों तक अकादमियों में नियुक्तियां नहीं हुई थी। इन स्वायत्तशाषी संस्थाओं का प्रमुख उद्देश्य, क्षेत्रीय भाषाओं और लोक साहित्य का संरक्षण, कलाकारों, लेखकों और साहित्यकारों को प्रोत्साहन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, नाट्यय महोत्सवों का आयोजन, पारंपरिक लोककलाओं को आधुनिक मंच देना, युवा पीढ़ी में रुचि और चेतना पैदा करना हैं। राज्य सरकार की उपेक्षा के कारण कलाकारों, शोधार्थियों और संस्कृति क्षेत्र से जुड़े लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इससे कला, साहित्य, भाषा, संगीत और संस्कृता से जुड़ी अकादमयों के कार्य प्रभावति हो रहे हैं। इन संस्थाओं के लेखकों और कला प्रेमयों के जुड़े होने से नरिाशा का सामना करना पड़ रहा है।

राजस्थान अपनी आन, बान,शान, शौर्य, साहस, कुर्बानी, त्याग, बलिदान तथा वीरता के लिए सम्पूर्ण विश्व में ख्यात है। कला, साहित्य और सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि विश्व में अपनी अलग पहचान रखती है। राजस्थान को भारतीय संस्कृति का गौरव कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ की स्थापत्य कला, संगीत, नृत्य, लोकगीत, वेशभूषा, हस्तशिल्प, वीर–प्रथाएँ, लोक कथाएँ और बोलियाँ – ये सभी भारत की विविधता में एकता का भव्य उदाहरण हैं। यहाँ ढोला–मारू की प्रेमगाथा है, तेजाजी महाराज की लोक आस्था है, मांड और पिंगल जैसी काव्य विधाएँ हैं। मेवाड़, मारवाड़, हाड़ौती, शेखावाटी आदि क्षेत्रों की अपनी–अपनी सांस्कृतिक पहचान है। राजस्थान की कला और संस्कृति विश्वभर में प्रसिद्ध है। हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं से पूरी दुनिया प्रभावित है। राजस्थान साहित्य और संस्कृति के साथ त्योहारों और मेलों के लिए विश्व विख्यात है जो आमजन को कोई न कोई सन्देश देते है। इस सांस्कृतिक सम्पदा को संरक्षित करने और अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य अकादमियों, संस्कृति विभागों और साहित्य संस्थानों का होता है। लेकिन जब वही संस्थान निष्क्रिय हो जाएँ या खाली पड़े हों, तो यह सम्पदा दम तोड़ने लगती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि अकादमियों में बिना भेदभाव के योग्य साहित्यकार, लेखक, संस्कृतकर्मी और कलाकारों की नियुक्ति की जाये ताकि नए प्रतिभाशाली लोगों को उनका समुचित सम्मान और प्रत्साहन मिले।

–अतिथि सम्पादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार)

राशिफल गुरूवार 17 जुलाई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, रेवती नक्षत्र रात्रि 3:39 तक, अतिगंड योग प्रातः 9:24 तक, विष्टि करण प्रातः 8:06 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 3:39 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–कर्क चन्द्रमा–कुम्भ, मंगल–सिंह, बुध–कर्क, गुरू–मिथुन, शुक्र–वृष, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। भद्रा आज प्रातः 8:06 तक है। आज कालाष्मी, शीतला सप्तमी (उड़ीसा) है। पंचक रात्रि 3:39 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 7:29 तक, चर 10:52 से 12:33 तक, लाभ–अमृत 12:33 से 3:55 तक, शुभ 5:37 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:47, सूर्यास्त 7:18

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में आज प्रसन्नता–हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

कन्या
स्वस्थ्य में सुधार होगा। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना बनेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

वृश्चिक
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर–परिवार में अतिथियों उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आज महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है।

सुशासन में जनप्रतिनिधि की आवाज का प्रभावशाली माध्यमः संसदीय समितियाँ

डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा

संसदीय समितियां सदन का लघु रूप होती है। लोकतांत्रिक पद्धति में जितनी सदन की कार्यवाही महत्वपूर्ण होती है, उसी प्रकार संसदीय समितियों की कार्यवाही भी महत्व रखती है। संसदीय समितियों की कार्यवाही लोकतंत्र की पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन के लिए अत्यंत आवश्यक है। देश की विभिन्न राज्यों की विधान सभा की समितियों द्वारा परंपराओं के अनुसार, जनप्रतिनिधियों की सहभागिता, प्रशासन की जवाबदेही और लोकतंत्र की गुणवत्ता का वास्तविक परीक्षण किया जाता है। लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने देश के विधान मण्डलों की समितियों की सुदृढ़ता की समीक्षा के लिए सात विधान सभा अध्यक्षों की एक समिति का गठन किया है। राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी इस समिति के सदस्य है। यह समिति देश के विभिन्न राज्यों की विधान सभाओं में गठित समितियों का तुलनात्मक अध्ययन कर विधान सभा समितियों की सुदृढता के लिए एक रिपोर्ट तैयार कर रही है। इस समिति में राजस्थान विधान सभा के साथ मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश और ओडिसा विधान सभा के अध्यक्ष भी शामिल है। समिति द्वारा तैयार की जाने वाली रिपोर्ट को लोकसभा अध्यक्ष को प्रस्तुत की जायेगी।

समितियों की सुदृढता के लिये महत्वपूर्ण सुझाव समिति की पहली बैठक मध्य प्रदेश विधान सभा में आयोजित हुई। इस बैठक में राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये। समितियों की बैठकों में सदस्यों की उपस्थिति बढ़ाये जाने के लिये सदस्यों का वर्चुअली जुडाव और समितियाँ में सदस्यों का चयन दलीय आधार के साथ–साथ योग्यता और विशिष्टता के आधार पर भी किया जाना चाहिए। समितियों में चार–पाँच वर्ष पुराने मामलों का परीक्षण होता है। समितियाँ द्वारा निकटस्थ वर्षों के मामलों का परीक्षण किया जाना चाहिए ताकि समितियों के सुझावों की क्रियान्विति के लिये उसी वर्ष के बजट में समावेश के अवसर मिल सकें। समितियों की बैठकों में सदस्यों की उपस्थिति को बढ़ायें जाने के लिये सदस्यों के वर्चुअली/ऑनलाइन जुडने पर विचार किये जाने का सुझाव भी आया।

समितियों की रिपोर्ट पर सदन में हो चर्चा – बैठक में प्रस्ताव आया कि समितियों की रिपोर्ट पर सदन में चर्चा कराये जाने पर विचार करना चाहिये। इससे विधायकों की समितियों के कार्यों में रुचि बढेगी। सदन में समितियों की रिपोर्ट पर चर्चा होने से जवाबदेही भी तय होगी। सदन में समितियों की रिपोर्ट पर चर्चा से विधायकों की समितियों के कार्यों में सहभागिता में वृद्धि हो सकेगी।

राजस्थान विधान सभा में समिति प्रणाली का सुदृढ़ीकरण, नवाचार व सुधार की दिशा में राजस्थान विधान सभा अग्रणी– राजस्थान विधान सभा में वर्तमान में 17 समिलियों कार्यरत हैं। कुछ समितियों जिनका कार्य अपेक्षाकृत सीमित था। उन्हें अन्य अधिक सक्रिय समितियों में सृजनात्मक रूप से विलय कर पुनर्गठित किया गया है जैसे पुस्तकालय समिति को सरकारी आश्वासन समिति में और सदाचार समिति को याचिका समिति में समाहित किया गया है, जिससे समितियों का समेकित और प्रभावी संचालन सुनिश्चित हो सके।

राजस्थान विधान सभा में नवाचार– सामान्य प्रयोजनों संबंधी समिति का गठन– सभी समितियों की गतिविधियों की समयबद्ध समीक्षा हेतु सामान्य प्रयोजन समिति का गठन किया गया है। राजस्थान विधान सभा में ऐसी समिति का गठन पहली बार हुआ है। इस समिति की अध्यक्षता स्वयं अध्यक्ष करते हैं और जिसमें सभी समितियों के सभापति शामिल होते हैं

प्रत्येक तीन माह में बैठक आयोजित होती है, जिसमें समितियों की बैठक संख्या, परीक्षणों की प्रगति, सदस्यों की उपस्थिति आदि की गहन समीक्षा की जाती है। यह समिति समितियों की सक्रियता को आंकने का एक पारदर्शी माध्यम बन गई है, जिससे ना केवल कार्यप्रणाली में सुधार हुआ है, बल्कि सदस्यों की सहभागिता में भी बढ़ोतरी हुई है। अब समिति सदस्यों की वार्षिक उपस्थिति को ध्यान में रखते हुए पुनर्नियुक्ति का निर्णय लिया जाता है। जो सदस्य अत्यंत न्यूनतम उपस्थिति दर्ज कराते हैं, उन्हें दोबारा समिति में शामिल न करने पर भी विचार किया जाता है।

सुशासन में जनप्रतिनिधि की आवाज का प्रभावशाली माध्यम– संसदीय समितियों के माध्यम से ही जनप्रतिनिधियों की आवाज़ को सुशासन की व्यवस्था में प्रभावशाली रूप से स्थापित किया जा सकता है। यह आवश्यक है कि न केवल समितियाँ सक्रिय रहें, बल्कि उनका दायित्व और परिणाम भी जनता तक पहुंचे। यह लोकतांत्रिक कर्तव्य भी है और दायित्व भी।

अगली बैठक राजस्थान में– समिति प्रणाली की समीक्षा के लिए गठित पीठासीन अधिकारियों की समिति की अगली बैठक को राजस्थान में किये जाने का प्रस्ताव राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने रखा। देवनानी के इस प्रस्ताव को बैठक में चर्चा के बाद स्वीकार किया गया।

–डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा,
उप निदेशक, जनसम्पर्क,
राजस्थान विधान सभा

सीएम भजनलाल शर्मा की पहल पर टीबी मुक्त राजस्थान की ओर तेजी से बढ़ते कदम

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में चिकित्सा विभाग टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत राजस्थान को टीबी मुक्त बनाने के निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है। प्रदेश में 25 जून, 2025 से चल रहे सक्रिय क्षय रोग खोज अभियान के माध्यम से अब तक 74 लाख (44 प्रतिशत) से अधिक अति संवेदनशील जनसंख्या की घर–घर जाकर स्क्रीनिंग की जा चुकी है। अभियान का लक्ष्य 1.67 करोड़ संवेदनशील व्यक्तियों तक पहुंचना है। स्क्रीनिंग में अब तक 2,35,054 व्यक्तियों में टीबी के लक्षण पाए गए हैं, जिन्हें पुष्टि हेतु स्वास्थ्य संस्थानों में रेफर किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के टीबी मुक्त भारत के संकल्प की दिशा में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशानुसार प्रभावी रणनीति के साथ काम किया जा रहा है। स्क्रीनिंग का अभियान 21 जुलाई 2025 तक चलेगा, जिसका उद्देश्य टीबी के छिपे मामलों की शीघ्र पहचान कर समय पर निःशुल्क उपचार उपलब्ध कराना है। उन्होंने बताया कि अभियान के अंतर्गत पीएलएचआईवी, डायबिटीज रोगी, 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग, कुपोषित व्यक्ति, धूम्रपान/मद्यपान करने वाले, प्रवासी श्रमिक, आदिवासी समुदाय, पूर्व टीबी रोगी तथा खनन एवं निर्माण स्थलों, जेलों एवं शहरी झुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोगों की घर–घर जाकर स्क्रीनिंग की जा रही है।

अति संवेदनशील जनसंख्या की स्क्रीनिंग सुनिश्चित करने के लिए राज्य और जिला स्तर पर अधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। अभियान की प्रगति की दैनिक समीक्षा भी की जा रही है। राजस्थान में घर–घर जाकर क्षय रोग के लक्षणों की जांच का यह अभियान, राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन लक्ष्य की दिशा में एक निर्णायक कदम है। जिला टीमों की मेहनत और आमजन की भागीदारी से समय पर अधिकतम रोगियों की पहचान संभव हो रही है, जिससे संक्रमण की श्रृंखला को तोड़ा जा रहा है।

मुख्यमंत्री के सतत पर्यवेक्षण के चलते प्रदेश में टीबी मुक्त ग्राम पंचायत अभियान के तहत वर्ष 2024 में 3,350 ग्राम पंचायतों को टीबी मुक्त घोषित किया गया है, जिससे समुदाय स्तर पर जागरूकता और भागीदारी में वृद्धि हुई है। इस अभियान में राजस्थान देशभर में तीसरे स्थान पर रहा है। अभियान के तहत अब तक 35,117 निक्षय मित्र पंजीकृत हो चुके हैं, जो टीबी मरीजों को पोषण, मानसिक सहयोग और आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करवा रहे हैं। निक्षय पोर्टल के माध्यम से टीबी मरीजों की पहचान, उपचार, एवं भुगतान की रियल टाइम निगरानी सुनिश्चित की जा रही है। टेक्नोलॉजी के साथ टीबी उन्मूलन की ओर सटीक और तेज कदम बढ़ाते हुए राज्य में टीबी रोगी खोज अभियान का सर्वेक्षण आशा डिजिटल हेल्थ ऐप के माध्यम से किया जा रहा है, और इसकी रीयल टाइम निगरानी डैशबोर्ड के जरिए सुनिश्चित की जा रही है। सभी संभावित मामलों में नाट आधारित परीक्षण को प्राथमिकता देकर राज्य ने सटीक व शीघ्र निदान की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। सहभागिता आधारित मॉडल के तहत एनजीओ, सीएसआर भागीदारों और निजी चिकित्सकों की सहभागिता से टीबी नियंत्रण प्रयासों को मजबूती मिली है। जिला स्तर पर इंटर–डिपार्टमेंटल समन्वय के माध्यम से पुलिस, महिला एवं बाल विकास, शिक्षा, श्रम विभाग जैसे विभागों के साथ मिलकर सुगठित व समग्र रणनीति बनाई जा रही है। संवेदनशील समूहों पर केंद्रित, माइक्रो प्लानिंग, 100 प्रतिशत डेटा प्रविष्टि और रिपोर्टिंग के साथ अभियान का संचालन हो रहा है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के निर्देशानुसार जिला और ब्लॉक स्तर पर नाट मशीन (629) माइक्रोस्कोपी, एक्स–रे मशीन, लैब तकनीशियन आदि की क्षमता वृद्धि के प्रयास किए गए हैं। चिकित्सा विभाग द्वारा वर्ष 2024 में राज्य में कुल 1,71,415 टीबी रोगियों का नोटिफिकेशन किया गया, जो निर्धारित लक्ष्य का 101 प्रतिशत है। जून 2025 तक 89,132 टीबी रोगियों का नोटिफिकेशन किया गया है, जो लक्ष्य का 110 प्रतिशत है। गौरतलब है कि नाट तकनीक टीबी की जल्दी और सटीक पहचान करने में सक्षम है, जिससे रोगी को समय पर उपचार मिल पाता है और संक्रमण का प्रसार भी रोका जा सकता है।

–तरूण जैन
अपनिदेशक सूचना एवं
जन सम्पर्क विभाग

दलहन आयात नीति- किसानों के लिए घातक - दलहन उत्पादन में देश को आत्मनिर्भर बनाने की घोषणा - 'थोथा चना बाजे घना'

राजपाल जाट

नीति आयोग के अनुसार वर्ष 2021–22 में देश में दलहन उत्पादन 246.5 लाख टन तथा मांग 267.2 लाख मीट्रिक टन थी, अर्थात मांग की तुलना में उत्पादन 23.7 लाख टन कम था। इसकी पूर्ति के लिए सरकार आयात के विकल्प को अधिक महत्व देती है। अनुमानतः वर्ष 2021–22 से लेकर वर्ष 2028–29 तक दलहन की मांग में 7.3 लाख मैट्रिक टन की बढ़ोतरी रहेगी। इसके अनुसार वर्ष 2025 में मांग 290 लाख टन होगी तथा उत्पादन 257.38 लाख टन रहेगा अर्थात देश में दलहन की 37.62 लाख टन की कमी रहेगी। वर्ष 2028–29 में दलहन का उत्पादन 318.3 लाख टन तथा मांग 297.9 लाख टन रहेगी। इसके अनुसार देश में दलहन की 20.4 लाख टन कमी रहेगी। इसके उपरांत भी भारत सरकार ने 72.6 लाख मीट्रिक टन का आयात किया है। इस आयातित दलहन को उत्पादन में जोड़ने पर देश के भंडार में 325 लाख टन दलहन है, जबकि मांग 290 लाख मीट्रिक टन की है। मांग से 35 लाख टन दालों का भंडारण अधिक होने से दालों के दाम घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी कम हो गए। इससे दलहन उत्पादक किसानों को बाजार में अपनी उपज न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी कम दामों में बेचनी पड़ रही है। भारत सरकार ने संसद में किसी भी किसान को घोषित 'न्यूनतम समर्थन मूल्य' से कम दामों में अपनी उपज बेचने के लिए विवश नहीं होने देने का वचन दिया हुआ है। दूसरी ओर भारत सरकार ने 'न्यूनतम समर्थन मूल्य' को 'गारंटीड मूल्य' की श्रेणी में रखा हुआ है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी नोटों पर 'मैं धारक को पञ्च सौ रुपये अदा करने का वचन देता हूं' अंकित रहता है, यह भारतीय रिजर्व बैंक की गारंटी है। इसी के कारण कागज के टुकडे की बाजार में 500 रुपए क्रय शक्ति है, इसका पालन नहीं करने पर दंड का प्रावधान है। न्यूनतम समर्थन मूल्य को गारंटीड मूल्य तो घोषित किया हुआ है किंतु उसके लिए दंड का विधान नहीं है। इसलिए गारंटी होते हुए भी उत्पादक किसानों को अपना उत्पाद औने–पौने दामों पर बेचना पड़ता है।

विश्व में भारत दालों का सबसे बड़ा आयातक है। भारत सरकार ने दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता का संकल्प व्यक्त किया हुआ है। वर्ष 2021–22 में खरीफ एवं रबी में मूंग, उड़द, अरहर, मसूर, चना सभी दलहनों का उत्पादन 27.3 मिलियन टन था, जो वर्ष 2022–23 में 26.1, वर्ष 2023–24 में 24.3 तथा वर्ष 2024–25 के द्वितीय अग्रिम आकलन के अनुसार 23.0 मिलियन टन रह गया। इसमें चना वर्ष 2021–22 में 13.4, वर्ष 2022–23 में 12.3, वर्ष 2023–24 में 11.0 मिलियन टन रह गया। चने के आयात पर 65% तक आयात शुल्क लगाया गया था, जिसे घटाकर शून्य कर दिया गया।

पीली दाल का उपयोग चना एवं अरहर के विकल्प के रूप में किया जाता है तथा बेसन जैसे उप उत्पाद तैयार किए जाते है। पीली दाल चना एवं अरहर की तुलना में कम मूल्य पर प्राप्त होती है। दिसंबर 2023 में पीली दाल को आयात शुल्क से मुक्त करने से दलहन के आयात में पीली दाल की भागीदारी 2023–24 में 24.6% से बढ़कर 2024–25 में अप्रैल से लेकर नवंबर तक 37.4 प्रतिशत हो गई। इससे देश में दलहनों का उत्पादन विपरीत रूप से प्रभावित होता है। किसानों को तो घोषित 'न्यूनतम समर्थन मूल्य' भी प्राप्त नहीं हो पाता है। उन्हें औने पौने दामों में अपने उत्पाद बेचने पड़ते हैं। इसे दृष्टिगत रखते हुए 'कृषि लागत एवं मूल्य आयोग' ने वर्ष 2025–26 की 'खरीफ फसलों की मूल्य नीति' में पीली दाल के आयात को प्रतिबंधित करने की अनुशंसा की है।

इसके उपरांत भी भारत सरकार ने 31 मई 2025 को अधिसूचना प्रसारित कर पीली दाल के आयात की अवधि 31 मार्च 2026 तक बढ़ा दी है। यह 'करेला और नीम चढ़ा' की लोकोक्ति को चरितार्थ करता है। अलनीनो के प्रभाव के कारण वर्ष 2016 एवं 2017 में उत्पादन की मात्रा घट गई थी, जिसका कारण सरकार ने अलनीनो के प्रभावको माना था। देश में उस समय आयातित चार मिलियन टन पीली दाल के ढेर लग गए। उसे पटरी पर लाने के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि की गई एवं सरकारी खरीद को प्रोत्साहित कर वर्ष 2018 में उत्पादन के क्षेत्रफल में बढ़ोतरी की नीति अपनाई गई। जिससे स्थिति में सुधार संभव हुआ ।

भारत सरकार की दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता की घोषणाः–

केंद्रीय कृषि मंत्रालय के अनुसार दलहन फसलों का क्षेत्रफल वर्ष 2021–22 में 307.71 लाख हेक्टर था। जो वर्ष 2024–25 में घटकर 278.5 लाख हेक्टर रह गया। परिणामस्वरूप उत्पादन वर्ष 2021–22 के 273.02 लाख मीट्रिक टन से घटकर 2024–25 में 252.38 लाख टन रह गया। दालों का आयात खर्च वर्ष 2021–22 से 2024–25 में 15,540 करोड रुपए से बढ़कर 46,428 करोड रुपए हो गया। इसी प्रकार आयात की मात्रा भी वर्ष 2021–22 से 2024–25 तक 2,51,965 मीट्रिक टन से बढ़कर 72,55,585 मीट्रिक टन हो गया।

कानपुर स्थित 'इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ पल्सेस रिसर्च' के निदेशक जी. पी. दीक्षित के अध्ययन के अनुसार चना उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर रहने वाले मध्य प्रदेश का चना उत्पादन का क्षेत्रफल 5 वर्ष की अवधि में 35 लाख हेक्टर से घटकर 20 लाख हेक्टर रह गया। सिंचित क्षेत्र बढ़ाने तथा तुलनात्मक रूप से गेहूं के दाम चने की अपेक्षा अधिक मिलने से चने का स्थान गेहूं की खेती ने ले लिया। दलहन खेती मौसम की संवेदनशीलता से अन्य फसलों की अपेक्षा अधिक प्रभावित होती है।

आत्मनिर्भरता के लिए दलहन खेती का क्षेत्रफल बढ़ाने के लिए किसानों को 'न्यूनतम समर्थन मूल्य' प्राप्ति सुनिश्चित करना अपरिहार्य है ।

अरहर, उड़द, मसूर की भांति चना एवं मूंग की दाने दाने की खरीद का मार्ग प्रशस्त करने के लिए 'प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान' के प्रावधानों में समुचित संशोधन कर कुल उत्पादन में से 25% से अधिक खरीद नहीं करने के प्रतिबंध को हटाने, खरीद की अवधि अधिकतम 90 दिन को विलुप्त कर वर्ष भर खरीद चालू रखने तथा मार्गदर्शिका के अनुसार तीन दिन में भुगतान करने की पालना कठोरता से करना समीचीन है । गेहूं एवं धान खरीद नीति की भांति दलहन के दाने–दाने की खरीद करना आवश्यक है। उसी क्रम में न्यूनतम समर्थन मूल्य से बाजार भावों के संधारण के लिए आयात शुल्क का निर्धारण करना चाहिए, जिसमें आयात शुल्क 100% से कम नहीं हो।

भारत सरकार की ओर से वर्ष 2024–25 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 5 वर्षों में भारत को अरहर, उड़द, मसूर, चना की दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने की नीति तैयार करने का वचन दिया हुआ है। इस दिशा में दलहन उपज के बाजार भाव में न्यूनतम समर्थन मूल्य से गिरावट नहीं आवे, जिससे किसानों को उनके उत्पादों के घोषित न्यूनतम दाम प्राप्त हो सके। किसानों को लागत मूल्य से वंचित नहीं रहना पड़े। यदि किसानों को लागत मूल्य प्राप्त नहीं होता है तो उत्पादन में उनका उत्साह ठंडा हो जाता है। घरेलू बाजार तथा न्यूनतम समर्थन मूल्य का अंतर अधिक होने से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद विपरीत रूप से प्रभावित होती है। इस समय उड़द, चना, मसूर, मूंग की उपज की स्थिति चिंताजनक है। यदि यही स्थिति जारी रहती है तो सस्ते आयात के कारण भारत का घरेलू दाल व्यापार समाप्त होकर भारत आत्मनिर्भर होने के स्थान पर शत–प्रतिशत आयात पर निर्भर हो जायेगा। इससे मुक्ति दिलाने के लिए आयात–निर्यात नीति की समीक्षा कर उसे उत्पादक किसानों के अनुकूल बनाना महत्वपूर्ण कदम रहेगा।

यह आश्चर्य मिश्रित दुखद तथ्य कि दलहन उत्पादन में भारत की वैश्विक भागीदारी 28.02% है तब भी भारत उन देशों से आयात करता है जिनमें से किसी भी देश की वैश्विक भागीदारी 5.4% से अधिक नहीं है। वर्ष 2017 से 2025 तक की अवधि में आयात–निर्यात नीति में अस्थिरता रही तथा उपभोक्ताओं को कम वहनीय मूल्य पर दालों की उपलब्धता के लिए, उत्पादक किसानों को लाभकारी मूल्य तथा आयात पर निर्भरता को कम करने के उद्देश्यों के प्रतिकूल, नीतियां बनाई गई।

–रामपाल जाट,
राष्ट्रीय अध्यक्ष किसान महापंचायत

मिलावट के लंबित मामलों के निस्तारण के दिए निर्देश

जयपुर। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण के केन्द्रीय मुख्य कार्यकारी अधिकारी जी. कमला वर्धन ने कहा कि राजस्थान में मिलावट रोकथाम एवं खाद्य सुरक्षा को लेकर सेंपलिंग कार्यवाही के साथ-साथ आमजन में खाद्य सुरक्षा के प्रति जन-जागरुकता के लिए बेहतर प्रयास किए जा रहे हैं। प्रदेश में मिलावट के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान से आमजन में जागरूकता बढ़ी है तथा मिलावट पर प्रभावी रोकथाम हो रही है। उन्होंने मिलावट रोकने के लिए दर्ज किए जा रहे केसेज की जानकारी ली एवं इनके त्वरित निस्तारण के साथ सतत निगरानी के निर्देश दिए।

केन्द्रीय सीईओ कार्यों की समीक्षा कर रहे थे। अतिरिक्त जिला कलक्टर, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी तथा खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की क्षेत्रीय समीक्षा बैठक में उन्होंने मिलावट रोकथाम के लिए खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के प्रावधानों के तहत किए जा रहे प्रयासों, लम्बित केसेज, मैनपॉवर सहित विभिन्न मामलों पर विस्तार से समीक्षा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आमजन के दैनिक खाद्य पदार्थों में शामिल घी, दूध, पनीर मसाले जैसे पदार्थों के सेंपल नियमित रूप से लिए जाएं।

'नीलाम खानों को परिचालन में लाने के लिए राज्य सरकार गंभीर'

जयपुर। खान, भू विज्ञान एवं पेट्रोलियम के प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने कहा है कि प्रमुख खनिजों की नीलामी में समूचे देश में अग्रणी होने के साथ ही अब नीलाम खानों को परिचालन में लाने में भी राजस्थान देश के अग्रणी राज्यों में शुमार हो जाएगा। अगले तीन से चार माह में आवश्यक अनुमतियों की औपचारिकताएं पूरी कराकर करीब 10 प्रधान खनिज खानों को परिचालन में लाया जा सकेगा। उन्होंने स्टेक होल्डर्स से भी कहा कि वे तय समय सीमा में आवश्यक औपचारिकताएं व सबंधित स्थानों पर आवेदन प्रस्तुत करें ताकि समय पर अनुमतियां जारी हो सके।

प्रमुख सचिव खान टी. रविकान्त बुधवार को आरआईसी में खान, वन एवं पर्यावरण, सीया, जीएसआई, आईबीएम व स्टेक होल्डर्स के साझा मंच को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि नीलाम खानों को जल्द से जल्द परिचालन में लाना राज्य सरकार की प्राथमिकता है और मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा लगातार इस बात पर जोर दे रहे हैं कि संबंधित विभाग परस्पर सहयोग व समन्वय से नीलाम खानों को आवश्यक अनुमतियां जारी कर

प्रमुख सचिव खान टी. रविकान्त (दांये) वन एवं पर्यावरण, सीया, जीएसआई, आईबीएम व स्टेक होल्डर्स के साझा मंच को संबोधित किया।

- संबधित विभाग व स्टेक होल्डर्स को खान विभाग ने उपलब्ध कराया साझा मंच
- चैक लिस्ट, एसओपी और एम्पेनल्ड कंसलटेंस की सूची कराई जाएगी उपलब्ध

परिचालन के समन्वित प्रयास करें ताकि प्रदेश में खनिज क्षेत्र में निवेश, रोजगार और राजस्व में बढ़ोतरी हो सके। उन्होंने बताया कि 2016 से नीलामी प्रावधान के बाद से अब तक केवल 5 खानों में कार्य आरंभ हो सका है। हमारा प्रयास है कि अगले माहों में प्राथमिकता से कार्य करते हुए 10 नई खानों में कार्य आरंभ हो जाएं। रविकान्त ने कहा कि स्टेक होल्डर्स अनुमतियों के लिए आवश्यक आवेदन करने में अनावश्यक देरी ना करे।

रविकान्त ने सीया से आग्रह किया कि वै एक मानक चैक लिस्ट उपलब्ध करादें ताकि स्टेक होल्डर्स द्वारा उसी के अनुसार आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत किए जा सके। इसी तरह से अन्य अनुमतियों की भी एसओपी उपलब्ध हो जाए तो स्टेक होल्डर्स उसके अनुसार कार्रवाई कर सके। उन्होंने भारत सरकार के पर्यावरण स्वीकृति के पहले स्टडी के भारत सरकार के अनुमोदित सलाहकारों की सूची भी उपलब्ध करा दें व आवश्यकता समझे जाने पर स्टेक होल्डर्स व सलाहकारों का ओरियंटेशन भी करवाया जा सकता है। उन्होंने सभी संबंधित संस्थाओं से आग्रह किया कि नीलाम खानों की अनुमतियों के लिए प्राप्त प्रस्तावों पर प्राथमिकता से निर्णय ले ताकि समय पर आवश्यक अनुमतियां जारी होने से परिचालन आरंभ हो सके।

वन विभाग से नोडल अधिकारी अरुण प्रसाद, सीया के सदस्य सचिव विजय एन ने आवश्यक औपचारिकताओं के संबंध में विस्तार से जानकारी दी और चेक लिस्ट उपलब्ध कराने पर सहमति दी।

नाबालिग का अपहरण कर दुष्कर्म करने वाले अभियुक्तों को सजा

- नाबालिग का अपहरण कर उसके साथ ज्यादती करने वाले अभियुक्त सतपाल सिंह और अपराध में सहयोगी रहे बंटी कुमार को दस-दस साल की सजा सुनाई

जयपुर। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-2, महानगर द्वितीय ने नाबालिग का अपहरण कर उसके साथ ज्यादती करने वाले अभियुक्त सतपाल सिंह और अपराध में सहयोगी रहे बंटी कुमार को दस-दस साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अपहरण में शामिल रिजवान व मुकेश को तीन-तीन साल की सजा सुनाई है। अदालत ने अभियुक्तों को अर्थदंड से भी दंडित किया है। पीठासीन अधिकारी विकास कुमार खंडेलवाल ने फैसले में कहा कि साक्ष्यों से साबित है कि अभियुक्त सतपाल सिंह ने सह अभियुक्तों रिजवान व मुकेश के साथ मिलकर नाबालिग पीडिता का अपहरण किया। वहीं सतपाल ने उसके साथ ज्यादती की। इस घृणित अपराध में अभियुक्त बंटी ने सहयोग किया और उसे दुष्कर्म के लिए कमरा मुहैया कराया। ऐसा घृणित कृत्य करने वाले अभियुक्तों के प्रति कोई नरमी नहीं बरत सकते।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि पीडिता के पिता ने 4 अप्रैल, 2019 को आमेर पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि 3 अप्रैल की रात 9 बजे से उसकी नाबालिग बेटी घर से गायब है। तलाश करने पर भी नहीं मिली है, उसे आशंका है कि सतपाल उसकी नाबालिग बेटी बहला-फुसलाकर ले गया है। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्त को गिरफ्तार कर पीडिता को बरामद किया। सुनवाई के दौरान पीडिता ने अदालत को बताया कि रात को घर के बाहर घूमने के दौरान दो मुकेश व रिजवान उसके मुहं पर कपडा डालकर आमेर ले गए। उन्होंने उसे सतपाल के सुपुर्द कर दिया। सतपाल उसे सिंधी कैंप से बीकानेर ले गया।

महिला की चेन तोड भागे बाइक सवार बदमाश

जयपुर। मुहाना थाना इलाके में बाइक सवार बदमाश एक महिला के गले पर झपट्टा मार कर सोने की चेन तोड फरार हो गए। महिला ने संभलते हुए हल्ला मचाकर बदमाशों को पकड़ने की गुहार लगाई। लेकिन बदमाश तेज गति से भाग गए। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घटनाक्रम की जानकारी लेकर इलाके में नाकाबंदी भी करवाई,लेकिन बदमाशों को कोई सुराग नहीं लग पाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज खंगाल बदमाशों की तलाश कर रही है।

जांच अधिकारी एसआई वंदना ने बताया कि महावीर प्रसाद शर्मा निवासी शिव शक्ति नगर मुहाना ने मामला दर्ज करवाया है कि मंगलवार की दोपहर को उसकी पत्नी घर से कुछ दूरी के पास से खेजडो का बास की तरफ से आ रही थी। इस दौरान बाइक सवार बदमाश पीछे आए और अचानक उसके गले पर झपट्टा मार कर सोने की चेन तोड़कर भाग गए। एकाएक हुई घटना को महिला कुछ समझ पाती इससे पहले ही बाइक सवार बदमाश गलियों से होते हुए निकल गए।

सहकारिता क्षेत्र में मठाधीशों को अब अपने पदों के जाने का सता रहा है डर : मदन राठौड़

- 'सहकारिता में आमजन की सहभागिता बढ़ने से कांग्रेसी मठाधीशों का पुराना वर्चस्व टूटेगा'
- भजनलाल सरकार प्रदेश के समग्र विकास के लिए बना रही है योजनाएं, इससे आमजन हो रहा है सशक्त और समृद्ध : मदन राठौड़

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद मदन राठौड़ ने दादिया में गुरुवार को आयोजित होने वाले "सहकार एवं रोजगार उत्सव" को लेकर बुधवार को सभा स्थल पर पहुँचकर तैयारियों और व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान मदन राठौड़ ने मीडिया को संबोधित करते हुए विपक्ष पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि सहकारिता क्षेत्र में वर्षों से जमे हुए मठाधीशों को अब अपने पदों के जाने का डर सता रहा है। राठौड़ ने कहा कि "सहकारिता विभाग में कांग्रेस के लोग वर्षों से मठाधीश बनकर बैठे थे, लेकिन अब आम नागरिक भी इस प्रक्रिया में भाग ले रहा है, चुनाव लड़ रहा है, और इससे लोकतांत्रिक भागीदारी बढ़ रही है। इससे सहकारिता क्षेत्र और भी मजबूत होगा।"

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने विपक्ष पर तंज कसते हुए कहा कि कांग्रेस की जड़ें अब खोखली हो रही हैं। सहकारिता में आमजन की सहभागिता बढने पर कांग्रेस को डर है कि आमजन की भागीदारी से उनका पुराना वर्चस्व टूट जाएगा, इसलिए वे कार्यक्रम का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सहकारिता मंत्री अमित शाह चुनाव प्रचार नहीं करते, वे सेवा करते हैं। जनता स्वेच्छा से उनके साथ खड़ी होती है क्योंकि उन्होंने जनाधार को मजबूत किया है। जनता अब मांग नहीं करती, सेवा व विकास देखकर स्वयं समर्थन देती है। उन्होंने कहा कि सहकारिता विभाग का उद्देश्य सबको जोड़ना और सबके लिए काम करना है, इसमें पैक्स , कृषि समितियां, दुग्ध समितियां, कोऑपरेटिव बैंक आदि क्षेत्र शामिल हैं।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने अलग प्रदेश की मांग करने वाले बयान पर कहा कि जातिगत आधार पर अलग प्रदेश की मांग करना समाज को तोड़ने वाली प्रवृत्ति है, मांग समग्र समाज के हित में होनी चाहिए। चार राज्यों को तोड़कर नया राज्य बनाना केवल एक कल्पना है, यह संभव नहीं है। प्रदेश की भजनलाल सरकार समग्र विकास के लिए योजनाएं बना रही है, जिससे आमजन सशक्त और समृद्ध हो रहा है। ऐसे में जिनकी राजनीति खत्म हो चुकी है, वे अब जनता के कंधों पर बंदूक रखकर अपनी राजनीति चमकाना चाहते हैं, लेकिन यह अधिक दिन नहीं चलेगा।भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने पौधारोपण अभियान को लेकर कहा कि मानसून में पौधों के पनपने की संभावना अधिक होती है।

मानवरूपी रोबोट ने जयपुर में नए छात्रों का स्वागत किया

जयपुर । एक उल्लेखनीय और भविष्योन्मुखी आयोजन में, यूनिवर्सिटी ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट, जयपुर ने शैक्षिणक वर्ष 2025 के लिए अपने नए बैच के छात्रों का स्वागत एक - संचालित मानवरूपी रोबोट के साथ किया, जिसने ओरिएंटेशन दिवस समारोह के दौरान छात्रों का स्वागत किया और उनके परिवारों से बातचीत की। इस अभिनव स्वागत ने इंजीनियरिंग, प्रबंधन, फिजियोथेरेपी और कंप्यूटर एप्लीकेशन सहित विभिन्न विषयों में प्रवेश लेने वाले छात्रों के लिए एक परिवर्तनकारी यात्रा की शुरुआत की। इस कार्यक्रम ने शिक्षा में अत्याधुनिक तकनीकों को शामिल करने के लिए विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया और छात्रों को तकनीक-संचालित भविष्य के लिए तैयार करने के जयपुर के दृष्टिकोण की पुष्टि की।ओरिएंटेशन दिवस में नए छात्रों, उनके अभिभावकों, सम्मानित संकाय सदस्यों और उद्योग एवं शिक्षा जगत के गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यूईएम के रोबोटिक्स और एआई इनोवेशन

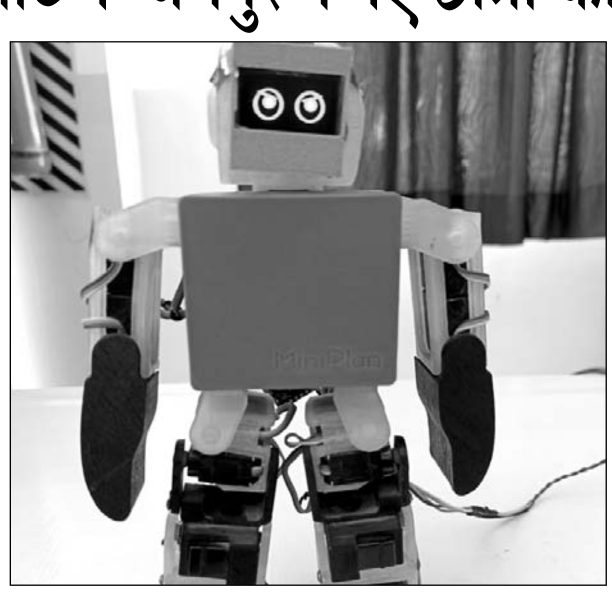

रोबोट ने ओरिएंटेशन दिवस समारोह के दौरान छात्रों का स्वागत किया।

लैब द्वारा आंतरिक रूप से विकसित यह ह्यूमनॉइड रोबोट, विश्वविद्यालय की तकनीकी बढ़त और छात्रों को इंडस्ट्री 4.0 और उससे आगे के लिए तैयार करने पर इसके फोकस का प्रतीक था। छात्र इस अनोखे कदम से बेहद उत्साहित थे, जिसमें गर्मजोशी और नवाचार का मिश्रण था और उन्हें अपनी शैक्षिणक यात्रा में आगे क्या है, इसकी एक झलक मिली।

छात्रों को संबोधित करते हुए, यूईएम जयपुर की माननीय कुलपति प्रो. बनानी चक्रवर्ती ने कहा, "शिक्षा केवल डिग्री के बारे में नहीं है; यह खोज, नवाचार और समाज की सेवा के बारे में है। यूईएम जयपुर में, हम ऐसे दिमागों का पोषण करते हैं जो प्रश्न करते हैं, सृजन करते हैं और नेतृत्व करते हैं। यह एक ऐसी यात्रा की शुरुआत है जो आपको भविष्य को आकार देने के लिए सशक्त बनाएगी।" कुलपति प्रो. डॉ. बिस्वजय चटर्जी ने विश्वविद्यालय के बहु-विषयक और प्रौद्योगिकी-एकीकृत दृष्टिकोण पर ज़ोर दिया: "हमारा उद्देश्य अंत:विषय विशेषज्ञता विकसित करना है। चाहे आप इंजीनियरिंग में हों या स्वास्थ्य सेवा में, आज तकनीक एक साझा सूत्र है। हम अपने छात्रों को नवाचार करने और दुनिया भर के जीवन को प्रभावित करने वाले स्थायी समाधान बनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।"

पूर्व मंत्री प्रमोद जैन के खिलाफ केसों में जांच पर रोक से इंकार

जयपुर । सुप्रीम कोर्ट ने राज्य के पूर्व कैबिनेट मंत्री और बारां से पूर्व विधायक प्रमोद जैन भाया से जुड़े मामलों की जांच पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है। वहीं राज्य सरकार से मामले में जवाब मांगते हुए भाया के खिलाफ केसों में चल रही कार्रवाई की प्रगति रिपोर्ट बताने के लिए कहा है। सुप्रीम कोर्ट ने भाया को कहा कि वे सभी केसों की जांच प्रक्रिया में सहयोग करें और इस दौरान उनके खिलाफ किसी तरह की दंडात्मक कार्रवाई नहीं की जाए। जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की खंडपीठ ने यह आदेश प्रमोद जैन भाया की एसएलपी पर दिए।

एसएलपी में भाया ने राजस्थान हाईकोर्ट के एक मई 2025 के उस आदेश को चुनौती दी थी जिसमें हाईकोर्ट ने भाया और उनकी पत्नी सहित अन्य के खिलाफ कई पुलिस थानों में दर्ज एफआईआर को रद्द करने से इनकार कर उन्हें दस दिन में जांच प्रक्रिया में शामिल होने के लिए कहा था। भाया की ओर से सीनियर एडवोकेट मुकुल रोहतगी ने कहा कि ये सभी एफआईआर राजनीतिक द्वेषता से प्रेरित हैं। एफआईआर 2023 के राज्य विधानसभा चुनाव के बाद दर्ज हुई हैं और एक-दूसरे से मिलती हुई व अस्पष्ट हैं। सभी एफआईआर को एक साथ कर इनकी जांच बारां के बाहर किसी आईपीएस अफसर से कराई जाए। जवाब में राज्य के एएजी शिवमंगल शर्मा ने कहा कि हर एफआईआर एक अलग घटना, तथ्य, शिकायतकर्ता और अपराध से जुड़ी है। इनमें अवैध खनन, फर्जी पट्टे जारी होना, वित्तीय गड़बड़ी और शासकीय दस्तावेजों की हेराफेरी जैसी गंभीर आर्थिक अपराध शामिल हैं। इन एफआईआर को एक साथ करना कानूनी व व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है। एफआईआर अलग-अलग थानों में दर्ज हैं और जांच आगे बढ़ चुकी है ।

जयपुर की सड़कों पर जानलेवा गड्ढे, नगर निगम बना मूकदर्शक - जनता मांग रही जवाब : गिरिराज खंडेलवाल

जयपुर। जयपुर की जनता आज भय और नाराज़गी के दो पाटों के बीच पिस रही है। राजधानी की सड़कों पर हालात ऐसे हैं, जैसे कोई युद्ध क्षेत्र हो - जहां हर कदम पर गड्ढा है और हर मोड़ पर हादसे का खतरा। बारिश के शुरुआती दौर में ही सड़कों की हालत बदतर हो चुकी है। कहीं 200 मीटर की सड़क में 250 गड्ढे हैं, तो कहीं सड़कें पूरी तरह उखड़ चुकी हैं। लेकिन सबसे खतरनाक बात यह है कि इन हालातों पर जिम्मेदार नगर निगम पूरी तरह चुप है और भाजपा शासित प्रशासन बेफिक्र।

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव गिरिराज खंडेलवाल ने इस पूरी स्थिति को 'आपराधिक लापरवाही' करार देते हुए कहा कि जयपुर में कोई सड़क सुरक्षित नहीं है। आम आदमी दो वक्त की रोटी के साथ अब अपनी जान बचाने की जद्दोजहद भी कर रहा

गिरिराज खंडेलवाल

है, और यह सब उस शहर में हो रहा है जिसे स्मार्ट सिटी कहा जाता है।

खण्डेलवाल ने कहा कि यह स्थिति अचानक नहीं बनी। हर साल करोड़ों रुपये की लागत से बनाई गई सड़कें पहली बारिश में बह जाती हैं।

- राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव खंडेलवाल ने कहा कि जयपुर में कोई सड़क सुरक्षित नहीं है आम आदमी दो वक्त की रोटी के साथ अब अपनी जान बचाने की जद्दोजहद भी कर रहा है, और यह सब उस शहर में हो रहा है जिसे स्मार्ट सिटी कहा जाता है

घटिया निर्माण, बिना तकनीकी निरीक्षण, और कमीशनखोरी की राजनीति ने जयपुर की सड़कों को मौत के जाल में बदल दिया है। जनता की जान की कोई कीमत नहीं बची, क्योंकि नगर निगम और ठेकेदारों की जेबें पहले से भरी हुई हैं।

उन्होंने सवाल उठाया कि जब सड़कें उखड़ती हैं, जब गड्ढों में गिरकर लोग घायल होते हैं, जब एम्बुलेंस रास्ते में फंस जाती है, तब नगर निगम कहां होता है? क्या सिर्फ इवेंट्स, पोस्टर और बधाइयों के लिए ही ये संस्थाएं बनी हैं? क्या यही गुड गवर्नेंस है, जो भाजपा जनता को दिखा रही है?

खंडेलवाल ने जोर देकर कहा कि अब वक्त आ गया है कि नगर निगम के जिम्मेदार अधिकारियों और इंजीनियरों की जवाबदेही तय हो। हर उस ठेकेदार पर कार्रवाई हो, जिसने घटिया निर्माण कर के पैसों की लूट मचाई है।

उन्होंने यह भी मांग की कि जयपुर शहर की सभी प्रमुख सड़कों का स्वतंत्र तकनीकी ऑडिट करवाया जाए और फंड के दुरुपयोग की जांच कर दोषियों को जेल भेजा जाए। जनता से अपील करते हुए उन्होंने कहा कि यह समय चुप बैठने का नहीं है - जयपुर की जनता को अब यह तय करना होगा कि वह गड्ढों में गिरेगी या जवाबदेही मांगेगी। हमें जीमण नहीं, ज़िम्मेदार शासन चाहिए। हमें दिखावे की राजनीति नहीं, धरातल पर काम चाहिए। जयपुर की सड़कों की यह दुर्दशा सिर्फ एक तकनीकी विफलता नहीं, बल्कि भाजपा के उस शासन मॉडल का आईना है जिसमें जनता की समस्याएं नज़रअंदाज़ कर दी जाती हैं, और चंद पूंजीपतियों को फायदा पहुंचाने के लिए योजनाएं बनाई जाती हैं।

आज हर जयपुरवासी की ज़ुबान पर बस एक ही सवाल है - गड्ढों की ये गिनती कब खत्म होगी, और जवाबदेही की शुरुआत कब होगी?

हैरिटेज सिटी कॉन्ट्रेक्टर्स सोसायटी ने सौंपा ज्ञापन

जयपुर। हैरिटेज सिटी कॉन्ट्रेक्टर्स सोसायटी जयपुर नगर निगम के अध्यक्ष रघुवीर शर्मा और अन्य पदाधिकारियों ने ग्रेटर निगम कमिश्नर डॉ. गौरव सैनी को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने शिकायत दी है कि उपापन समिति द्वारा बिड डॉक्यूमेंट का बिना अध्ययन कर फर्म विशेष को अनुचित लाभ पहुंचाने और ठेकेदारों की प्रतिस्पर्धा खत्म करने के लिए मनमानी शर्तें लगाई जा रही है। रघुवीर शर्मा का कहना है कि आरटीपीपी एक्ट के मुताबिक डी श्रेणी के ठेकेदारों के लिए कोई शर्त नहीं लगाई जा सकती, इसके बावजूद नगर निगम के अधिकारी धड़ल्ले से अपनी मनमानी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि नगर निगम ग्रेटर के सभी विभागों में अनुचित शर्तें लगाकर फर्म विशेष को अनुचित लाभ पहुंचाने की कारगुजारी की जा रही है। इस कारण नगर निगम के टेंडर में भी स्वस्थ प्रतिस्पर्धा नहीं हो पा रही ह नगर निगम को भी करोड़ों रुपए के राजस्व की हानि हो रही है।

सार-समाचार

अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल रस्तोगी को कार्यकाल दिया

राजदीपक रस्तोगी

जयपुर। केबिनेट की नियुक्ति समिति की अनुशंषा पर माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा राजस्थान उच्च न्यायालय के अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल राजदीपक रस्तोगी को ऐतिहासिक पांचवें कार्यकाल में नियुक्ति दी गई। यह नियुक्ति अभी 3 महिने के लिए दी गई है। केबिनेट नियुक्ति समिति के अध्यक्ष प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वंय है ज्ञात हो कि इससे पूर्व भी रस्तोगी को चौथा कार्यकाल दिया गया था जो अपने आप मे इतिहास था और अब पांचवा कार्यकाल देकर इतिहास पर इतिहास रच दिया है। रस्तोगी ने अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल पर 28.07.2014 को नियुक्त हुए थे और उसके पश्चात निरन्तर इस पद पर चौथी बार नियुक्त होकर इतिहास रचा था। रस्तोगी ने अपने कार्यकाल के दौरान भारत सरकार को लगभग 95 प्रतिशत केसेज में सफलता दिलाकर एवं 18000 करोड रूपये का राजस्व भारत सरकार के पक्ष में बचाकर एक इतिहास रचा है।

देवनानी से पुलिस महानिदेशक की मुलाकात

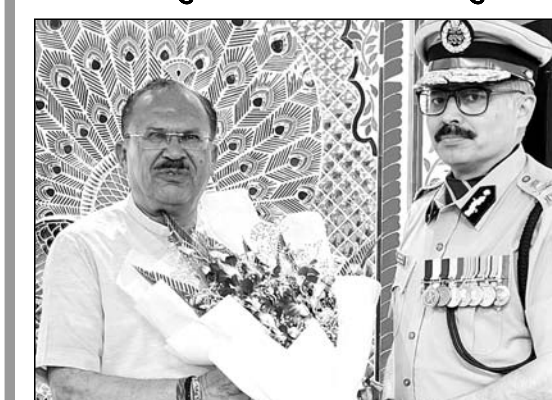

जयपुर । राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी से बुधवार को यहां विधान सभा में राजस्थान के नवनियुक्त पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा ने शिष्टाचार मुलाकात की। पुलिस महानिदेशक शर्मा ने विधान सभा अध्यक्ष देवनानी का पुष्प गुच्छ भेंट कर अभिवादन किया। देवनानी ने इस नवीन दायित्व के लिए शर्मा को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। विधान सभा अध्यक्ष देवनानी ने पुलिस महानिदेशक से विधान सभा, विधायक आवास परिसर व कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान और अजमेर से संबंधित विभिन्न सुरक्षा व्यवस्थाओं पर चर्चा की। देवनानी से भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी राजीव कुमार शर्मा की राज्य के पुलिस महानिदेशक के रूप में पदभार ग्रहण के पश्चात यह पहली शिष्टाचार भेंट थी।

आयुक्त पटेल ने ली बैठक

जयपुर। हेरिटेज निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल ने बुधवार को भवन निर्माण शाखा कार्मिकों की बैठक ली। इस दौरान निगम आयुक्त ने बैठक में निगम अधिकारियों को अवैध निर्माणों की शिकायतों की डिटेल ऑडिट कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिन अवैध निर्माण को सीज किया गया, वहां पर निरीक्षण कर निगरानी रखी जाएं। जिससे कि सीज के दौरान अन्य निर्माण नहीं हो सकें। इसके अलावानिरीक्षण के दौरान की सीज भवन की फोटो अपलोड की जाएं, कम से कम तीन बार की विजिट फोटो जियो टैग वाली अपलोड की जाएं। वहीं, बैठक में आयुक्त डॉ निधि पटेल ने जोन के द्वारा की जा रही अवैध निर्माणों के सीज प्रकरणों का एक रजिस्टर भी दर्ज करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि शपथ पत्र देने के बाद नियमानुसार भवन की सीज खुलने के बाद भी 60 दिन तक अवैध निर्माण की मॉनिटरिंग की जाएं और रिकॉर्ड सुरक्षित रखें। साथ ही कहा कि शिकायतों के निस्तारण करते हुए निगम कार्मिकों की शिकायत मिलने पर कनिष्ठ अभियंता, गजधर और अन्य शाखा के कर्मचारियों पर की सख्त कार्रवाई जाएगी।

प्रेम जाल में फांस कर युवती से दुष्कर्म

जयपुर। शास्त्री नगर थाना इलाके में रिश्तेदार युवक द्वारा प्रेम जाल में फांस कर एक युवती से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। विरोध करने पर आरोपित रिश्तेदार ने शादी करने का झांसा देकर घर से भगा ले जाकर देहशोषण कर वापस छोड़ दिया। इस संबंध में थाने में पीड़ित युवती ने आरोपित रिश्तेदार के खिलाफ मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने बताया कि शास्त्री नगर की रहने वाली 25 वर्षीय युवती ने मामला दर्ज करवाया है कि रिश्तेदार होने के कारण आरोपित का घर पर आना-जाना था। बातचीत के दौरान आरोपित रिश्तेदार ने उसे प्रेम जाल में फांस लिया। मिलने आने पर अकेला पाकर आरोपित ने उसके साथ जबरदस्ती की। विरोध करने पर आरोपी ने शादी करने का झांसा देकर दुष्कर्म किया। शादी करने का झांसा देकर लगातार देहशोषण करता रहा। आरोप है कि शादी करने की कहकर आरोपित रिश्तेदार उसे घर से भगाकर ले गया। लिव-इन में रखकर आरोपित ने उसके साथ देहशोषण किया। जिसके बाद उसे वापस घर छोड़कर चला गया। शादी करने का दबाव बनाने पर आरोपित ने मना कर दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

रोहिणी विहार बढारणा में 33 केवी सब-स्टेशन का कार्य पूर्ण

जयपुर। जयपुर नगर वृत्त-उत्तर के अन्तर्गत सिटी डिवीजन-7 क्षेत्र के रोहिणी विहार बढ़ारणा में 33/11 केवी सब-स्टेशन का कार्य पूर्ण कर इससे विद्युत आपर्ति प्रारम्भ कर दी गई है। इस उपकेन्द्र के निर्माण पर 4.43 करोड़ रूपए की लागत आयी है। इस सब स्टेशन को 33 केवी विद्युत सप्लाई 220 केवी जीएसएस वीकेआई और 33/11 सब-स्टेशन हरमाड़ा से की जाएगी। सब-स्टेशन से 11 केवी के सात फीडर निकाले गए हैं जिनसे देव विहार, रोहिणी विहार, बढारणा, केरियों की ढाणी, चन्दिजा की ढाणी, भगवती नर्सरी, हरमाडा घाटी एवं मनसा माता रोड़ क्षेत्र की विद्युत सप्लाई में सुधार होगा और लगभग 8 हजार विद्युत उपभोक्ताओं को बेहतर विद्युत आपूर्ति मिलेगी।

आजीवन कारावास की सजा काट रहा बंदी खुली जेल से भागा

जयपुर। मालपुरा गेट थाना इलाके में स्थित सांगानेर खुला बंदी शिविर से आजीवन कारावास की सजा काट रहा बंदी फरार हो गया। इस सम्बंध में खुला बंदी शिविर प्रभारी ने थाने में मामला दर्ज करवाया है।
जांच अधिकारी महिला हेड कांस्टेबल धोली बाई ने बताया कि खुला बंदी शिविर प्रभारी ने मामला दर्ज करवाया कि बंदी गोपाल लाल मीणा हत्या के एक मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहा था। 15 जुलाई को वह सुबह काम पर गया था शाम वह रोल कॉल पर नहीं आया। इस पर उससे सम्पर्क करने का प्रयास किया,लेकिन उसका फोन बंद आया।

आरोपी गिरफ्तार

जयपुर। कानोता थाना पुलिस ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए 01.01 ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक सहित एक बदमाश को गिरफ्तार किया है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है। एसआई सुभाष ने बताया कि पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए 01.01 ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक सहित कालू उर्फ आमिर को लखेसरा रोड गिरफ्तार किया है।

Expressing through Emojis

Emojis have been used since the beginning of the internet to transmit emotion in the written medium. As internet technology advanced, so did the use of the emoji, with previously pure text bits of ASCII Art turning into full-fledged animated faces and symbols. We've all used them, and we're excited for the future of them! World Emoji Day celebrates the history of these emotional expressions, and encourages you to be exceptionally emotive! After all, it's always nice to let someone know how you're feeling when you write, isn't it? Emojis are just one more way!

#SNAKE BUSTERS

Tears For Life

National Research Centre on Camel, Bikaner finds that antibodies derived from camel tears may help neutralize snake venom.

A new study reveals that a single drop of camel's tear can counteract snake venom. Learn how this desert miracle could revolutionize snakebite treatment and medicine. In a groundbreaking development from the arid lands of Rajasthan, the camel, long revered as the 'ship of the desert,' is now proving to be more than just a mode of transport for farmers. A pioneering study by the National Research Centre on Camel (NRCC) in Bikaner has revealed that antibodies derived from camel tears and immune systems may help neutralize snake venom, opening a new path to treat snakebites and boosting the incomes of camel-rearing farmers.

Scientific Breakthrough with Global Implications

The NRCC researchers conducted experiments by immunizing camels (Camelus dromedarius) with venom from the saw-scaled viper (Echis carinatus sochureki), a highly venomous snake species. Antibodies extracted from the animals' tears and blood were found to effectively counteract the lethal effects of venom, particularly hemorrhage and coagulopathy. Notably, these camel-derived antibodies triggered fewer allergic reactions and were more potent compared to traditional antivenoms derived from horse immunoglobulin (IgG), which are expensive and complex to produce.

India witnesses nearly 58,000 snakebite deaths annually, with another 140,000 cases of disability, the highest globally. The NRCC's findings could pave the way for more affordable, safer, and scalable treatment options, especially in rural areas where snakebite incidents are common and medical intervention is often delayed.

A Lifeline for Rajasthan's Camel Herders

This research is also proving economically transformative for camel-rearing communities in regions like Bikaner, Jaisalmer, and Jodhpur. The NRCC has encouraged local farmers to provide their camels for the controlled and safe extraction of tears and blood samples. In return, they are paid handsomely. Pharmaceutical companies, including the Serum Institute of India and other private drug manufacturers, are now actively seeking camel-derived antibodies. As per estimates, farmers earn an additional 5,000 to 10,000 per camel per month, creating a new revenue stream that is both sustainable and scientifically valuable.

From Beasts of Burden to Bio-Miracles

With their unique immune resilience and adaptability to extreme climates, camels are now being seen in a new light, not just as beasts of burden but as biological allies in the fight against one of India's deadliest health hazards. The NRCC's research underscores the untapped potential of indigenous species in medical innovation and rural development.

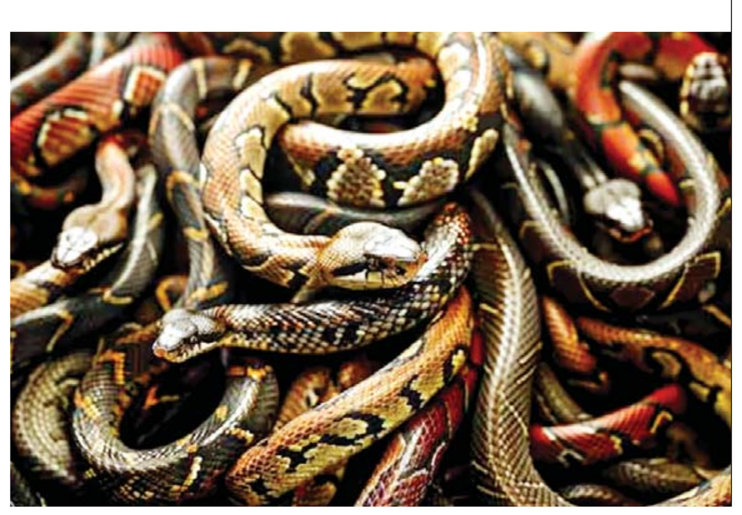

The Mughal Women Ruled

In 1631, their mother, Mumtaz, died while delivering baby Gauhar Ara. Shah Jahan went into deep depression. The new-born Gauhar needed immediate attention, and somebody had to hold the family together. Jahanara, inexperienced and just 17, took charge. She nursed Shah Jahan back to health, and became a maternal guardian to the younger siblings. Even Aurangzeb would confide in her (he was often an 'injured' party because Shah Jahan never openly showed him affection). Jahanara was the tolerant, conciliatory, mother figure of the family.

Roshnara Begam.

Gauhar Ara Begam.

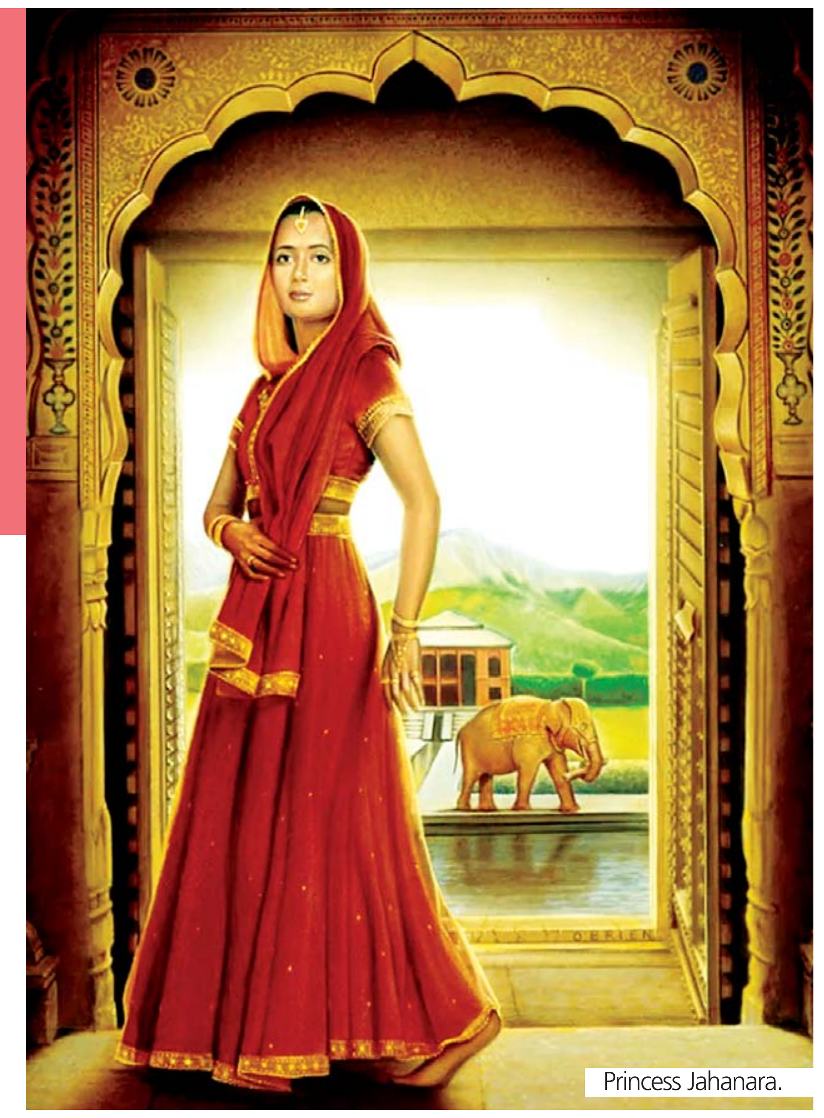
Princess Jahanara.

Shah Jahan receiving Dara Shikoh.

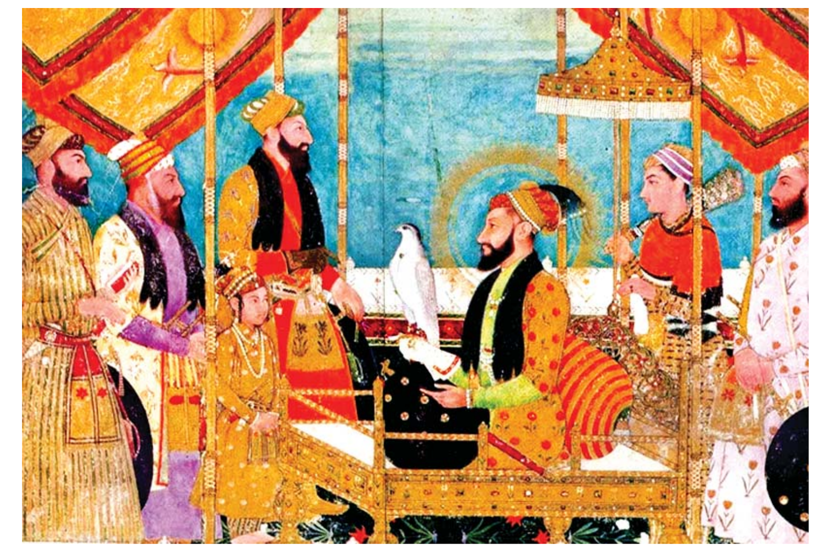
Emperor Aurangzeb seated on a golden throne in his durbar.

Anjali Sharma
Senior Journalist & Wildlife Enthusiast

#BEHIND CURTAINS

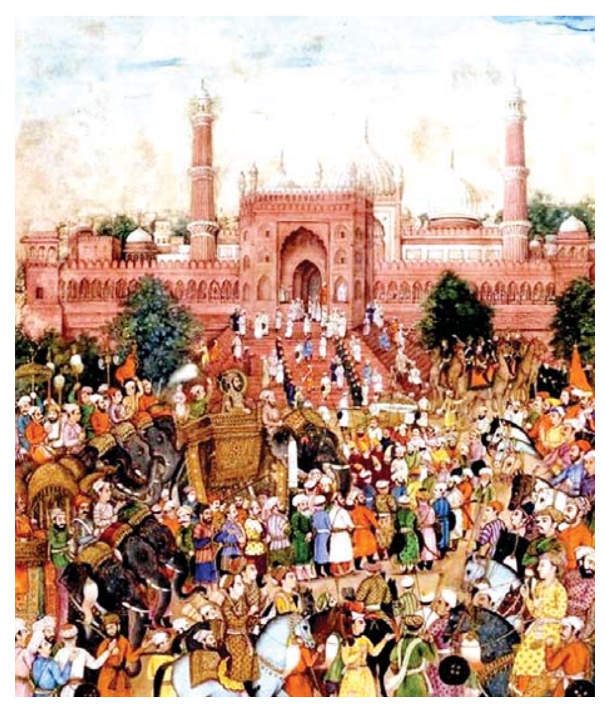

Mughal princess Roshnara Begam.

The women of the Mughal Empire were not mere ornaments in the imperial court. They were educated, artistic and commercially and politically savvy, and significantly influenced government decisions even during Aurangzeb's dictatorial reign. Read on for the remarkable story of Aurangzeb's sisters.

The Mughal emperor Aurangzeb had three brothers and three sisters (Shah Jahan and Mumtaz had fourteen children in all, but seven of them died during infancy). His equation with his brothers was simple: they were rivals who had to be eliminated. His eldest brother, Dara Shikoh, was beheaded and another brother, Shah Shuja, mysteriously vanished at the Burmese border while fleeing Aurangzeb's army. And his younger brother, Murad Baksh, was quietly executed in Aurangzeb's prison.

His relationship with his sisters, however, was complex. Instead of marrying and migrating, they remained spinsters in the capital. They were, however, not necessarily celibate, they had affairs and that had some consequences. While Mughal records were silent about these, contemporary European travelers recount tales of their romantic escapades.

The sisters played a significant role in Aurangzeb's life. In fact, the system was loaded against their getting married. Tradition required them to marry a royal who was equal or above their status. By the mid-17th century, the Mughal empire included large parts of Hindustan, Pakistan and Afghanistan, covering over 3 million square kilometres. Where would they find a compatible groom in the neighbourhood? (On the contrary, Mughal men could, and did, marry princesses of lesser kingdoms and filled their harems!)

In 1631, their mother, Mumtaz, died while delivering baby Gauhar Ara. Shah Jahan went into deep depression. The new-born Gauhar needed immediate attention, and somebody had to hold the family together. Jahanara, inexperienced and just 17, took charge. She nursed Shah Jahan back to health, and became a maternal guardian to the younger siblings. Even Aurangzeb would confide in her (he was often an 'injured' party because Shah Jahan never openly showed him affection). Jahanara was the tolerant, conciliatory, mother figure of the family.

When normalcy returned, Shah Jahan made Jahanara the Padshah Begum ('First Lady'). This was no honorific title: it was the second most powerful post in the empire. She could pass certain orders independently, make recommendations to the emperor, and perform certain actions in his absence. Shah Jahan also gave over half of Mumtaz's estate to Jahanara, dividing the balance between the other siblings. She turned out to be a good entrepreneur,

> When normalcy returned, Shah Jahan made Jahanara the Padshah Begum ('First Lady'). This was no honorific title: it was the second most powerful post in the empire. She could pass certain orders independently, make recommendations to the emperor, and perform certain actions in his absence.

even earning good profits through a ship she owned in Surat. She spent her fortune usefully, supporting famine relief, pilgrimages and alms-giving, sponsoring mosques and overseeing the development of Chandni Chowk. Jahanara also wrote many books, including a respected biography of the Sufi saint Khwaja Moinuddin Chishti.

One person was bitter about Jahanara's huge popularity: Aurangzeb's other sister, Roshanara. She was the antithesis of Jahanara: feisty and fun-loving, but resentful of the fact that she had to live in Jahanara's shadow. She too loved poetry, and was a clever businesswoman. She found a natural ally in Aurangzeb who shared a similar grudge: Dara got all the cushy assignments in the government, while Aurangzeb got all the complex tasks, with no appreciation. Shah Jahan's favourite was clearly Dara, not Aurangzeb.

Dara was very different from Aurangzeb. He loved poetry, and dabbled in Sufism and other religious philosophies. He lacked

Aurangzeb's military and governance skills, but was not above manipulating his father's sympathy to his advantage. At one point, he and Shah Jahan plotted to eliminate Aurangzeb from the imperial race. Roshanara got wind of the conspiracy and warned Aurangzeb. She also turned the Muslim clergy against Dara by pointing out that his secular activities were anti-Islam.

The casualty in this whole affair was Jahanara. It was unlikely that she was involved in any conspiracy. But she was perceived as 'pro-Dara,' which in Aurangzeb's books read as 'anti-Aurangzeb.' Born within a year of each other, Jahanara and Dara had not only grown up together, but they also shared a common love for poetry and Sufism.

In 1657, the brothers started fighting for the throne, even when Shah Jahan was alive. Jahanara, although close to Dara, tried to stop the fratricidal wars. She appealed to Murad and Shah Shuja, quite unsuccessfully, to stop fighting. Aurangzeb arrived with a powerful army to fight Dara and Shah Jahan. Jahanara appealed to Aurangzeb not to fight his own father; she proposed a partition of the land among the four sons (like their ancestral Timurids would have done). She received a cold reception from Aurangzeb, he now perceived her as part of the enemy camp. He denounced Dara as an infidel (Roshanara's smear campaign had worked!). Aurangzeb would settle for nothing less than the whole empire. In the battles that ensued, Aurangzeb captured Dara. Some scholars believe that Roshanara egged Aurangzeb to behead Dara (in all probability, Aurangzeb needed no prompting, though). Shah Jahan was placed under house-arrest in Agra, and Jahanara voluntarily accompanied him to look after him. In any case, Aurangzeb dismissed Jahanara from the Padshah Begum post and appointed Roshanara instead.

> Aurangzeb arrived with a powerful army to fight Dara and Shah Jahan. Jahanara appealed to Aurangzeb not to fight his own father; she proposed a partition of the land among the four sons (like their ancestral Timurids would have done).

Finally, Roshanara was out of Jahanara's shadow!

Roshanara did not make a great First Lady. When Aurangzeb was away, she passed orders that suited her personal interests and enriched her coffers. There were allegations of corruption. As the head of the royal harem, she rode roughshod over the ladies and incurred their displeasure. She was still young and attractive (just over 40) and had flings which were grist for the rumour mill. This was too much for Aurangzeb who was inherently austere to the point of asceticism. In 1667, he dismissed her from the Padshah Begum post and banished her from the Red Fort. She settled at the Roshanara Bagh, a lovely jungle villa that she had built for herself. She died in seclusion in 1671, aged only 54. Some historians believe she was discreetly poisoned under Aurangzeb's orders.

Shah Jahan died a prisoner in 1666, and Jahanara's mission was over when she arranged his funeral. Aurangzeb re-appointed Jahanara as the Padshah Begum. It was his way of admitting that he had judged her wrongly, a remarkably un-egoistic admission from the dictator. She resumed her good work in government service, even occasionally moderating Aurangzeb's ultra-orthodox and extreme measures. She died peacefully in 1681.

Now about Gauhar Ara, Aurangzeb's little sister. Because she was little, she missed all the action in the early part of our story. When she grew up, she took a leaf out of Jahanara's book, working for family unity. In 1673, she played the lead role in conducting the marriage of Prince Sipihr Shikoh (son of Dara Shikoh) and Princess Zubdat-un-nissa (Aurangzeb's daughter). Strangely, it did not matter that Sipihr had witnessed his father-in-law beheading his father. What mattered was that Zubdat-un-nissa had married a royal of equal status! Gauhar adopted and raised Dara's granddaughter Salima Banu, and conducted her wedding with Aurangzeb's fourth son, Muhammad Akbar. Aurangzeb's relationship with Gauhar was not as intense as with the other two sisters. Yet, when she died in 1706, he lamented, "Of all the children of Shah Jahan, she and I alone were left." Aurangzeb was a man of contradictions: ruthless and greedy for power, he did not care for money, but lived frugally as a pious Muslim. He killed his brothers and did not know how to love his sisters, but rued his loneliness after his last sister died. He died within a year and was buried in a simple grave.

rajeshsharma1049@gmail.com

#CHILDCARE

We Give Medicines To Our Children Too Soon

Medicating low-grade fevers isn't recommended!

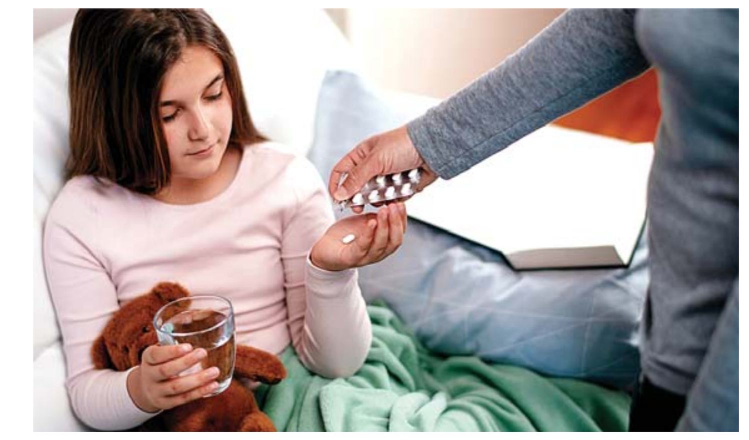

While most parents recognize that a low-grade fever helps a child's body fight off infection, one in three would give fever-reducing medication for spiked temperatures below 100.4, a poll finds. However, medicating low-grade fevers isn't recommended.

Half of parents would also use medicine if the fever was between 100.4 and 101.9 degrees, and a quarter of parents would likely give another dose to prevent the fever from returning.

"Often parents worry about their child having a fever and want to do all they can to reduce their temperature. However, they may not be aware that in general, the main reason to treat a fever is just to keep their child comfortable," says pediatrician Susan Woolford, co-director of the C.S. Mott Children's Hospital National Poll on Children's Health at University of Michigan Health.

"Some parents may immediately rush to give their kids medicine but it's often better to let the fever runs its course. Lowering a child's temperature doesn't typically help cure their illness any faster. In fact, a low-grade fever helps fight off the infection. There's also the risk of giving too much medication when it's not needed, which can have side effects."

The method used to take a child's temperature matters and can affect the accuracy of the measurement, Woolford notes. Parents polled, most commonly, take their child's temperature by forehead scan or mouth while less than a sixth use ear, underarm, or rectal methods.

Remote thermometers at the forehead or inside the ear canal can be accurate if used correctly. But forehead readings may be inaccurate, Woolford says, if the scanner is held too far away or if the child's forehead is sweaty. With ear thermometers, which aren't recommended for newborns, earwax can also interfere with the reading.

For infants and young children, rectal temperatures are most accurate. Once children are able to hold a thermometer in their closed mouth, oral temperatures also are accurate while armpit temperatures are the least accurate method.

"Regardless of the device used, it's important that parents review the directions to ensure the method is appropriate for the child's age and that the device is placed correctly when measuring temperature." Three in four parents say they take their child's temperature as soon as they notice a possible problem, while a little less than a fourth wait to see if the problem continues or worsens before taking the temperature.

"A quarter of parents would give their child more medicine to prevent a fever from returning even though it doesn't help them get better," Woolford says. "If a child is otherwise doing well, parents may consider monitoring them and using alternative interventions to help keep them comfortable." However, if a newborn or infant less than three months old has a fever, they should immediately see a health professional, Woolford adds. She shares more tips on how to handle fevers in kids!

LET THE FEVER DO ITS JOB

A fever can be beneficial, and there are several reasons to let a low-grade fever run its course in older children, mainly because it's working as a weapon to kill the virus or bacteria causing sickness, Woolford says. Evidence shows that fevers are part of the immune response to prevent viruses and bacteria from replicating and also produce more white blood cells and antibodies.

Fever-reducing medications also mask symptoms

"Medications used to lower temperatures also treat pain, but pain is often a sign that helps to locate the source of an infection," Woolford says. "By masking pain, fever-reducing medication may delay a diagnosis being made and delay receiving treatment if needed."

DON'T OVERDO IT

When parents choose to give fever-reducing medication, it's helpful to keep a log of temperature readings and when they gave the child medicine. This will provide an accurate record in the event that the child's fever continues for an extended period of time. Parents of young children, in particular, should also avoid using combination cold medications along with fever-reducing medications due to the risk of over dosage.

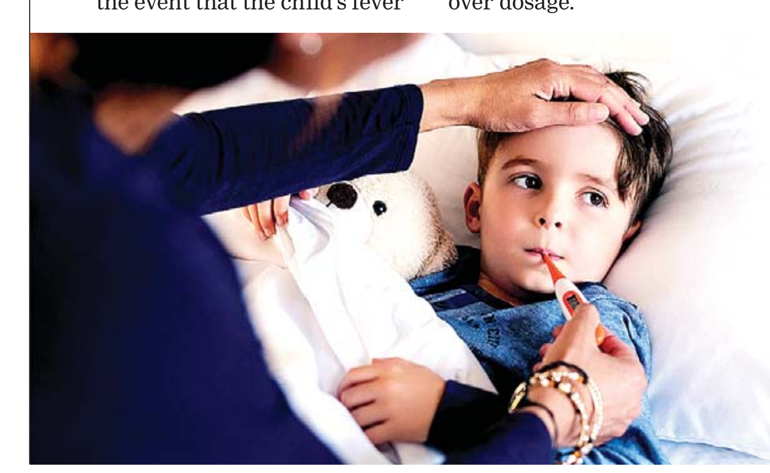

KNOW WHEN TO CALL THE DOCTOR

For infants and newborns three months and younger, any sign of a fever should prompt a call to the provider. For children 4-12 months old, parents should consult with a doctor if a fever is accompanied by signs such as decreased activity, increased fussiness, or decreased urine output. Parents should also call if their child has signs of pain or if they are not acting themselves even when their temperature comes down. Fevers that reach 104 degrees or fevers that remain for an extended period (more than 24 hours for children under two, or more than three days for children ages two and older) should prompt contact with the provider.

THE WALL

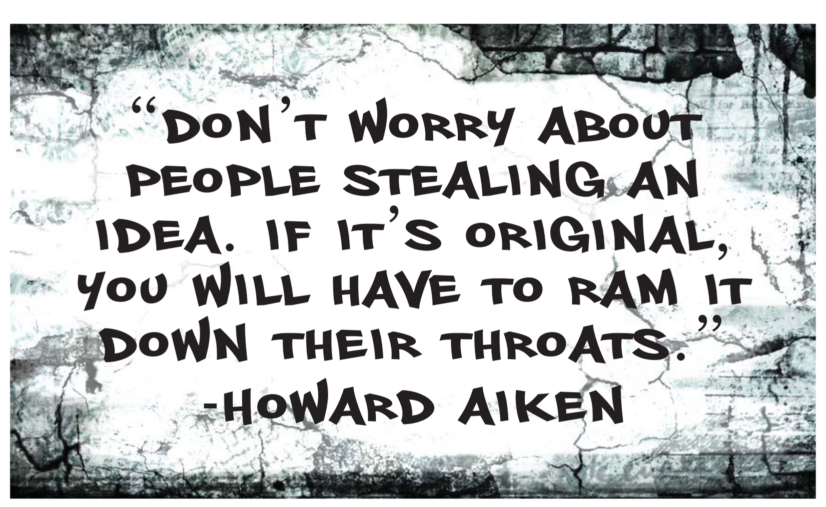

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

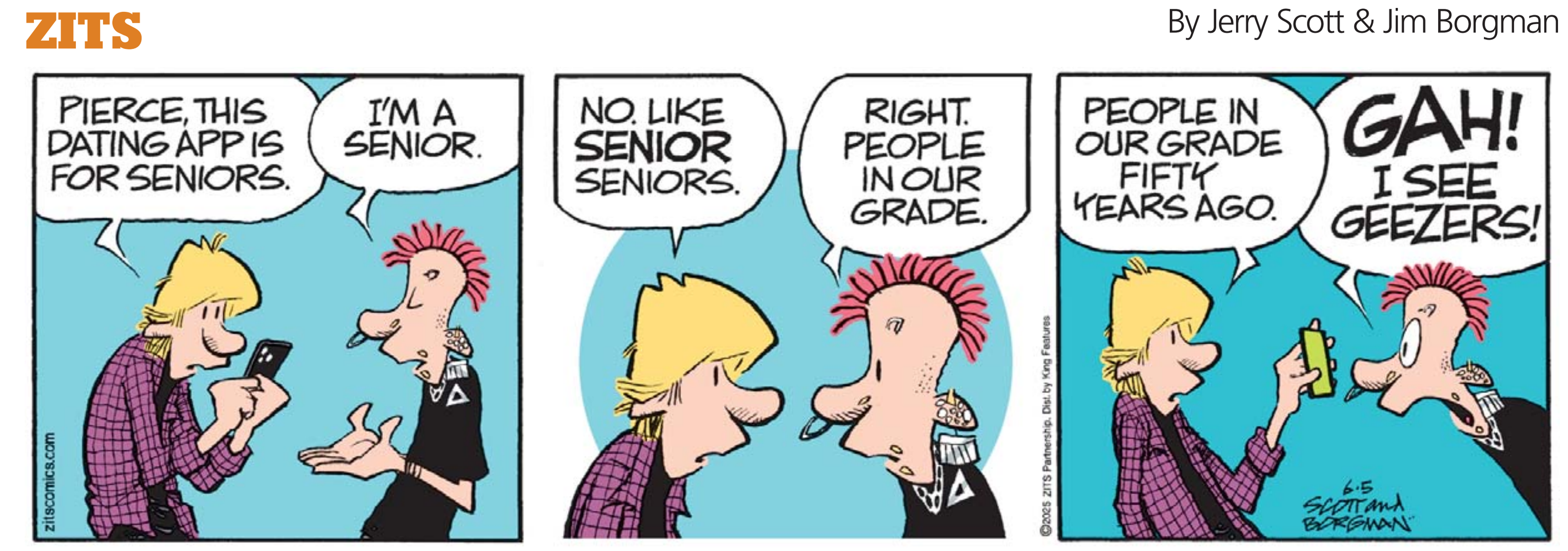

संक्षिप्त

हरियाली से सरोबार हुआ विद्यालय

सांभरझील, (निसं)। यहां का दरबार उच्च माध्यमिक विद्यालय स्कूल प्रशासन की इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प के कारण आसपास के क्षेत्र में हरियाली का सकारात्मक संदेश प्रसारित कर रहा है। स्कूल के प्रिंसिपल टीकमचंद मालाकार व उनके सहयोगी टीम के अलावा स्कूल के सभी विद्यार्थियों का कठोर परिश्रम का परिणाम आज परिलक्षित हो रहा है। करीब 10 बीघा भूमि में सभी किस्म के पौधे विद्यार्थियों और अभिभावकों के अलावा आने वाले अतिथियों को आकर्षित तो कर ही रहे हैं साथ ही पर्यावरण शुद्धिकरण का भी मजबूत आधार बनते जा रहे हैं। इसी क्रम में बुधवार को रिक्त पड़ी भूमि पर अधिक से अधिक पौधारोपण करने हेतु सभी विद्यार्थियों को एक ही पौधा दिया गया और संकल्प दिलाया कि जब तक विद्यार्थी इस स्कूल से अपनी पढ़ाई पूरी करके प्रस्थान नहीं कर जाएंगे तब तक वे स्वयं भी इसको बड़ा होने तक ध्यान रखेंगे।

नदी में डुबने से बुजुर्ग की मौत

टोंक, (निसं)। पीपलू उपखंड के जवाली गांव में पैर फिसलने से एक बुजुर्ग की सहोदरा नदी के तेज बहाव में बहने से मौत हो गई। ग्रामीणों ने बताया कि जवाली निवासी प्रहलाद जांगिड़ उम्र 74 साल जो बुधवार सुबह परिजनों को खेत पर जाने की कहकर निकले थे, इसी दौरान सहोदरा नदी के किनारे पर पैर फिसलने से वह नदी में पानी के तेज बहाव में बह गये, जिसकी सूचना पास से गुजर रहे किसानों ने उनके परिजनों और अन्य ग्रामीणों को दी। जहां मौके पंहुचे ग्रामीणो ने इस की सूचना पुलिस और ग्राम पंचायत प्रशासन को सूचना दी, जिसके बाद एसडीआरएफ टीम व पुलिस मौके पर पहुंची। टीम ने तलाश जारी कर वृद्ध का शव घटना स्थल से करीब दो किमी दूर नदी स्थित माही बांध की नहर के नीचे मिला, जिसके बाद एसडीआरएफ टीम ने शव पुलिस को सुपुर्द कर दिया।

शुल्क जमा कराने की अंतिम तिथि बढ़ाई

सांभरझील,(निसं)। राजकीय कन्या महाविद्यालय में बीए प्रथम सेमेस्टर में दस्तावेज सत्यापन व ई मित्र पर जाकर शुल्क जमा कराने की अंतिम तिथि बढ़ा दी गयी है। प्रवेश नोडल अधिकारी समीक्षा शर्मा ने बताया कि प्रथम वरीयता व प्रतीक्षा सूची में सम्मिलित छात्राएं 16 जुलाई तक महाविद्यालय में उपस्थित होकर दस्तावेज सत्यापन व ई मित्र पर जाकर शुल्क जमा करा सकती है। प्रवेशित विद्यार्थियों की प्रथम सूची का प्रकाशन 18 जुलाई को किया जायेगा। महाविद्यालय में शिक्षण कार्य 21 जुलाई से प्रारम्भ होगा। इसी प्रकार बीए प्रथम सेमेस्टर की रिक्त सीटों पर प्रवेश के लिए 16 से 22 जुलाई तक आवेदन लिए जायेंगे। प्रवेश नोडल अधिकारी समीक्षा शर्मा ने बताया कि जो छात्राएं पहले चरण में प्रवेश नहीं ले सकीं, वे 22 जुलाई तक ई-मित्र के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकती हैं। प्रतीक्षा सूची का प्रकाशन 25 जुलाई को किया जायेगा तथा अभ्यर्थियों द्वारा शुल्क जमा कराने की अंतिम तिथि 29 जुलाई रहेगी।

रोजगार उत्सव का आयोजन आज

टोंक, (निसं)। राज्य सरकार के निर्देशानुसार आज सहकार एवं रोजगार उत्सव का आयोजन किया जायेगा। इसी क्रम में कृषि ऑडिटोरियम टोंक में कार्यक्रम का प्रसारण एवं संवाद कार्यक्रम होगा, राज्य स्तर पर यह कार्यक्रम दादिया (वाटिका) जयपुर में आयोजित किया जाएगा।जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पादित करने के लिए संबंधित विभागों के अधिकारियों को विभिन्न जिम्मेदारियां सौंपी है। कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए सहायक निदेशक लोक सेवाऐ कलेक्ट्रेट टोंक, रूबी अंसार को प्रभारी एवं केंद्रीय सहकारी बैंक टोंक के प्रबंध निदेशक को सहायक प्रभारी नियुक्त किया गया है।

चोरी का खुलासा, आरोपी गिरफ्तार

बौंली/बामनवास,(निसं)। क्षेत्र के मित्रपुरा पुलिस थाने ने 29 जून 2025 की रात्रि को श्री राम तपोभूमि समर्थ सिद्ध संत आश्रम पर नक़बजनी व चोरी कर करीब 1लाख 50हजार रुपए चुराने के मामले का खुलासा करते हुए आरोपी अभिराज सिंह उर्फ हिमांशु उर्फ देवेंद्र सिंह राजावत (20) निवासी मित्रपुरा को गिरफ्तार कर लिया है। मित्रपुरा थाने के हैड कांस्टेबल पुष्पेंद्र चौधरी ने बताया कि 29 जून 2025 को कस्बा मित्रपुरा स्थित श्रीराम तपोभूमि आश्रम में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर प्रसादी वितरण के लिए स्वामी जी महाराज ने गांव-गांव में जाकर राशि एकत्रित की थी।

अधिकारी आमजन की समस्याओं का प्राथमिकता से समाधान करें : मीणा

टोंक, (निसं)। जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक बुधवार को टोंक-सवाई माधोपुर सांसद हरीश चंद्र मीणा की अध्यक्षता में जिला कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई। बैठक में सांसद ने केंद्र द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए सभी अधिकारियों को सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर देते हुए कहा कि आमजन को इनका त्वरित लाभ मिले।

सांसद मीना ने कहा कि विभागीय अधिकारी आपसी समन्वय से कार्य करते हुए आमजन की समस्याओं का प्राथमिकता से समाधान करें। उन्होंने कहा कि अधिकारी योजनाओं कि क्रियान्वित करते समय विधि सम्मत कार्य करें। संवेदनशीलता और पारदर्शिता बनाए रखे। उन्होंने कहा कि जिले का विकास और लोगों के जीवन को सुगम बनाना हम सबकी जिम्मेदारी है। उन्होंने टोंक के स्थानीय निवासियों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए विशेष कार्य योजना बनाकर प्रयास करने के लिए कहा। सांसद ने जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल से ईसरदा बांध के निर्माण एवं पेयजल वितरण लाइनों को डालने की प्रगति की जानकारी ली। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधीक्षण अभियंता राजेश गोयल को निर्देशित किया कि जिले में पेयजल वितरण की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित की जाएं। जल जीवन मिशन के तहत विधानसभावार स्वीकृत एवं लंबित कार्यों की सूची तैयार कर उन्हें समयबद्ध तरीके से पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति की जानकारी लेकर सभी वार्डों में निर्बाध जलापूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश प्रदान किए हैं। उन्होंने जेजेएम कार्य के दौरान क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत करने की बात भी कही। जल संसाधन विभाग के अधिशाषी अभियंता निरंजन मीणा को मानसून को देखते हुए बांधों एवं छोटे बड़े तालाबों की लगातार मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। साथ ही, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत जिले में प्रस्तावित व प्रगतिरत परियोजनाओं की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिए।

अल्पसंख्यक एवं समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं की समीक्षा करते हुए कहा कि बजट के अभाव में योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा नहीं आए। समाधान के लिए संबंधित अधिकारी पत्र लिखकर उच्च अधिकारियों को समय पर अवगत कराएं।बैठक में सड़क, बिजली एवं आवास योजनाओं की समीक्षा के दौरान सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीक्षण एचएल मीणा से पीएम ग्राम सड़क योजना से जुड़े गांवों की स्थिति, क्षतिग्रस्त सड़कों को सही करने एवं गहलोद हाई लेवल ब्रिज के कार्य प्रगति की जानकारी ली। विद्युत विभाग को पीएम कुसुम योजना ए और सी में जिले में चल रहे कामों में तेजी लाने के लिए निर्देशित किया। प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन, पीएम किसान सम्मान निधि, मनरेगा आदि योजनाओं की गहन समीक्षा की गई।सांसद मीना ने नगर निकाय द्वारा स्ट्रीट वेंडरों के लिए संचालित लोन वितरण योजना को पारदर्शी तरीके से क्रियान्वित करने के निर्देश दिए। उन्होंने आरयूआईडीपी के अधिकारियों को टोंक नगर परिषद क्षेत्र में ऊंचे सीवरेज चौंबरों के कारण हो रहे हादसों को गंभीरता से लिया और अधिकारियों को इन्हें सही करने के लिए कहा। सांसद ने जिले में स्मैक के बढ़ते कारोबार पर चिंता जाहिर करते हुए पुलिस अधीक्षक को इसे नियंत्रित करने के निर्देश दिए। साथ ही, एनएचएआई और स्टेट हाईवे के टोल प्लाजा पर लगने वाले कार्मिकों का पुलिस वेरिफिकेशन करने के लिए कहा। उन्होंने आरएसआरडीसी के अधिकारियों को क्षतिग्रस्त स्टेट हाईवे सड़कों को रिपेयर करने के निर्देश दिए। बैठक में सीईओ परशुराम धानका, एडीएम रामरतन सौकरिया, प्रधान उनियारा फूलबाई मीणा, सीएमएचओ शैलेंद्र चौधरी, पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. छोटू लाल बैरवा, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक करतार सिंह मीणा आदि मौजूद रहे।

जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक आयोजित हुई।

> ■ 'अधिकारी सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन करें, आमजन को मिले त्वरित लाभ'

ब्लॉक स्तरीय आमुखीकरण कार्यशाला आयोजित

कोटपूतली, (निसं)। प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत राजकीय सरदार जनाना अस्पताल के सभागार में बीसीएमओ डॉ. पूरण चन्द गुर्जर के नेतृत्व में ब्लॉक स्तरीय आमुखीकरण कार्यषाला का आयोजन किया गया।

कोटपूतली-बहरोड़ जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. जयभगवान यादव, एसटीएस सुरेश सैनी व एसटीएलएस रामरतन रावत ने प्रजेन्टेशन देते हुये बताया कि निक्षय पोर्टल एवं निक्षय एप पर हाईरिस्क ग्रुप पोपुलेशन का सर्वे कर उनकी निक्षय आई.डी. बनाकर एक्सरे एवं सीबी नॉटध्ट्रुनॉट मशीन से बलगम जांच करवाना है। बैंक डिटेल अपडेट करके निक्षय पोषण योजना का लाभ देना। जांच में पॉजिटिव पाये गये मरीजों का उपचार करना, निक्षय मित्र द्वारा पॉजिटिव पाये गये मरीजों को पोषण किट दिलवाना। हाई रिस्क ग्रुप की निक्षय आई.डी. बनाना व उस पर टेस्ट रिपोर्ट अपडेट करना, बैंक डिटेल अपडेट करना, ऑन ट्रिटमेन्ट करना, कार्ड ग्रिन करना, टीबी के मरीजों की जीओ टेकिंग करना समझाया गया। साथ ही निक्षय पोर्टल की समीक्षा करने पर सैक्टर नारेहड़ा, गोनेडा, बनेठी, चिमनपुरा, सरदार जनाना अस्पताल एवं युपीएचसी की स्क्रीनिंग संतोषप्रद नहीं पायी गई जिन्हे कारण बताओ नोटिस जारी करने के आदेश प्रदान किये गये।

बीपीओ विजय तिवाड़ी ने मौसमी बीमारियों की समीक्षा करते हुये मच्छर जनित बिमारियां को नियंत्रित करने हेतु एन्टीलार्वा एक्टीविटी करने एवं बुखार के मरीजां की स्लाईड लेने के निर्देश प्रदान किये। मौसमी बीमारियों की समीक्षा के दौरान उप स्वास्थ्य केन्द्र कांसली, जगदीशपुरा, फतेहपुरा कलां एवं सीएचसी नारेहड़ा की ब्लड स्लाईड संतोषप्रद नहीं रहने पर कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश प्रदान किये गये। इस मौके पर ब्लॉक स्तर से एसटीए ख्यालीराम यादव, बीएनओ प्रेम प्रकाश सैनी, पीएचसी, सीएचसी, उप स्वास्थ्य केन्द्रों से चिकित्सा अधिकारी, सीएचओ, एलएचवी, एएनएम, एलटी, एलए, एआरजी एवं डाटा एन्ट्री ऑपरेटर उपस्थित रहे।

जयपुर डेयरी अध्यक्ष पूनियां ने कोटपूतली का दौरा किया

कोटपूतली, (निसं)। जयपुर डेयरी अध्यक्ष ओमप्रकाश पूनियां ने कोटपूतली क्षेत्र का दौरा किया। इस दौरान वीर गुर्जर शहीद स्मारक पर जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ की बैठक का आयोजन किया गया।

जिसमें मुख्य अतिथि जयपुर डेयरी अध्यक्ष ओमप्रकाश पूनियां ने गुरूवार को देश के गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाह के राजधानी जयपुर आगमन पर सभी दूध उत्पादकों व किसानों को जयपुर के ग्राम दादिया में गृह मंत्री अमित शाह के स्वागत समारोह में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने का आग्रह किया। जिस पर दूध उत्पादकों ने समारोह में भाग लेने का संकल्प लिया। बैठक में जयपुर डेयरी डायरेक्टर कालूराम, रामनारायण शर्मा, डेयरी सचिव भैरूलाल यादव, रोहिताश, महेंद्र सैनी, श्योराम जाट, शीशराम रावत, विक्रम रावत, वेदराम पटेल, रामनारायण यादव, बदलूराम बुढानिया, अशोक रावत, किशोर यादव, फौजी सिंह शेखावत व राजेन्द्र कसाना सहित अन्य लोग मौजूद थे। विनोद कुमार शर्मा व पप्पूराम स्वामी ने बताया कि जयपुर डेयरी अध्यक्ष ओमप्रकाश पूनियां ने सरस लाडो योजना का शुभारम्भ 01 अप्रैल 2016 को किया था। योजना के तहत लाडो (बालिका) की शादी पर एक लाख रूपये का चौक कन्यादान स्वरूप दिया जाता है। वहीं जयपुर डेयरी द्वारा 01 अप्रैल 2025 से सरस लाडो मायरो योजना का शुभारम्भ किया गया था। जिसमें लाडो की शादी पर 21 हजार रूपये का मायरा भात भरा जाता हैं। अभी तक जयपुर जिला दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड द्वारा 68 मायरा भात भरे जा चुके हैं।

दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ की बैठक लेते जयपुर डेयरी अध्यक्ष ओमप्रकाश पूनियां।

'आमजन को वृक्षारोपण के लिए जागरूक करें'

देवली, (निसं)। यहां आगामी नगर पालिका चुनाव को लेकर कांग्रेसी कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारी ने रणनीति बनाना शुरू कर दी है। इसी को लेकर देवली नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सौरभ जिंदल ने कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के साथ बैठक आयोजित की है। इस दौरान कांग्रेस पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं की कार्य समिति बैठक में सभी सदस्यों का सूत की माला पहनाकर कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष मुकेश गर्ग ने स्वागत किया।

इस मौके पर नगर अध्यक्ष सौरभ जिंदल ने बुथ कमेटी गठित करने,बी एल ए नियुक्त करने, आगामी नगर पालिका चुनाव मजबूती से लडने,शहर में कांग्रेस संगठन को मजबूत करने,पर एवं संगठन से जुडे कार्य नीति पर जोर दिया। साथ ही सभी कार्यसमिति सदस्यों से अनुरोध किया है कि प्रत्येक सदस्य अधिक से अधिक पौधे लगायें और वृक्षारोपण के लिए आम जन को जागरूक करें।

कांग्रेस नगर अध्यक्ष सौरभ जिंदल ने वृक्षारोपण किए जाने को लेकर सो एक वृक्ष के पौधे लगाने का निर्णय लिया है। और इसी के साथ कांग्रेस कार्य समिति वृक्षारोपण कार्यक्रम की शुरूआत करेंगी। तो वही शहर में आमजन की समस्या बिजली पानी इत्यादि को लेकर प्रशासन को ज्ञापन भी दिया जाएगा। कांग्रेस कार्यालय में हुई बैठक के दौरान कांग्रेसियों ने वर्तमान में जबरदस्ती लगाए जा रहे स्मार्ट मीटर का विरोध भी किया है और इस हेतु सरकार के नाम ज्ञापन देकर विरोध दर्ज करवाया जायेगा।

कांग्रेस कार्यालय में हुई बैठक में कांग्रेस प्रदेश महासचिव (आई टी सेल) नीरज शर्मा संपत सुवालका विनोद धर्मानी टीकम चंद सेन,शम्मी भाई रंगरेज, त्रिलोक बेरवा राजेंद्र चांवरिया,राहुल सुवालका, राजीव जैन, राम निवास मीणा,दिनेश जैन,मनजीत सिंह काका,राजू ग्वाला,सजग खंडेलवाल,राजू पाठक, सलीम खान, फ़ूल सिंह मीणा,नंदराम सहित कई कांठोसी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सहकार व रोजगार उत्सव कार्यक्रम आज

कोटपूतली। राज्य सरकार के निर्देशानुसार अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 के अवसर पर 'सहकार एवं रोजगार उत्सव' के जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन आज प्रातः 11 बजे राजकीय सरदार उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोटपूतली के सभागार में किया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा नवनियुक्त कार्मिकों से वीसी के माध्यम से संवाद कर उन्हें संबोधित करेंगे।

जिला स्तर के कार्यक्रम राज्य स्तरीय कार्यक्रम से वर्चुअली जुडेंगे। जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी ने बताया कि जिला स्तरीय कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिये संबंधित विभागीय अधिकारियों को कार्य आवंटित करते हुए समुचित इंतजाम सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये हैं। इसके लिये उपखंड अधिकारी कोटपूतली बृजेश चौधरी को प्रभारी अधिकारी एवं सहायक रजिस्ट्रार सहकारिता विभाग अशोकदीप पिंगोलिया को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में भाग लेने वाले नवनियुक्त कार्मिकों का कार्यक्रम स्थल पर पंजीकरण करने के साथ उपस्थिति प्रमाण पत्र जारी किया जायेगा। साथ ही, नवनियुक्त कार्मिकों को वैलकम किट प्रदान की जायेगी।कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु अतिरिक्त जिला कलक्टर ओमप्रकाश सहारण ने सरदार राजकीय विद्यालय में कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया एवं दिशा- निर्देश प्रदान किए।

प्रजापति समाज की बैठक

फुलेरा, (निसं)। श्री ब्रह्मा प्रजापति समाज विकास एवं विवाह समिति भन्दे बालाजी की बैठक का आयोजन समिति अध्यक्ष हुकमाराम दम्बीवाल की अध्यक्षता में किया गया। मीटिंग के दौरान आगामी 23 जनवरी बसंत पंचमी को समाज के 11 वें सामूहिक विवाह सम्मेलन को संपन्न करवाने पर से चर्चा एवं विचार विमर्श किया गया। इसके साथ ही विवाह योग्य जोड़ों को पंजीयन शुरू किया गया। इस दौरान मीटिंग में उपस्थित समाज बन्धुओं ने दो जोड़ों का पंजीयन करवाया गया। इसके अलावा धर्मशाला के ऊपर बन रहे भवन, नाली निर्माण, रसोई के पानी के निकासी एवं कलर आदि करवाने का निर्णय भी लिया गया। बैठक में कोषाध्यक्ष बाबूलाल बौद्ध कक्ष द्वारा धर्मशाला में ऊपर दो हॉल निर्माण का आय व्यय का ब्यौरा पढ़कर सुनाया गया। वहीं अध्यक्ष हुकमाराम दम्बीवाल ने निर्माण में योगदान करने वाले भामाशाहों का निर्माण पट्टीका में नाम अंकित करने की जानकारी दी। इस अवसर पर मीटिंग में समिति के पूर्व अध्यक्ष एवं संरक्षक कन्हैया लाल मारवाल आसलपुर, कोषाध्यक्ष बाबूलाल प्रजापति, मूलचन्द खटोड, हेमराज टटवाड़िया आदि मौजूद रहे।

गुरु वंदन कार्यक्रम का आयोजन

कोटपूतली। राजकीय एलबीएस पीजी महाविद्यालय में बुधवार को अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ राजस्थान उच्च शिक्षा की स्थानीय ईकाई द्वारा गुरु वंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ सरस्वती माता, भारत माता एवं गुरु वेदव्यास की प्रतिमाओं के समक्ष द्वीप प्रज्जवलन व पुष्प अर्पण से हुआ। प्राचार्य एवं जिलाध्यक्ष ने अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया।

मुख्य वक्ता महावीर प्रसाद कुमावत पूर्व स्थानीय संकाय सदस्य, क्षेत्र प्रचार प्रमुख राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने गुरु की महता पर प्रकाश डालते हुये गुरु को ब्रह्मा विष्णु और महेश तीनों रूपों में बताया। गुरु ब्रह्मा की तरह अपने शिष्य के गुणो का सृजन करता है, विष्णु की तरह उन गुणो का पालन कर उनको विकसित करता है व महेश की तरह अपने शिष्य में आई बुराईयों का विनाश करता है। उन्होंने बताया की हमें शिक्षक से गुरु की ओर बढ़ना है हमें गुरुत्व का भाव हो जिससे कि शिष्य हमारी ओर आकर्षित हो और हम गुरु का दायित्व निर्माण करते हुए शिष्य को केवल विषय का ज्ञान ही नहीं बल्कि उसके सर्वांगीण विकास में सहायता प्रदान करें। उन्होंने गुरु के दायित्वों के साथ-साथ यह भी कहा कि समाज भी गुरुओं का सम्मान करें तभी समाज सभ्यता और संस्कृति आगे बढ़ेगी। मुख्य वक्ता ने गुरु वंदन का महत्व बताते हुए भारतीय सभ्यता और संस्कृति में गुरु शिष्य परंपरा पर प्रकाश डाला और बताया कि भारत विश्व में एकमात्र देश है जहां गुरु शिष्य परंपरा है और इसी कारण भारत की सभ्यता और संस्कृति निरंतर जारी है। जिला सचिव अशोक सिंह ने आभार व्यक्त किया। संचालन डॉ. प्रभात शर्मा ने किया। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

> ■ 'समाज भी गुरुओं का सम्मान करें तभी समाज सभ्यता और संस्कृति आगे बढ़ेगी'

राजकीय एलबीएस पीजी महाविद्यालय में गुरु वंदन कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

सार-समाचार

दीवार गिरने से चार बकरियों की मौत

दूदू, (निसं) उपखंड के अधीन गांवों में हो रही बरसात के बाद तालाब भरकर लबालब हो गए के साथ ही सड़कों एवं घरों में पानी भर गया से आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ा वही गांव के संपर्क सड़क टूट गए एक गांव में कच्चे मकान की दीवार गिर जाने के साथ ही चार बकरियों की मौत हो गई वहीं दो बाइक सवार बाल बाल बचे बाइक पानी में बेकार चली गई ग्राम पंचायत ममाणा क्षेत्र में सार्वजनिक तालाब भर जाने के बाद स्टेट हाईवे रूपनगर नरेना रोड पर पानी आ जाने के साथ ही घरों एवं दुकानों में पानी भर गया स्टेट हाईवे से गुजरने वाले वाहन चालकों को भी परेशानी का सामना करना पड़ा नीमली से बोकडा वास जाने वाली सड़क पर बनी पुलिया टूट जाने पर दोनों गांवों का संपर्क टूट गया ममाणा से दोबडी जाने वाले सड़क मार्ग पर मुरडिया व मादवलाव तालाब के ओवरफ्लो हो जाने पर घर जलमग्न हो गए सूचना के बाद मौके पर उपखंड अधिकारी योगेश सिंह देवल तहसीलदार मदनलाल परमार ग्राम विकास अधिकारी दीपक शर्मा पहुंचे तथा जेसीबी मशीन एवं मोटर लगाई जाकर पानी की निकासी की व्यवस्था कराई गई मरवा गांव के किशन हरिजन के मकान की कच्ची दीवार गिर जाने पर चार बकरियों की मौत हो गई दूंदू से उदयपुरिया मार्ग पर बने नाले में पानी के तेज बाहर के कारण दो बाइक सवार बाल बाल बच गए लेकिन दोनों बाइक पानी में बहकर चली गई शैलेश्वर महादेव के के जाने वाली सड़क पर बनी पुलिया टूट जाने से शिव भक्तों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

डोडा चूरा बरामद, दो गिरफ्तार

दूदू, (निसं)। स्थानीय थाने की पुलिस ने ऑपरेशन नॉकआउट अभियान के तहत डीएसटी टीम जयपुर ठामीण के साथ कार्रवाई कर दो प्रकरणों में अवैध रूप से ले जा रहे हैं मादक पदार्थ 500 ग्राम डोडा पोस्त 21 किलो 270 ग्राम डोडा छिलका 7 किलो 40 ग्राम डोडा चूरा बरामद कर दो आरोपियों को गिरफ्तार कर काम में लिए गए एक ट्रेलर व अल्टो कार को जप्त कर लिया पुलिस अधीक्षक ग्रामीण जयपुर आनंद शर्मा ने बताया कि 15 जुलाई को अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवलाल बैरवा उप पुलिस अधीक्षक दीपक खंडेलवाल एवं थाना निरीक्षक मुकेश कुमार खराडिया के नेतृत्व में राष्ट्रीय राजमार्ग 48 पर कार्रवाई के दौरान पडासोली पुलिया के पास किशनगढ़ से जयपुर की ओर आ रहे हैं एक ट्रेलर को रुकवा कर चेक किया गया तो चालक भानु प्रताप सिंह के पास 500 ठााम डोडा पोस्त पाया गया को बरामद कर लिया साथ ही अजमेर से जयपुर जाने वाली रोड पर सुख सागर होटल 52 मिल पर एक अल्टो कार मे अवैध रूप से चूरा व छिलका बेच रहे हरक चन्द ढाका को गिरफ्तार कर तीन कट्टों में अवैध मादक पदार्थ 21 किलो 270 ठााम डोडा छिलका वह 7 किलो 40 ग्राम डोडा चूरा बरामद कर वाहन को जब्त कर लिया।

पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित

सिकराय,(निसं) अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण छात्रावास गणेशपुरा पर बुधवार को हरियालो राजस्थान व एक पेड़ मां के नाम महाअभियान व पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम को लेकर पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में विधायक विक्रम बंशीवाल ने जांगिड़ ब्राह्मण छात्रावास के पदाधिकारियों व छात्रों के साथ परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम मे भाग लेते हुए पौधारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस दौरान परिसर में छायादार व फलदार सहित विभिन्न प्रजातियों के 101 पौधे लगाएं गये। कार्यक्रम में विधायक विक्रम बंशीवाल का छात्रावास के पदाधिकारियों व जिलाध्यक्ष कैलाश जांगिड़ ने माला व साफा पहनाकर विश्वकर्मा भगवान की प्रतिमा भेटकर स्वागत किया। वहीं पौधारोपण कार्यक्रम को संबोधित करते विधायक विक्रम बंशीवाल ने कहा कि एक पेड़ का संबंध पर्यावरण संरक्षण के साथ कई पीढ़ियों से भी होता है। आज आप के द्वारा लगाएं पौधे के फल व छाया आपकी कई पीढ़ियों को मिलता है। उन्होंने ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा प्रदेश में चलाएं जा रहे पौधारोपण महाअभियान मे प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भागीदारी निभाकर एक पौधा अवश्य लगाना को लेकर अपील की हैं। इस दौरान विधायक विक्रम बंशीवाल ने छात्रावास पर पेड़-पौधे की हरियाली को देखकर प्रसंशा की है। इस दौरान जिला कार्य समिति सदस्य पूरण व्यास,जिलाध्यक्ष कैलाश जांगिड़, रामकिशोर मूर्ति वाले भामाशाह, गिरिराज प्रसाद जांगिड़, गोपाल भांडारेज, कैलाश चंद्र, रमेश श्यालोता , दिनेश रावत जयप्रकाश जांगिड़, सुनील, नरोतम जांगिड़, ज्ञान जी भांकरी, रवि, राहुल, पवन, गौरव, विकास आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम में जाएंगे 4 हजार कार्यकर्ता

टोंक। भारतीय जनता पार्टी जनसेवा संवाद केंद्र पर 17 जुलाई को दादिया में देश के गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के आगमन की तैयारी को लेकर भाजपा जिलाध्यक्ष चंद्रवीर सिंह चौहान की अध्यक्षता में बैठक आयोजित हुई। इस दौरान चौहान ने बताया कि देश के गृह व सहकारिता मंत्री जयपुर के दादिया गांव में सहकार एवं रोजगार उत्सव में शिरकत करेंगे, जिसमें प्रदेशभर से बड़ी संख्या में लोग आएंगे तथा जिले से भी 75 बसों से लगभग 4500 लोग कार्यक्रम में पहुंचेंगे। इसके लिए पार्टी ने सभी विधानसभा प्रभारी एव मंडल स्तर पर एक संयोजक दो सहसंयोक नियुक्त किए है एवं प्रत्येक बस पर भी प्रभारी नियुक्त किए है।। टोंक,देवली, उनियारा, निवाई, पीपलू विधानसभा के कार्यकर्ता की भोजन व्यवस्था बजरी पोस्ट गुन्सी निवाई एवं टोडा मालपुरा के कार्यकर्ताओं की भोजन व्यवस्था चौसला में की गई है। बैठक के पश्चात एक पेड़ मो के नाम अभियान के तहत पौधारोपण किया।

जिला स्तरीय जनसुनवाई कल

कोटपूतली। राज्य सरकार द्वारा जन भावना के अनुरूप पारदर्शी एवं संवेदनशील वातावरण में आमजन की परिवेदनाओं, समस्याओं की सुनवाई एवं त्वरित समाधान के लिये जिला स्तर पर आमजन की परिवेदनाओं के संबंध में जिला स्तरीय जनसुनवाई जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी की अध्यक्षता में आगामी 18 जुलाई को प्रातः 11 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की जाएगी। जनसुनवाई में परिवादियों द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र, राजस्थान सम्पर्क पोर्टल में दर्ज लम्बित प्रकरणों की समीक्षा की जाएगी। गौरतलब है कि 17 जुलाई, गुरुवार को राज्य व जिला स्तर पर आयोजित होने वाले श्सहकार एवं रोजगार उत्सवश के मद्देनजर जनसुवाई का आयोजन गुरुवार के स्थान पर सरकार के निर्देशानुसार 18 जुलाई, शुक्रवार को किया जा रहा है।

नगर परिषद आयुक्त को ज्ञापन सौंपा

टोंक। बगडी निवासी श्रीपाल बलाई ने बुधवार को नगर परिषद आयुक्त को ज्ञापन सौपा, जिसमें उन्होने अपने दो प्लाट इमानुवल स्कूल के पीछे, अनुपम ऑडियों विजय के पास सआदत नूर कामन्डों के पास स्थित को इकरार नामा के जरिये दिनांक 30.12.2009 को अलादीन पुत्र रहमतुल्ला निवासी पुरानी टोक से खरीदना बताया। प्रार्थी ने दोनो प्लाटों पर नीव भरकर बाउण्ड्री वाल करवा रखी है परन्तु दर्शना बैरवा पत्नी कमलेश बैरवा निवासी छावनी द्वारा फर्जी दस्तावेज बनाकर उक्त प्लाटो हडपने की कोशिश में नगर परिषद टोंक मे पटटा बनवाने व भवन निर्माण स्वीकृत हेतु आवेदन किया है। जिसके सम्बन्ध में प्रार्थी ने उक्त ज्ञापन देकर उस आवेदन को निरस्त करने की मांग की है।

स्थापना दिवस मनाया

टोंक। नेशनल हाईव स्थित रामाज रिसोर्ट पर हिंदू सेवा मंच के पांचवे स्थापना दिवस को अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल के नेतृत्व में मनाया गया, जिसके अन्तर्गत गाय को चारा खिलाया गया तथा गरीबों को केले का वितरण व शिव जलाभिषेक कर विशेष पूजन का आयोजन कर देश प्रदेश की समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की गई। इस दौरान हिन्दू सेवा मंच के कार्यकारिणी सदस्य का सम्मान समारोह किया गया। मोहित टेलर ने बताया कि कार्यक्रम में हिन्दू सेवा मंच के अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल, राज कुलदीप सिंह, डॉ संजीव कुमार सिंघल, प्रदीप खुराना, पंडित एस के भट्ट, परितोष शर्मा रूपेश खंडेलवाल सहित आदि अतिथि उपस्थित रहे।

विधायक पटेल का आभार जताया

कोटपूतली। भाजपा जयपुर देहात उत्तर कार्यकारिणी में नवनियुक्त पदाधिकारियों को विधायक निवास पर बुधवार को विधायक हंसराज पटेल द्वारा बधाई एवं शुभकामनायें दी गई। इस मौके पर पटेल ने नवीन जिम्मेदारी मिलने पर नवनियुक्त पदाधिकारियों को मिठाई खिलाकर शुभकामनायें दी। वहीं नवनियुक्त पदाधिकारियों ने विधायक पटेल का आभार व्यक्त किया। इस दौरान पूर्व प्रधान बनवारी लाल यादव, पूर्व चेयरमैन एड. महेन्द्र कुमार सैनी, भाजपा जयपुर देहात उत्तर जिला उपाध्यक्ष जयराम सिंह गुर्जर, जिला मंत्री सुषमा सैनी, नगर मंडल अध्यक्ष अरुण सैनी, युवा मोर्चा जिला संयोजक एड. कमल कसाना, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष कमल सैनी, पूर्व मंडल अध्यक्ष राजवीर यादव, पश्चिम मंडल अध्यक्ष सीताराम शर्मा, सरपंच कैलाश स्वामी, सिद्धार्थ टोरडा, लालाराम प्रधान, एड. महेश सराधना आदि मौजूद रहे।

अबीमा फोस्केम फैक्ट्री पर कृषि विभाग का छापा

उदयपुर। कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा के निर्देशन में अमानक खाद बनाने वाली फैक्ट्रियों पर जारी सख्त कार्रवाई के तहत बुधवार को उदयपुर के मादड़ी स्थित अबीमा फोस्केम प्राइवेट लिमिटेड फैक्ट्री पर कृषि विभाग की टीम ने छापा मारा। इस दौरान फैक्ट्री में खाद निर्माण और कच्चे माल से जुड़ी कई गंभीर अनियमितताएं सामने आईं।

जानकारी के अनुसार विभाग ने मौके पर मौजूद एक खाद के लॉट को सीज किया जिसकी कंटेंट क्वालिटी 14.5 प्रतिशत होनी चाहिए थी लेकिन प्रयोगशाला जांच में यह मात्र 1 प्रतिशत ही पाई गई। यह मानक से बहुत कम है और किसानों की उपज पर गंभीर असर डालने वाला है।विभागीय अधिकारियों ने आशंका जताई है कि इतनी कम गुणवत्ता वाली खाद आखिर क्यों बनाई गई और क्या यह अमानक खाद किसानों के खेतों तक पहुंच चुकी है, यदि ऐसा हुआ है तो यह एक बड़ा घोटाला बन सकता है और किसानों के साथ बड़ा विश्वासघात होगा। फैक्ट्री द्वारा खाद निर्माण के लिए जो कच्चा माल खरीदा गया था।

डंपिंग यार्ड के पास फैल रहे कचरे से परेशान ग्रामीणों ने रास्ता रोका

भीलवाड़ा। जिले की शाहपुरा नगर पालिका द्वारा बनाए गए डंपिंग यार्ड के पास फैल रहे कचरे से परेशान ग्रामीणों ने माता जी का खेड़ा के पास मुख्य सड़क को जाम कर दिया। विद्यालय के ताले लगा दिए, सूचना मिलते ही शाहपुरा से थानाधिकारी बालकृष्ण मौके पर पहुंचे तथा ग्रामीणों को समझाइश कर जाम खुलाया।

- **शाहपुरा नगर पालिका द्वारा बनाए गए डंपिंग यार्ड के पास फैल रहे कचरे से परेशान ग्रामीणों ने माता जी का खेड़ा के पास सड़क को जाम किया**

डंपिंग यार्ड के पास फैल रहे कचरे से परेशान ग्रामीणों ने जाम लगा कर प्रदर्शन किया।

आपको बताते हैं कि नगर पालिका द्वारा माताजी के खेडा के पास डंपिंग स्टेशन बनाया हुआ है लेकिन उसको काम में नहीं लिया जा रहा है बाहर कचरा डाला जा रहा है पास में उच्च माध्यमिक विद्यालय संचालित हो रहा है जिससे विद्यालय के छात्र-छात्राये परेशान हो रहे हैं, ठाामीणों द्वारा विभाग को अवगत कराने के बाद भी सुनवाई नहीं होने से, विद्यालय के तालेबंदी कर रोड जाम किया गया। जाम में कुछ देर के लिए स्कूल बसें भी फसी रही।

झरने पर सेल्फी लेते समय तेज बहाव में बहने से मौत

बून्दी (निसं)। बूंदी जिले में इन दिनों तेज बारिश का दौर जारी है जिसके चलते जिले के नदी नाले बांध झरने उफान पर है। बुधवार को भीमलत महादेव झरने पर सेल्फी लेते समय तेज बहाव में बहे छात्र की मौत हो गई। वह सुबह ही अपने 4 दोस्तों के साथ झरने पर पहुंचा था। हादसे की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची सदर थाना पुलिस, और सिविल डिफेंस की टीम ने छात्र के शव को रेस्क्यू कर बाहर निकाला। जानकारी के अनुसार बुधवार सुबह कोटा से जेईई की तैयारी करने वाले चार दोस्त पिकनिक मनाने भीमलत महादेव पहुंचे थे। जहां झरने पर सेल्फी लेते समय तेज बहाव में बहने व डूबने से मोहम्मद शेख उम्र 19 साल जाति मुस्लमान निवासी बरेली यूपी की मौत हो गई। सूचना पर सदर थाना पुलिस मौके पर पहुची और थाना अधिकारी रमेश आर्य के नेतृत्व में सिविल डिफेंस के जवानों ने 8 घंटे की मशक्कत के बाद युवक के शव को बाहर निकाला। युवक के परिजनों को हादसे की सूचना दे दी गई है परिजन आने के बाद युवक के शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

चार सौ से अधिक गिरफ्तार

उदयपुर। शहर पुलिस ने बुधवार तडके जिले में आठ सौ से अधिक स्थानों पर दबीश देकर चार सौ से अधिक अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा, गोपाल स्वरूप मेवाड़ा,अंजना सुखवाल के निर्देशन में जिले के सभी पुलिस उप अधीक्षकों के सुपरविजन में सभी थानाधिकारियों के नेतृत्व में कार्रवाई की।

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर
टोडरमल लेन, सिविल लाईन्स, अजमेर, Email :- ajmerada@gmail.com,
Website :- www.rajasthan.gov.in/ada, Tel.No. :- 0145-2627748-2627749

क्रमांक :- अविप्रा/प.2/तकनीकी/2025-26/राजकाज 16536581 दिनांक :- 15/07/2025

ई-निविदा सूचना संख्या 18/2025-26

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर की ओर से जारी विभिन्न कार्यों की अनुमानित लागत राशि 90.71 लाख की ई–निविदा दिनांक 28.07.2025 सांय 06:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट (http://eproc.rajasthan.gov.in) एवं (http://sppp.raj.nic.in) http://www.urban.rajasthan.gov.in/ada पर देखा जा सकता है।

UBN No. :- AJD2526WSOB00046 - 49

अधिशाषी अभियन्ता
अजमेर विकास प्राधिकरण

राज.संवाद/सी/25/6308

नगरपालिका मण्डल, रतनगढ़ (राजस्थान)

क्रमांक–निर्माण शाखा/निविदा/2025/1389–91 दिनांक : 10.07.2025

निविदा सूचना

नगर पालिका रतनगढ़ की और से नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजिकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र मे ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से ऑन लाईन निविदाऐ आमंत्रित की जाती है जो दिनांक 11.07.2025 से दिनांक 20.07.2025 शाम 6 बजे तक अनुसार डाऊनलोड तथा अपलोड एंव दिनांक 21.06.2025 को सांय 5 बजे खोली जायेगी। समस्त कार्यो के लिए धरोहर राशि कार्य की अनुमानित लागत पर नगर पालिका रतनगढ़ में पंजिकृत सक्षम संवेदको द्वारा 1/2 प्रतिशत राशि एवं अन्य विभागो मे पंजिकृत सक्षम संवेदको द्वारा 2 प्रतिशत राशि का डी.डी. अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका रतनगढ़ के नाम व रूपये 500/– का चालान "M.D. RISL Jaipur" के नाम जयपुर में देय से ऑन लाईन निविदा खोलने से पूर्व नगर पालिका रतनगढ़ में प्रस्तुत करना होगा।

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट www.sppp.raj.nic.in http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

NIB code- DLB2526A3354

UBN:- DLB2526WSOB10468, DLB2526WSOB10470, DLB2526WSOB10471, DLB2526WSOB10475, DLB2526WSOB10476, DLB2526WSOB10477, DLB2526WSOB10478, DLB2526WSOB10479, DLB2526WSOB10480, DLB2526WSOB10481, DLB2526WSOB10482, DLB2526WSOB10483, DLB2526WSOB10484, DLB2526WSOB10485, DLB2526WSOB10486, DLB2526WSOB10487, DLB2526WSOB10488, DLB2526WSOB10489, DLB2526WSOB10490, DLB2526WSOB10491, DLB2526WSOB10492, DLB2526WSOB10493, DLB2526WSOB10494, DLB2526WSOB10495, DLB2526WSOB10496, DLB2526WSOB10497, DLB2526WSOB10498, DLB2526WSOB10499, DLB2526WSOB10501, DLB2526WSOB10502, DLB2526WSOB10503

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका रतनगढ

राज.संवाद/सी/25/6301

अलवर में युवक का अपहरण के 4 आरोपी गिरफ्तार

तालेड़ा में नाकाबंदी कर बोलेरो समेत पकड़ा

बूंदी। जिले की तालेड़ा थाना पुलिस ने अलवर में युवक का अपहरण करने के 4 आरोपियों को नाकाबंदी के दौरान गिरफ्तार कर बोलेरो जब्त की है। अलवर के विजय मंदिर थाना क्षेत्र से हुए अपहरण मामले में बूंदी पुलिस ने सफलता हासिल की है। तालेड़ा थाना पुलिस ने नाकाबंदी के दौरान बोलेरो में सवार अपहरण के चार आरोपियों को बापर्दा गिरफ्तार किया है।

बूंदी के जिला पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र कुमार मीणा के अनुसार, थानाधिकारी अजीत बगडोलिया के नेतृत्व में पुलिस टीम ने कार्रवाई को अंजाम दिया। अपहरण की सूचना मिलते ही जिले के सभी थानों को नाकाबंदी के निर्देश दिए गए थे। उन्होंने बताया कि मामला 14 जुलाई 2025 का है, जब बालाडेहरा निवासी हंसराज पुत्र शेरसिंह का अलवर से अपहरण किया गया था। इस संबंध में विजय मंदिर थाने में मुकदमा नंबर 135/2025 दर्ज किया गया था।पुलिस ने आरोपियों की गिरफ्तारी के साथ उनकी बोलेरो को भी जब्त कर लिया है। सभी आरोपियों को विजय मंदिर थाना पुलिस के सुपुर्द कर दिया है।

बूंदी जिले की तालेड़ा थाना पुलिस ने अलवर में युवक का अपहरण करने के 4 आरोपियों को नाकाबंदी के दौरान गिरफ्तार किया।

साइबर ठगी का आरोपी गिरफ्तार

उदयपुर। साइबर थाना पुलिस ने कार्यवाही करते हुए ठगी के मामले में दो साल से फरार आरोपी को गिरफ्तार किया। प्रकरण के अनुसार पीडिता कविता डांगी पत्नी बंशीलाल डांगी निवासी गुमानपुरा वल्लभनगर ने साईबर पुलिस थाने में रिपोट्र दी। कि खराब होने के कारण मैने अपना मोबाईल मय सीम ठीक कराने के लिए रितश्ेदार को दिया। जिसने दुकान पर ठीक करवाने के लिए रखा। उक्त सीम नम्बर बैंक खाते से लिंक है जिससे मैं नैट बैंकिग का उपयोगी लेती थी। जिस दिन मोबाईल ठीक करवाने दिया उसके कुछ दिन बाद मेरे खाते से 1 लाख 37 हजार रूपये किसी ने निकाल लिए। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा के सुपरविजन में साईबर थानाधिकारी रामनिवास विश्नोई के नेतृत्व में एएसआई राजुदेवी, रज्जाक मो. मय टीम ने अनुसंधान कर खुलासा करते हुए हुक्मीचंद पुत्र डालूजी निवासी कूका हौटल के पास सालेरा कला डबोक को पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया।

फैक्ट्रियों से निकलने वाली गर्द गांव के लिए मुसीबत बनी

बीकानेर। खारा औद्योगिक क्षेत्र में पीओपी फैक्ट्रियों से निकलने वाली गर्द एक बार फिर गांव के लिए मुसीबत बन गई है। एनजीटी के निर्देश पर हाल ही में जयपुर से प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड का दल जांच के लिए आया था, लेकिन बारिश होने के कारण जांच पूरी नहीं हो सकी।

इधर बोर्ड ने लापरवाही बरतने वाली फैक्ट्रियों को बंद करने की तैयारी कर ली है। खारा औद्योगिक क्षेत्र में पीओपी की 120 से अधिक इंडस्ट्रियां हैं। यहां पर प्रदूषण का मानक पीएम 10 से अधिक यानी खतरनाक स्तर पर पहुंचने के कारण सभी फैक्ट्रियों में डस्ट कलेक्टर, सेटलिंग चैंबर और वाटर स्क्रबर लगाए गए थे। कुछ समय तक सब सही चले, लेकिन अब वापस पहले वाले हालात पैदा हो गए हैं। काफी फैक्ट्रियों ने यह सिस्टम बंद कर दिए हैं। फैक्ट्रियां चलने पर अब धुआं चिमनी के बजाय नीचे से ही बाईपास हो रहा है, जिसमें से काफी गर्द निकल रही है। इस गर्द के कारण आसपास के वातावरण और गांव में वायु प्रदूषण फिर से फैलने लगा है। खारा गांव के ग्रामीणों ने बताया कि जयपुर से आए दल ने जांच के बाद कहा था कि फैक्ट्री संचालक सिस्टम फॉलो नहीं कर रहे हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि बोर्ड के रीजनल कार्यालय की ढिलाई के कारण फैक्ट्री संचालकों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है। प्रदूषण का मामला फैक्ट्रियों में काम करने वाले श्रमिकों पर डालकर इतिश्री की जा रही है। गौरतलब है कि पिछले दिनों प्रदूषण मानकों पर खरा नहीं उतरने पर कुल 20 फैक्ट्रियां बंद कर दी गई थीं। बाद में पांच वापस शुरू हो गईं। शेष बंद पड़ी हैं या गांवों में शिफ्ट हो गई हैं। प्रदूषण स्तर की मार्च में अंतिम बार जांच हुई थी, जिसमें 150 से 200 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर बीच पाया गया था, लेकिन मानसून में वापस बढ़ गया है। उसके बाद सदि्यों में स्थिति और भी खराब हो जाएगी। खारा में पीओपी का प्रदूषण हवा में उड़ता हुआ। एनजीटी के निर्देश पर शुरू हुई जांच खारा, करणी और बीछवाल औद्योगिक क्षेत्रों में वायु और जल प्रदूषण का मामला एनजीटी में पहुंचने के बाद इसकी जांच शुरू हो गई है।

कार्यालय नगर निगम, अजमेर
पृथ्वीराज मार्ग, अजमेर (राजस्थान) फोन नं. 0145–2429971, 2429920

क्रमांक :–MEW/2025-26/693 दिनांक:– 11.07.2025

:: ई–निविदा सूचना संख्या 26/2025–26 ::

नगर निगम अजमेर की ओर से नगर निगम अजमेर एवं राजकीय विभाग में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको जो कि केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, डाक एवं दूरसंचार, रेलवे या अन्य राज्य सरकार, केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनो जो राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो (निविदा पात्रता पंजीकरण के नियमो के अनुसार मान्य) जो निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से निम्न कार्यो की ऑनलाईन ईनिविदा आमंत्रित की जाती है।

निविदा कार्यो की कुल लागत	राशि 37.20 लाख (02 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड/अपलोड करने की अवधि	Date 12.07.25 से 21.07.25 को 6:00 PM तक
Technical निविदा खोलने की तिथि व समय	Date 22.07.25 को 11:00 AM पर
Financial निविदा खोलने की तिथि	सफलतम निविदादाता को उचित माध्यम के द्वारा सूचित कर दिया जावेगा।

विस्तृत विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in एवं http:/www.eproc.rajasthan.gov.in पर एवं नगर निगम के निर्माण विभाग के कार्यालय में भी देखी जा सकती है।

Nib Code :-ANN2526A0069

UBN NO. ANN2526SLOB00079, ANN2526SLOB00080

अधिशाषी अभियन्ता
नगर निगम अजमेर

राज.संवाद/सी/25/6266

AGRICULTURAL RESEARCH SUB STATION
(S. K. Rajasthan Agricultural University- Bikaner),
HANUMANGARH TOWN-335513

No. :- ARSS/HMO/2025/78 - 82 Dated :- 14/07/2025

खुली निविदा

कृषि अनुसंधान उप केन्द्र हनुमानगढ टाउन पर विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं व फार्म पर कृषि से सम्बधित कार्य ठेका पद्धति द्वारा करवाने हेतु जानकारी रखने वाले ठेकेदारों से खुली मोहरबन्द्ध निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्य की लगभग 600000/–रू. है के निविदा फार्म कार्यालय में 500/–(पॉच सौ रू. मात्र) नगद/डीडी जो प्रभारी अधिकारी, कृषि अनुसंधान उप केन्द्र, हनुमानगढ टाउन के पक्ष में देय होगी, जमा करवाकर दिनांक 21.07.2025 सें 28.07.2025 समय 11.00 बजे तक प्राप्त कर सकते है, भरे हुये सीलबन्द निविदा फार्म कार्यालय में दिनांक 28.07.2025 समय 12.00 बजे तक धरोहर राशि 12000/–रू. का डीडी जो कि प्रभारी अधिकारी, कृषि अनुसंधान उप केन्द्र, हनुमानगढ टाउन के पक्ष में देय हो संलग्न कर कार्यालय में जमा कराये जा सकते है, जो उसी दिन दोपहर 2.00 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी। निविदा को बिनाकारण बताये निरस्त करने का अधिकार अधौहस्ताक्षरकर्ता के पास सुरक्षित रहेगा। निविदा कारणवश दिनांक 28.07.2025 को नहीं खोली जाती है तो यह निविदा दिनांक 29/07/2025 को 2.00 बजे खोली जावेगी। निविदा की शर्ते एवं विभिन्न कृषि कार्यो का विवरण निविदा फार्म के साथ संलग्न है।

निविदा प्रपत्र वेवसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in तथा www.raubikaner.org पर देखा तथा डाउन लोड किया जा सकता है। निविदा को सम्पूर्ण अथवा किसी भी भाग को बिना कारण बताये स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करनें का पूर्ण अधिकार, प्रभारी अधिकारी कृषि अनुसंधान उप केन्द्र, हनुमानगढ टाउन को होगा।

UBN No. : SKA2526WSOB00046

राज.संवाद/सी/25/6311 अधिष्ठाता

नगर विकास न्यास, पाली
डाक बंगला परिसर, पाली, फोन नं. 02932-223222, ई मेल – uitpali@gmail.com

क्रमांक :- न्या.पा./निविदा/2025/राजकाज 16551449 दिनांक :- 16/07/2025

ई-निविदा सूचना संख्या - 26/2025-26

नगर विकास न्यास, पाली की ओर से न्यास/राजकीय विभाग से नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्योरमेन्ट प्रक्रिया से सिविल कार्यो हेतु ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। इन कार्यों की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा शर्तें आदि सम्पूर्ण विवरण https://eproc.rajasthan.gov.in, sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है तथा न्यास कार्यालय, पाली में कार्य दिवस के दौरान देखी जा सकती है। यूबीएन नं. :– ITP2526WSOB00032

राज.संवाद/सी/25/6322 अधिशाषी अभियन्ता

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड वल्लभनगर

क्रमांक-496 दिनांक-07.07.2025

"निविदा संशोधन सूचना-2"

इस कार्यालय द्वारा जारी निविदा सूचना संख्या 03/2025-26 के क्रमांक 399 दिनांक 12.06.2025 द्वारा जारी की गयी थी जिसमें निम्नानुसार संशोधन किया जाता है।

	पूर्व में प्रकाशित	संशोधित
1	ऑनलाईन निविदा मिलने की दिनांक 18.06.2025 से 08.07.2025 सायं 6.00 बजे तक	ऑनलाईन निविदा मिलने की दिनांक 18.07.2025 सायं 6.00 बजे तक की जाती है।
2	ऑनलाईन निविदा खोलने की दिनांक 09.07.2025 सायं 4.00 बजे	ऑनलाईन निविदा खोलने की दिनांक 21.07.2025 सायं 4.00 बजे की जाती है।

निविदा की अन्य शर्ते यथावत रहेगी।

(अचल गुप्ता)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड वल्लभनगर

DIPR/C/9713/2025

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर
अध्यापक कल्याण कोष न्यास छात्रवृत्ति सूचना वर्ष 2025

अध्यापक कल्याण कोष न्यास द्वारा प्रतिवर्ष सेवारत शिक्षक/शिक्षिका के आश्रितों को तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा यथा–मेडिकल, आयुर्वेद, इंजीनियरिंग, वेट्रीनरी, बी.एड., एम.एड., एम.बी.ए., एल.एल.बी., पी.एच.डी., पॉलीटेक्निक, एस.टी.सी., कम्प्यूटर साइंस, एम.सी.ए. तथा महाविद्यालय पाठ्यक्रमों में नियमित अध्ययन करने हेतु छात्रवृत्ति दी जाती है। न्यास द्वारा वर्ष 2025 की छात्रवृत्ति हेतु निम्नानुसार ऑनलाईन आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं :–

1- बोर्ड की सैकण्डरी/सी.सैकण्डरी स्तर की उत्तरपुस्तिका जाँचने हेतु परीक्षक के रूप में पंजीकृत सेवारत शिक्षक/शिक्षिका जो कम से कम 05 वर्ष से अध्यापन कार्य में संलग्न है तथा कम से कम 02 वर्ष तक सैकण्डरी/प्रावेशिका/उच्च माध्यमिक/वरिष्ठ उपाध्याय कक्षाओं से संबंधित हो अथवा रहे हों एवं साथ ही बोर्ड की उत्तरपुस्तिका जाँचने हेतु कम से कम तीन बार परीक्षक का कार्य किया हो, के नियमित अध्ययनरत पुत्र/पुत्री पत्नी/पति ही 10 माह के लिए छात्रवृत्ति हेतु पात्र होंगे।
2- सेवारत शिक्षक/शिक्षिका एवं उसके परिवार की समस्त संसाधनों से वार्षिक आय रूपये 14,00,000/– से अधिक नहीं होनी चाहिए।
3- सेवारत शिक्षक/शिक्षिका के परिवार में अधिकतम दो आश्रितों को छात्रवृत्ति देय होगी, किन्तु एक सत्र में केवल एक ही आश्रित की छात्रवृत्ति हेतु आवेदन प्रस्तुत किया जा सकेगा। एक सत्र में एक से अधिक आवेदन करने पर समस्त आवेदन पत्र निरस्त कर दिए जायेगें।
4- छात्रवृति एक सत्र हेतु ही दी जाएगी। अगले सत्र पुनः आवेदन करना होगा।
5- बोर्ड वेबसाईट www.rajeduboard.rajasthan.gov.in पर TWF Scholarship लिंक पर अपनी Employee ID व मोबाईल नम्बर से लॉगिन कर अंतिम तिथि 18.08.2025 तक ऑनलाईन आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं।
6- मोबाईल नम्बर दर्ज नहीं होने की दशा में कार्यालय की हेल्पलाईन 0145–2632866, 2632867, 2632868 पर मोबाईल नम्बर सूचित कर अंकित करा सकते है।
7- विस्तृत जानकारी बोर्ड की वेबसाईट www.rajeduboard.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

निर्देशानुसार ऑनलाईन आवेदन करने के उपरान्त अंतिम रूप से मुद्रित होकर प्राप्त आवेदन पत्र (Hard Copy) मय संलग्नकों के दिनांक 10.09.2025 तक इस कार्यालय में अवश्य पहुँच जाने चाहिए। उक्त तिथि के पश्चात प्राप्त आवेदन पर किसी प्रकार का विचार नहीं किया जाएगा तथा उसे निरस्त कर दिया जाएगा।

सचिव

कार्यालय नगर पालिका निवाई

क्रमांक : न.पा.नि./स्टोर/2025–26/4544 दिनांक :–09.07.2025

ई-बोली सूचना संख्या :– 17/2025–26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्न कार्य के लिए राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के बोलीदाताओ हेतु निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्युरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑन–लाईन बोली आमंत्रित की जाती है। बोली फार्म एवं ई–बोली से सम्बन्धित विवरण व शर्ते वेब साईट www.sppp.rajasthan.gov.in व http://www.eproc.rajsthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

निविदा का कार्य	:	NIB Code:- DLB2526A3578 (कुल 01 कार्य)
Unique Bid Number		DLB2526GLOB11371
निविदा की कुल लागत	:	Rs 24.90 लाख रुपये
निविदा जारी करने की दिनाक	:	दिनांक 17.07.2025
निविदा दस्तावेजो को डाउनलोड करने की शुरूआती दिनांक व समय	:	दिनांक 17.07.2025 को 11:00 बजे से
ऑन लाईन निविदा जमा कराने की अन्तिम दिनांक	:	दिनांक 28.07.2025 सांय 6:00 बजे तक
भौतिक रूप से कार्यालय में बोली शुल्क व धरोहर राशि जमा कराने की दिनांक		29.07.2025 को अपराह 12:00 बजे तक नगर पालिका निवाई कार्यालय में
ऑनलाईन तकनीकी बिड खोलने की दिनांक	:	30.07.2025 को अपराह 12:00 बजे
वित्तीय बिड खोलने की दिनांक व समय	:	Will be Intimated latter to the Technically qualified Bidders
बिड की वैधता समयावधि		120 Day

अध्यक्ष अधिशाषी अधिकारी

राज.संवाद/सी/25/6284

बैंक अधिकारियों को नोटिस

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने कोटक महिंद्रा बैंक लिमिटेड के प्रबंध निदेशक ए. वासवानी एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष राव साहेब कांगणे को नोटिस जारी किया है। कोर्ट ने स्पष्ट करने को कहा है कि उनके खिलाफ अदालत की अवमानना की कार्यवाही क्यों न कि जाए। यह नोटिस बैंक की ओर से एक पूर्व कर्मचारी की सेवा बहाली से संबंधित आदेश की अवहेलना के आरोप में जारी किया गया है। मामला बैंक के जोधपुर शाखा में वरिष्ठ प्रबंधक के पद पर कार्यरत रहे अरज शर्मा से जुड़ा है। शर्मा की सेवा जनवरी 2022 में बिना किसी अनुशासनात्मक जांच के समाप्त कर दी गई थी। शर्मा ने यह आदेश राजस्थान दुकान एवं वाणिज्यिक प्रतिष्ठान अधिनियम, 1958 के तहत चुनौती दी थी। उनके वकील सिद्धार्थ टाटिया के माध्यम से की गई पैरवी के बाद, सक्षम प्राधिकारी ने नवंबर 2022 में सेवा समाप्ति आदेश को रद्द करते हुए उन्हें समस्त प्रतिफल लाभों सहित पुनः बहाल करने का आदेश दिया। बैंक द्वारा इस आदेश को चुनौती देते राजस्थान हाईकोर्ट में रिट याचिका दर्ज करू गई। लेकिन, हाईकोर्ट ने नवंबर 2023 में उक्त याचिका खारिज कर सेवा बहाली आदेश को यथावत रखते हुए तत्काल अनुपालना के निर्देश दिए थे।

दिव्यांगजन के कल्याण के लिए राज्य सरकार तत्पर : दिया कुमारी

अजमेर। राजस्थान महिला कल्याण मण्डल, चाचियावास के स्वर्ण जयन्ती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करते हुए उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने दिव्यांगजन के कल्याण और विकास के लिए राज्य सरकार के द्वारा हर स्तर पर कार्य करने की बात कही।

- **राजस्थान महिला कल्याण मण्डल, चाचियावास का स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित**

राजस्थान महिला कल्याण मण्डल की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर संस्था परिसर में आयोजित स्वर्ण जयन्ती समारोह का उद्घाटन उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी, केबिनेट मंत्री सुरेश सिंह रावत, देहात जिलाध्यक्ष भाजपा जीतमल प्रजापत, शहर भाजपा अध्यक्ष रमेश सोनी, उपमहापौर नीरज जैन, प्रो जगदीश जाधव, संस्था निदेशक राकेश कुमार कौशिक, सचिव एवं मुख्यकार्यकारी क्षमा आर कौशिक ने संयुक्त रूप से की। कौशिक दम्पति ने दिया कुमारी सहित सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए संस्था की पचास वर्षों की स्वर्णिम यात्रा, संस्था के कार्यक्रमों एवं भविष्य की संभावनाओं से अवगत कराया।

समारोह के दौरान उप मुख्यमंत्री के द्वारा संस्था के स्वर्ण जयन्ती लोगो का अनावरण, पचास वर्ष विकास यात्रा की फोटोग्राफ की पुस्तिका का विमोचन करते हुए संस्था डोक्यूमेन्ट्री को रीलीज किया। पचास वर्ष पूर्ण होने पर संस्था के सहयोग से अपना स्वरोजगार विकसित करने वाली स्वयं सहायता समूह की सदस्य 50 महिलाओं को नारी उद्यम गौरव से सम्मानित किया गया। 20 दिव्यांगों को स्वरोजगार विकसित करने के लिए दस-दस हजार के चेक वितरित किए गए तथा संस्था से प्रशिक्षण प्राप्त कर बागवानी, ऑफिस सहायक आदि क्षेत्र में रोजगार करने वाले दिव्यांगजन को कर्मवीर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए केबिनेट मंत्री सुरेश सिंह रावत ने कहा कि वे दिव्यांगजन के कल्याण और विकास के लिए सदैव तत्पर रहते हुए सदैव संस्था के साथ खड़े रहेंगे। रावत ने संस्था के द्वारा किए जा रहे कार्य को उनके विधानसभा क्षेत्र में योगदान के रूप में बताया तथा कहा कि ये उनके लिए सौभाग्य की बात है कि उनके क्षेत्र में इस तरह की संस्था कार्यरत है।

उपमुख्य मंत्री दिया कुमारी जी कार्यक्रम में शिरकत करने से पहले संस्था परिसर स्थित शिव सांई धाम में पूर्जा अर्चना की एवं संस्थापक सागरमल कौशिक की मूर्ति पे माल्यार्पण किया। संस्था परिसर का विजिट करते हुए मीनू स्कूल, सेन्सरी पार्क, दक्ष फ्लोरा नर्सरी आदि के बारे में विस्तृत जानकारी लेते हुए दिव्यांगजन के लिए किए जा रहे कार्यों व गतिविधियों का अवलोकन किया। मीनू स्कूल की बाल संसद के बच्चों से मुलाकात कर शिक्षण प्रशिक्षण के बारे में चर्चा की एवं स्वरोजगार विकसित करने वाली स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्यों से रू-ब-रू होते हुए उन्हें निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए दिया कुमारी ने कहा कि संस्था दिव्यांगजन के लिए वास्तविक रूप से धरातल पर कार्य कर रही है, इसी का परिणाम है कि आज संस्था ने अपने कार्य के 50 वर्ष पूर्ण किए है।

कृषि महाविद्यालय, हनुमानगढ़
स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)
E-mail : coahmg@raubikaner.org, Phone: 01552-294230, Mobile: 6377575773

No. :- F.( )/COA/HMO/2025-26/167 Dated :- 14/07/2025

खुली निविदा

कृषि महाविद्यालय, हनुमानगढ पर विभिन्न कार्यालय एवं फिल्ड से सम्बधित कार्य ठेका पद्धति द्वारा करवाने हेतु जानकारी रखनें वाले ठेकेदारों से खुली मोहरबन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्य की लागत लगभग 600000/–रू. है के निविदा फार्म कार्यालय में 500/–(पॉच सौ रू. मात्र) नगद /डीडी जो अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, हनुमानगढ के पक्ष में देय होगी, जमा करवाकर दिनांक 21.07.2025 से 28.07.2025 समय 11.00 बजे तक प्राप्त कर सकते है, भरे हुये सीलबन्द निविदा फार्म कार्यालय में दिनांक 28/07/2025 समय 01.00 बजे तक धरोहर राशि 12000/– रू. का डीडी जो कि अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, हनुमानगढ के पक्ष में देय हो संलग्न कर कार्यालय में जमा कराये जा सकते है, जो उसी दिन दोपहर 3.00 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी। निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करनें का अधिकार अधोहस्ताक्षरकर्ता के पास सुरक्षित रहेगा। निविदा कारणवश दिनांक 28.07.2025 को नहीं खोली जाती है तो यह निविदा दिनांक 29.07.2025 को 3.00 बजे खोली जावेगी। निविदा की शर्ते एवं विभिन्न कृषि कार्यो का विवरण निविदा फार्म के साथ संलग्न है।

निविदा प्रपत्र वेवसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in तथा www.raubikaner.org पर देखा तथा डाउनलोड किया जा सकता है। निविदा को सम्पूर्ण अथवा किसी भी भागको बिना कारण बताये स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करनें का पूर्ण अधिकार, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, हनुमानगढ़ टाउन को होगा।

UBN No. : SKA2526WSOB00045

राज.संवाद/सी/25/6310 अधिष्ठाता

हिण्डौन में भाजपा का वन एवं पर्यावरण अभियान शुरू

हिण्डौन सिटी। भारतीय जनता पार्टी शहर मण्डल हिन्डोन द्वारा बाबा शंकर पैलेस में राष्ट्रव्यापी "वन एवं पर्यावरण अभियान" के तहत एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला कार्यक्रम संयोजक महेंद्र मीना और मुख्य वक्ता विभान्शु मोदी ने कार्यकर्ताओं को अभियान की विस्तृत जानकारी दी।

मण्डल महामंत्री ओमप्रकाश गुप्ता और कार्यक्रम संयोजक भूपेंद्र गुर्जर ने बताया कि "एक पेड़ मां के नाम" अभियान के तहत हिन्डोन शहर में 5 अगस्त तक 3,000 पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। प्रत्येक बूथ पर एक संयोजक और पालक नियुक्त कर 50-50 पौधे लगाए जाएंगे। मण्डल अध्यक्ष बबली चतुर्वेदी और संयोजक भूपेंद्र गुर्जर ने कार्यकर्ताओं को पौधे वितरित किए, जिन्हें सभी कार्यकर्ता इस अभियान के तहत रोपेंगे। अभियान की शुरुआत वर्धमान नगर बूथ पर 50 पौधे लगाकर की गई। मण्डल महामंत्री गुप्ता ने बताया कि 17 जुलाई को जयपुर में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कार्यक्रम में हिन्डोन शहर से मण्डल अध्यक्ष बबली चतुर्वेदी के नेतृत्व में सैकडों भाजपा कार्यकर्ता बसों और निजी वाहनों से जयपुर रवाना होंगे। कार्यशाला में जिला संयोजक महेंद्र मीना, जिला महामंत्री दिलीप गुप्ता, जिला प्रवक्ता डॉ. हेमलता, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष लज्जा रानी, अल्पसंख्यक मोर्चा जिलाध्यक्ष अल्लानूर, ललित शर्मा, हिमांशु मोदी, सम्पत कोली, उपाध्यक्ष गजेंद्र सोलंकी, कोषाध्यक्ष सोन्टू गोयल, महामंत्री लाडम, चंद्रप्रकाश, गौरव शर्मा, प्रतिपक्ष नेता दिनेश सैनी, पार्षद राहुल हरसाना, ज्योति सहारिया, सचिन बैसला, गिर्राज मित्तल, राजीव सहारिया सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

हिण्डौन सिटी में 5 अगस्त तक 3 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है।

'वर्षा के दौरान अधिकारी सक्रिय रहकर कार्य करे'

करौली। करौली-धौलपुर सांसद भजनलाल जाटव ने कहा कि वर्षा के मौसम को देखते हुए अधिकारी जलभराव वाले स्थानों का चिन्हित कर किसी भी स्थिति से निपटने के लिए कंटीजेंसी प्लान के अनुसार सक्रिय रहकर कार्य करें। जिससे आमजन को किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़े। सांसद भजनलाल जाटव बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक में अधिकारियों को संबोधित करते हुए बोल रहे थे। उन्होंने बताया कि वन क्षेत्र में हरियालो राजस्थान के तहत जिले में 1200 हैक्टेयर क्षेत्र में 2 लाख 55 लाख पौधे लगाये गये है। वहीं वन क्षेत्र से विस्थापित किये जाने वाले परिवारों को राहत दिलाने के लिए आवश्यक प्रस्ताव सक्षम स्तर को भिजवाने के लिए डीएफओ को निर्देशित किया गया है। उन्होंने मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी गोपाल लाल मीणा को निर्देशित करते हुए कहा कि जिन विद्यालयों में शौचालय अभी तक निर्मित नहीं है।

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण, राजस्थान
राजीव गांधी भवन, दशहरा मैदान, सी.ए.डी. सर्किल–कोटा
email : nnksouth@gmail.com, websites : www.urban,rajasthan.gov.in/nnks, Ph.: 0744-2502142

क्रमांक :– ननिको/दक्षिण/निर्माण/2025/463–476 दिनांक :– 11.07.2025

ई–निविदा संशोधन सूचना 02

नगर निगम कोटा दक्षिण द्वारा जारी ई–निविदा सूचना संख्या 18/2025–26 क्रमांक 328–342 दिनांक 16 जून 2025 की तिथियों एवं प्रोसेसिंग फिस में निम्नानुसार संशोधन किया जाता है। संवेदक ई–निविदा संशोधन सूचना प्रपत्र नगर निगम कोटा की वेबसाईट http://kotamcsouth.org.com, www.urban.rajasthan.gov.in/nnks, http://sppp.raj.nic.in, http://eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त कर सकेंगे।

क्र. सं.	विवरण	पूर्व में दिनांक	संशोधित दिनांक
1	निविदा डाउनलोड करने की तिथि (वेबसाईट से)	20.06.2025 से 11.07.2025 तक	20.06.2025 से 15.07.2025 तक
2	निविदा की धरोहर राशि, निविदा शुल्क व प्रोसेसिंग शुल्क व तकनिकी बिड के दस्तावेज ऑन–लाईन अपलोड करने की तिथि	20.06.2025 से 11.07.2025 तक	20.06.2025 से 15.07.2025 तक
3	निविदा/तकनिकी बिड खोलने की तिथि	14.07.2025 (प्रातः 11:00 बजे)	16.07.2025 (प्रातः 11:00 बजे)
4	वित्तीय बिड खोलने की तिथि	तकनिकी बिड परीक्षण के पश्चात्	तकनिकी बिड परीक्षण के पश्चात्
	निविदा कार्य संख्या	प्रोसेसिंग फिस	संशोधित प्रोसेसिंग फिस
1	02	500/-	1500/-
2	03	500/-	2000/-
3	04	500/-	2000/-
4	05	500/-	2000/-
5	06	500/-	2000/-
6	07	500/-	2000/-

शेष यथावत रहेगा।

अधीक्षण अभियन्ता
नगर निगम कोटा दक्षिण

राज.संवाद/सी/25/6272

चाकू दिखाकर लूट करने वाली भीलवाड़ा कालबेलिया गैंग के दो सदस्य गिरफ्तार

पुलिस ने रैकी करने वाले दुपहिया वाहन को जब्त किया

जयपुर। बिन्दायका थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चाकू दिखाकर लूट करने वाली भीलवाड़ा कालबेलिया गैंग के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया है। साथ ही पुलिस ने रैकी करने वाले दुपहिया वाहन (बाइक) ट्रॉली सहित वारदात प्रयुक्त चाकू भी जब्त किया है। इसके अलावा वारदात की रेकी करने में मिले पांच हजार रुपये भी बरामद किए गए है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) अमित बुडानिया ने बताया कि बिन्दायका थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चाकू दिखाकर लूट करने वाली भीलवाड़ा कालबेलिया गैंग के शातिर बदमाश राकेश नाथ कालबेलिया निवासी बडलियास जिला भीलवाड़ा और नाथु नाथ कालबेलिया निवासी बागौर जिला भीलवाडा हाल करणी विहार जयपुर को बापर्दा गिरफ्तार किया है। वहीं पुलिस ने आरोपित राकेश नाथ व उसकी भाभी शारदा देवी उर्फ जानी देवी द्वारा रेकी करने में प्रयुक्त वाहन एक मोटरसाइकिल जिसमें ट्रोली लगी हुई है को भी जब्त किया है।

पुलिस ने गैंग के शातिर बदमाश राकेश नाथ कालबेलिया व नाथु नाथ कालबेलिया को बापर्दा गिरफ्तार किया

पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपियों के द्वारा कचरा बीनने के बहाने से महिलाओं को साथ रखकर रेकी करते है तथा रेकी के दौरान बुजुर्ग व्यक्तियों जिन्होने सोने चांदी के गहने पहन रखे हो के बारे मे जानकारी जुटाते है। इसके बाद अपने साथियों के साथ मिलकर रात के समय लूट या चोरी करने की योजना बनाते है। रेकी करने वाले लोग अलग होते है व वारदात करने वाले लोग अलग होते है ।

> ■ आरोपियों के द्वारा कचरा बीनने के बहाने से महिलाओं को साथ रखकर रेकी करते है तथा रेकी के दौरान बुजुर्ग व्यक्तियों जिन्होने सोने चांदी के गहने पहन रखे हो के बारे मे जानकारी जुटाते

वारदात करने जाने से पहले अपना फोन आदि घर पर ही छोडकर जाते है ताकि ट्रेक नहीं हो सके तथा वारदात करने के बाद फरार होकर अपने गांव भीलवाड़ा में चले जाते है । इसके अलावा अपने नाम की सिम निकालकर अपने रिश्तेदारों व अन्य लोगो को दे देते है।

रेकी करने के लिये अलग वाहन प्रयोग करते है तथा वारदात में अलग लोगों के द्वारा अलग वाहन प्रयोग करते है तथा घटना स्थल के आस पास से अपना डेरा खाली कर फरार हो जाते है।

कुमावत को एड-हॉक कमेटी का कंवीनर बनाने को चुनौती

जयपुर। राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन की एड-हॉक कमेटी के कन्वीनर के तौर पर दीनदयाल कुमावत को नियुक्त करने के खिलाफ हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई है। सवाई माधोपुर जिला क्रिकेट संघ की ओर से दायर इस याचिका पर 18 जुलाई को सुनवाई होगी।

याचिका में अधिवक्ता मधुसुदन सिंह ने बताया कि याचिकाकर्ता क्रिकेट संघ की वर्तमान कार्यकारिणी को साल 2022 से 2026 के लिए चुना गया था। वहीं सरकारिता विभाग ने गत 27 जून को दीनदयाल कुमावत को आरसीए की एड-हॉक कमेटी का कन्वीनर नियुक्त किया है।

यह नियुक्ति नियमों के खिलाफ है। एड-हॉक कमेटी का कंवीनर वह व्यक्ति ही बन सकता है, जो आरसीए चुनाव लडने के लिए पात्र हो। दीन दयाल कुमावत का सवाई माधोपुर से कोई रिश्ता ही नहीं है। वे ना तो सवाई माधोपुर में जन्मे और ना ही वहां निवास करते हैं।

> ■ याचिका में अधिवक्ता मधुसुदन सिंह ने बताया कि याचिकाकर्ता क्रिकेट संघ की वर्तमान कार्यकारिणी को साल 2022 से 2026 के लिए चुना था

यहां तक की वे सवाई माधोपुर के किसी प्राइमरी क्रिकेट क्लब के पदाधिकारी भी नहीं है। ऐसे में वे जिला संघ के किसी पद के लिए भी पात्र नहीं हैं। इसके बावजूद भी उन्हें एड-हॉक कमेटी का कंवीनर बनाया गया है। इसलिए उनके नियुक्ति आदेश को रद्द किया जाए।

राजधानी जयपुर में पेट्रोल चोर गैंग सक्रिय

जयपुर। वैशाली नगर थाना इलाके में पेट्रोल चोर गैंग सक्रिय हैं। जानकारी के अनुसार गैंग के लोग बाइक पर घूमकर रेकी करते है और फिर उसके बाद रात को कारों से पेट्रोल चोरी करते है। वहीं अगर लोगों के जागने पर उनसे बचने के लिए गुलेल से हमला कर भाग जाते है। पुलिस फुटेज के आधार पर पेट्रोल चोर गैंग के बदमाशों की तलाश कर रही है।

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकद्दमा नम्बर 254/2025
(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि श्री कौशल कुमार योगी पुत्र श्री बनवारी लाल योगी निवासी कृष्णा कॉलोनी, महिलुर महाविद्यालय के पास, मोरीजा रोड, चौमूं जयपुर ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत श्री बिरदीचंद फाउंडेशन कार्यालय पता-वार्ड नं. 32 कृष्णा कॉलोनी, मोरीजा रोड, राजकीय महिला महाविद्यालय के पास, चौमूं जयपुर ने राजस्थान के सम्बन्ध में जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोसि प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोसि के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 27.06.2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 31.08.2025
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग जयपुर

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (द्वितीय) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकद्दमा नम्बर 75/2025
(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि श्रीमती कंचन चौधरी पत्नी श्री अमित चौधरी निवासी सी-194, हसन खॉं मेवाती नगर, अलवर ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत स्कॉलर एजुकेशनल सोसायटी, अलवर ए-231, हसन खॉं मेवाती नगर, अलवर के सम्बन्ध में जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोसि प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोसि के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 14.07.2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 23.09.2025
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (द्वितीय)
देवस्थान विभाग जयपुर

मोदी ने डॉक्यूमेंट्री ''विकास भी-विरासत भी'' के निर्माण पर प्रसन्नता व्यक्त की

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चित्तौडगढ़ सांसद सीपी जोशी को चित्तौडगढ़ संसदीय क्षेत्र में विकास कार्यों पर आधारित डॉक्यूमेंट्री ''विकास भी-विरासत भी'' के निर्माण पर एक सराहनापूर्ण संदेश पत्र भेजा है।

> ■ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पत्र भेजकर चित्तौडगढ़ सांसद सीपी जोशी के नेतृत्व में हो रहे प्रगति कार्य की सराहना की

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पत्र में चित्तौड़गढ़ की ऐतिहासिक सांस्कृतिक और वीरता की परंपरा का उल्लेख करते हुए सांसद सीपी जोशी के नेतृत्व में क्षेत्र में हो रहे विकास कार्यों की प्रशंसा की साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य, आधारभूत ढांचे का विकास, कौशल विकास कार्यक्रमों के विस्तार, युवाओं के सशक्तिकरण, ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण और पर्यटन को बढ़ावा देने जैसे महत्वपूर्ण प्रयासों को भी उल्लेखनीय बताया है। उन्होंने जनप्रतिनिधि के रूप में सांसद सीपी जोशी की सक्रिय भूमिका और जनता से जुड़ाव की विशेष रूप से सराहना की।

प्रधानमंत्री मोदी ने ''वोकल फॉर लोकल'' अभियान के अंतर्गत चित्तौड़गढ़ की पारंपरिक शिल्प, हस्तशिल्प और सांस्कृतिक धरोहरों को वैश्विक पहचान मिलने पर संतोष व्यक्त किया है। उन्होंने यह भी कहा कि विकास की इस ऐतिहासिक यात्रा में जन-जन तक कल्याणकारी योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित करना सरकार का प्रमुख उद्देश्य है। सांसद सीपी जोशी ने प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह हम सभी के लिए प्रेरणास्पद क्षण है।

कार्यालय ग्राम पंचायत पचीपुरा, पंचायत समिति- सवाई माधोपुर जिला- सवाई माधोपुर
क्रमांक:-18/2025-26 दिनांक 11/07/2025
ई-निविदा सूचना संख्या /2025-26
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि महात्मा गांधी नरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज विभाग की समस्त विकास योजनाओं में कार्यों के लिए निर्माण सामग्री आपूर्ति करने हेतु उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 व नियम 2013 एवं जी.एस.टी. अधिनियम 2017 के अन्तर्गत पंजीकृत विक्रेताओं/ निविदादाताओं से वार्षिक दर दिनांक 31.03.2026 तक के लिए निविदा दरें ई-प्रीक्योरमेन्ट पद्धति से द्विस्तरीय आमंत्रित की जाती है निविदा से संबंधित नियम, शर्तें व सम्बन्धी दस्तावेज इन साईट पर http://eproc.rajasthan. gov. in एवं http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एवं डाउनलोड किये जा सकती है।
NIB No.ZSM2526A0466
UBN No. ZSM2526GSRC00530
प्रशासक ग्राम पंचायत पचीपुरा
ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत पचीपुरा

कार्यालय ग्राम पंचायत बाडोलास, पंचायत समिति- सवाई माधोपुर जिला- सवाई माधोपुर
क्रमांक:-43/2025-26 दिनांक 07/07/2025
ई-निविदा सूचना संख्या /2025-26
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि महात्मा गांधी नरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज विभाग की समस्त विकास योजनाओं में कार्यों के लिए निर्माण सामग्री आपूर्ति करने हेतु उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 व नियम 2013 एवं जी.एस.टी. अधिनियम 2017 के अन्तर्गत पंजीकृत विक्रेताओं/ निविदादाताओं से वार्षिक दर दिनांक 31.03.2026 तक के लिए निविदा दरें ई-प्रीक्योरमेन्ट पद्धति से द्विस्तरीय आमंत्रित की जाती है निविदा से संबंधित नियम, शर्तें व सम्बन्धी दस्तावेज इन साईट पर http://eproc.rajasthan. gov. in एवं http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एवं डाउनलोड किये जा सकती है।
प्रशासक ग्राम पंचायत बाडोलास
ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत बाडोलास

कार्यालय ग्राम पंचायत भूरीपहाड़ी, पंचायत समिति- सवाई माधोपुर जिला- सवाई माधोपुर
क्रमांक:-46/2025-26 दिनांक 14/07/2025
ई-निविदा सूचना संख्या 04/2025-26
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि महात्मा गांधी नरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज विभाग की समस्त विकास योजनाओं में कार्यों के लिए निर्माण सामग्री आपूर्ति करने हेतु उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 व नियम 2013 एवं जी.एस.टी. अधिनियम 2017 के अन्तर्गत पंजीकृत विक्रेताओं/ निविदादाताओं से वार्षिक दर दिनांक 31.03.2026 तक के लिए निविदा दरें ई-प्रीक्योरमेन्ट पद्धति से द्विस्तरीय आमंत्रित की जाती है निविदा से संबंधित नियम, शर्तें व सम्बन्धी दस्तावेज इन साईट पर http://eproc.rajasthan. gov. in एवं http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एवं डाउनलोड किये जा सकती है।
NIB No.ZSM2526A0465
UBN No. ZSM2526GSRC00528
प्रशासक ग्राम पंचायत भूरीपहाड़ी
ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत भूरीपहाड़ी

कार्यालय ग्राम पंचायत गोगोर, पंचायत समिति- सवाई माधोपुर जिला- सवाई माधोपुर
क्रमांक:-07/2025-26 दिनांक 15/07/2025
ई-निविदा सूचना संख्या 05/2025-26
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि महात्मा गांधी नरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज विभाग की समस्त विकास योजनाओं में कार्यों के लिए निर्माण सामग्री आपूर्ति करने हेतु उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 व नियम 2013 एवं जी.एस.टी. अधिनियम 2017 के अन्तर्गत पंजीकृत विक्रेताओं/ निविदादाताओं से वार्षिक दर दिनांक 31.03.2026 तक के लिए निविदा दरें ई-प्रीक्योरमेन्ट पद्धति से द्विस्तरीय आमंत्रित की जाती है निविदा से संबंधित नियम, शर्तें व सम्बन्धी दस्तावेज इन साईट पर http://eproc.rajasthan. gov. in एवं http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एवं डाउनलोड किये जा सकती है।
NIB No.ZSM2526A0468
UBN No. ZSM2526GSRC00532
प्रशासक ग्राम पंचायत गोगोर
ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत गोगोर

कार्यालय ग्राम पंचायत नीदड़दा, पंचायत समिति- सवाई माधोपुर जिला- सवाई माधोपुर
क्रमांक:-47/2025-26 दिनांक 09/07/2025
ई-निविदा सूचना संख्या 06/2025-26
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि महात्मा गांधी नरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज विभाग की समस्त विकास योजनाओं में कार्यों के लिए निर्माण सामग्री आपूर्ति करने हेतु उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 व नियम 2013 एवं जी.एस.टी. अधिनियम 2017 के अन्तर्गत पंजीकृत विक्रेताओं/ निविदादाताओं से वार्षिक दर दिनांक 31.03.2026 तक के लिए निविदा दरें ई-प्रीक्योरमेन्ट पद्धति से द्विस्तरीय आमंत्रित की जाती है निविदा से संबंधित नियम, शर्तें व सम्बन्धी दस्तावेज इन साईट पर http://eproc.rajasthan. gov. in एवं http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एवं डाउनलोड किये जा सकती है।
NIB No.ZSM2526A0467
UBN No. ZSM2526GSRC00531
प्रशासक ग्राम पंचायत नीदड़दा
ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत नीदड़दा

कार्यालय ग्राम पंचायत ओलवाडा, पंचायत समिति- सवाई माधोपुर जिला- सवाई माधोपुर
क्रमांक:-34/2025 दिनांक 14/07/2025
ई-निविदा सूचना संख्या -04/2025-26
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि महात्मा गांधी नरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज विभाग की समस्त विकास योजनाओं में कार्यों के लिए निर्माण सामग्री आपूर्ति करने हेतु उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 व नियम 2013 एवं जी.एस.टी. अधिनियम 2017 के अन्तर्गत पंजीकृत विक्रेताओं/ निविदादाताओं से वार्षिक दर दिनांक 31.03.2026 तक के लिए निविदा दरें ई-प्रीक्योरमेन्ट पद्धति से द्विस्तरीय आमंत्रित की जाती है निविदा से संबंधित नियम, शर्तें व सम्बन्धी दस्तावेज इन साईट पर http://eproc.rajasthan. gov. in एवं http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे एवं डाउनलोड किये जा सकती है।
NIB No.ZSM2526A0464
UBN No. ZSM2526GSRC00527
प्रशासक ग्राम पंचायत ओलवाडा
ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत ओलवाडा

हटाए अस्थाई अतिक्रमण

जयपुर। हेरिटेज निगम की सतर्कता शाखा ने बुधवार को अस्थाई अतिक्रमण को हटा दिया। इस दौरान सतर्कता शाखा की टीम ने पांच ट्रक सामान भी जब्त किया है। निगम हेरिटेज आयुक्त डॉ निधि पटेल के निर्देश पर दस्ते ने सूरजपोल, पाड़ा मंडी, ईदगाह, हवा महल रोड, चांदी की टकसाल, आमेर रोड, बड़ी चौपड़, त्रिपोलिया बाजार, छोटी चौपड़, चांदपोल, किशनपोल बाजार में कार्रवाई सड़क और बरामदे से अस्थाई अतिक्रमण को हटा दिया। साथ ही भविष्य में सड़क पर सामान नहीं रखने की चेतावनी भी।

दो दिन तक थाने की सफाई करने की सजा के साथ कार्रवाई बंद

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने जानलेवा हमला करने के मामले में पांच युवकों को शहर के अशोक नगर थाने की दो दिन तक सफाई करने की सजा देते हुए राजीनामे के आधार पर प्रकरण में कार्रवाई बंद कर दी है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश अनुराग व अन्य की आपराधिक याचिका को स्वीकार करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि नए आपराधिक कानून में सामुदायिक सेवा की सजा का प्रावधान है। ऐसे में याचिकाकर्ता स्वच्छता अभियान के तहत दो दिन तक अशोक नगर थाने की सफाई करेंगे। याचिका में अधिवक्ता राजेश शर्मा ने अदालत को बताया कि 24 मई 2025 को सरदार पटेल मार्ग पर 23 से 25 वर्ष के निवाई के कुछ युवकों पर इसी आयुवर्ग के बांदीकुई के कुछ लडकों ने हमला कर दिया था।। इस दौरान एक युवक का सिर फूट गया। इसे लेकर पुलिस ने जानलेवा हमले का मामला दर्ज किया। याचिका में कहा गया कि दोनों ही पक्ष एक दूसरे को जानते तक नहीं थे। इसके अलावा याचिकाकर्ता युवकों के खिलाफ आज तक अन्य कोई आपराधिक मामला दर्ज नहीं है। वहीं दोनों पक्षों के बीच राजीनामा भी हो चुका है। ऐसे में मामले में चल रही आपराधिक कार्रवाई को बंद किया जाए।

खोया पाया
मेरे हाउसिंग कार्ड मकान नं. 10/595 कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर का मूल कब्जा पत्र, कहीं गुम हो गया है। मिलने पर सूचित करें। दीपक-6378403750

ESTATE OFFICER
RAJASTHAN STATE INDUSTRIAL DEVELOPMENT & INVESTMENT CORPORATION LIMITED
EPIP SITAPURA, JAIPUR
RIICO V/s M/s H.R. Gems
Proprietor Smt. Janki Agarwal,
Plot No. 384, Street No.-2, Rajapark, Jaipur
Case No.:- EO/RIICO/04/2024/773 Dated:-14.07.2025
NOTICE UNDER SUB-SECTION (1) OF SECTION 6 OF THE RAJASTHAN PUBLIC PREMISES (EVICTION OF UNAUTHORIZED OCCUPANTS) ACT, 1964
Smt. Janki Agarwal Prop. of M/s H.R. Gems, Plot No. H-171, Industrial Area SEZ-I, Sitapura, Jaipur where on the 14.02.2025, you were evicted from the public premises described in the schedule below with was unauthorizedly occupied by you.
Now, therefore, in exercise of the powers conferred on me by Sub-Section (1) of Section (6) of the Act, I hereby give you notice that after fourteen days of the service of this notice on you, any property remaining on the said premises will be liable to be removed or disposed-off by public auction. In case, you desire to take possession of your property and to remove the same from the said premises, you will be permitted to do so on written authority from the undersigned provided any due or arrears of rent/damages due from you paid within the said period fourteen days.
SCHEDULE
M/s H.R. Gems
H-171, Industrial Area SEZ-I, Sitapura, Jaipur
Court Seal
Raj.samwad/C/25/6334
ESTATE OFFICER

न्यायालय सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट सांभरलेक जिला जयपुर
वाद सं....
ग्यारसीदेवी बनाम राकेश कुमार वगैरह
वाद बाबत घोषणा अंतर्गत धारा 111 भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023
बनाम-आम जनता व आम
उपरोक्त वाद राकेश कुमार पुत्र सन्ताराम उम्र 21 साल जाति रैगर निवासी रैगरों का मोहल्ला, गांधी बस्ती सांरभरलेक जिला जयपुर राज. के लापता हो जाने से उसकी मृत्यु की उपधारणा कर सिविल मृत्यु घोषित किये जाने के सम्बन्ध में पेश किया गया है। यदि कोई भी व्यक्ति उक्त मृत्यु के सम्बन्ध में एतराज/आपत्ति रखता है तो इस न्यायालय में दिनांक 28.07.2025 से पूर्व प्रस्तुत करें।
अत आज दिनांक 08.07.2025 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की मुद्रा से जारी किया गया।
हस्ताक्षर
सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट
मोहर अदालत
सांभर लेक, जयपुर जिला

नम्बर मिलाइए 9587884433
सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

'केंद्र सरकार समाज के सभी वर्गों के विकास के लिए कटिबद्ध है'

जयपुर। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री रामदास अठावले ने आज जयपुर में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा किकांग्रेस और राहुल गांधी एससी ,एसटी वर्ग को लेकर झूठ फैला रहे हैं और समाज में फूट डालने की कोशिश कर रहे हैं। संविधान बदलने जैसी बातें करके लोगों को गुमराह कर रहे हैं लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि संविधान को किसी के बाप का बाप भी नहीं बदल सकता है । उन्होंने महाराष्ट्र में मराठी भाषा को लेकर गरमाई राजनीति और माहौल को लेकर कहा कि महाराष्ट्र में मराठी होने पर मुझे गर्व है लेकिन हिंदी बोलने वाले लोगों के साथ मारपीट करना गलत है। महाराष्ट्र में मराठी लोगों का जितना विकास में योगदान है उतना ही योगदान गैर मराठी लोगों का भी है। मुंबई में 60 आबादी गैर मराठी की है। बड़े-बड़े उद्योगपति गैर मराठी है। कहा कि बालासाहेब ठाकरे ने शिवसेना का गठन मराठियों के अधिकारों को लेकर किया था लेकिन राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे इसके विपरीत काम कर रहे हैं। महाराष्ट्र में जो लोग जन्म लेते हैं वे चाहे गैर मराठी ही क्यों ना हो उन्हें मराठी बोलना आता है लेकिन जो हिंदी बोलते हैं उनका अपमान नहीं होना चाहिए। वहां की सरकार इस पर कार्रवाई कर रही है। उन्होंने मोदी सरकार के काम ऑन और उपलब्धियां की जानकारी देते हुए कहा कि मोदी सरकार ने 25 करोड लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला है।

> ■ मराठी के नाम पर ठाकरे परिवार की दादागिरी गलत, संविधान किसी के बाप का बाप भी नहीं बदल सकता - अठावले

केंद्र सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सबको न्याय देने के लिए और समाज के हर वर्ग का विकास करने के लिए कटिबद्ध है। उन्होने कहा की केंद्र सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओ के माध्यम से 25 करोड़ लोगो को गरीबी रेखा से ऊपर लाने का प्रयास किया गया है।

हनी-ट्रैप में फंसाने की धमकी देकर ऐंठे नब्बे लाख

जयपुर। महेश नगर थाना इलाके में एक व्यवसायी को युवती ने प्रेम जाल (हनी-ट्रैप) में फंसाकर नब्बे लाख रुपए ऐंठने का मामला सामने आया है। पुलिस जानकारी में सामने आया कि आरोपित महिला ने झूठे दुष्कर्म के मामले में फंसाने की धमकी देकर ब्लैकमेल कर पचास लाख रुपए की डिमांड की। इस संबंध में थाने में पीड़ित व्यवसायी ने आरोपित युवती के खिलाफ मामला दर्ज कराया। पुलिस ने बताया कि सांगानेर निवासी 42 वर्षीय व्यवसायी ने मामला दर्ज करवाया है कि एक कंपनी के निदेशक है और वर्ष 2017 में उसकी कंपनी से समर इंटर्न कर आरोपित युवती ने नौकरी शुरू की थी। जिसके बाद सोशल मीडिया के जरिए व्यवसायी से सम्पर्क करने की कोशिश की। ध्यान नहीं देने पर व्यवसायी की पत्नी से दोस्ती कर मिलना-जुलना शुरू कर दिया। इसके बाद व्यवसायी के नजदीक आ गई। इसके बाद झूठे प्रेमजाल में फंसाकर शादी करने का झांसा देकर जरूरत के नाम पर रुपए वसूलना शुरू कर दिया। इसके बाद से आरोपित युवती शादी का झांसा देकर झूठ बोलकर अलग-अलग तरीके से ब्लैकमेलर युवती ने नब्बे लाख रुपए ऐंठ लिए।

रिश्वत प्रकरण में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक की जमानत याचिका खारिज, डीटीओ को राहत

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने एसीबी चौकी, सवाई माधोपुर में तैनात होकर विभिन्न सरकारी अधिकारियों से रिश्वत लेने के मामले में आरोपी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र शर्मा की जमानत याचिका को खारिज कर दिया है। जस्टिस चंद्र प्रकाश श्रीमाली की एकलपीठ ने यह आदेश आरोपी की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि अनुसंधान में सामने आया है कि याचिकाकर्ता आरोपी ने दूसरे लोक सेवकों को ट्रेप करने की धमकी देकर रिश्वत ली है। ऐसे में आरोपी को जमानत पर रिहा नहीं किया जा सकता। दूसरी ओर अदालत ने प्रकरण में सवाई माधोपुर के जिला परिवहन अधिकारी रहे पून्याराम मीणा को जमानत पर रिहा करने के आदेश दिए हैं।

जमानत याचिका में सुरेन्द्र शर्मा की ओर से कहा गया कि उसे बिना किसी आधार के गत 20 मई को गिरफ्तार किया गया था। उसके कब्जे से कोई रिश्वत राशि भी बरामद नहीं हुई है। उसे सह आरोपी के साथ वार्तालाप के आधार पर आरोपी बनाया गया है। वहीं सह आरोपी विवेक सोनी को पूर्व में जमानत दी जा चुकी है। इसके अलावा उसके खिलाफ जांच करने से पूर्व अभियोजन स्वीकृति भी नहीं ली गई है। ऐसे में उसे जमानत पर रिहा किया जाए। जिसका विरोध करते हुए सरकारी वकील जयप्रकाश तिवाडी ने कहा कि याचिकाकर्ता सरकारी अधिकारियों को मोबाइल रिकॉर्डिंग का भय दिखाकर संगठित गिरोह के माध्यम से मासिक रूप से भारी रिश्वत लेता था।

इस संबंध में जून, 2024 को आम जन की ओर से परिवाद दिया गया था। सह आरोपी दलाल रामराज मीणा के मोबाइल से हुई बातचीत के आधार पर याचिकाकर्ता को अपराध में लिप्त पाया गया और उसे अभिरक्षा में लिया गया। ऐसी स्थिति में उसके खिलाफ अभियोजन स्वीकृति की जरूरत भी नहीं थी। इसलिए आरोपी की जमानत याचिका को खारिज किया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने आरोपी की जमानत याचिका को खारिज कर दिया है।

प्रारूप-10 (नियम 6 (7) देखिए)
कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी नगर पालिका मण्डल जोबनेर जयपुर
सं. 1095 **लोक सूचना** दिनांक-15.07.2025
1 श्री कृष्ण सामाजिक उत्थान संस्था (छात्रावास) जरिये श्री लालचंद यादव पुत्र श्री रामप्रताप यादव, निवासी श्री गोविन्द विहार बी, गोविन्दपुरा, कालवाड रोड, झोटवाडा जयपुर इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का गैर-कृषिक (संस्थागत) प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है-अर्थात

जिले सहित तहसील का नाम	ग्राम का नाम	खसरा सं.	क्षेत्रफल
तहसील-जाबनेर, जिला-जयपुर	राजस्व ग्राम प्रतापपुरा, पवार हल्का-जोरपुरा	505/395	0.1265 हैक्टेयर भूमि को संस्थागत प्रयोजनार्थ बाबत

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोसि के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षर के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा।
उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपारा किया जायेगा।
यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज 15.07.2025 को जारी की गयी।
प्राधिकारी अधिकारी, (अधिशाषी अधिकारी), नगर पालिका मण्डल, जोबनेर

नाम परिवर्तन
मैंने अपना नाम योगेश कुमार अग्रवाल पुत्र श्री गणपत लाल अग्रवाल से बदलकर योगेश अग्रवाल रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जावें निवासी 32 शंकर कॉलोनी, नया खेडा, अम्बाबाडी, जयपुर

मैं आर्मी नं. 16034110K राइफलमैन चन्द्रवीर सिंह राठौड यूनिट 17 राजरिफ (सवाईमान) है मेरे सेना के दस्तावेजों में मेरे माताजी का नाम दरयाव कँवर (Daryav Kunwar) है जो कि गलत है मेरे माताजी का नाम दरयाव कँवर (Dariyav Kanwar) है। जो कि सही एवं सत्य है।

I, RAM SINGH GIRI Father of JC-829810M Sub (GD) Birendar Singh Goswamy R/o Vill: Kajarwara, Po: Temer Bhita, Teh: Jablpur, PS: Gorabazar, Dist: Jabalpur, State: Madhya Pradesh, PIN: 482001 have changed my name from RAM SINGH GIRI to RAM SINGH Vide affidavit No. CD-900515 Date: 15.07.2025

I Shantanu Kumar Sharma R/o D-10, Devi Chiranjeev Colony, Sudama Kuti Marg, Gopalpura Byepass, Gandhi Nagar, Jaipur Declare that in my son Pratyush Sharma education records my name wrongly entered as Shantanu Sharma. The correct name is Shantanu Kumar Sharma vide affidavit 15.07.2025. Jaipur.

I Am Army No. 16029886N RFN Amar Kumar Of Unit 17 RAJRIF (Sawaiman) My Father Name In Military Document is Tejbir Singh Which is Wrong. My Father Correct Name is Tejveer.

श्रद्धालु कर सकेंगे ज्योतिर्लिंग का रुद्राभिषेक-हवन

जयपुर। सावन माह में भगवान भोलेनाथ की भक्ति में लीन छोटीकाशी के श्रद्धालु दूसरे सोमवार की पूर्व संध्या पर आराध्य देव गोविंद देवजी मंदिर में महाकाल का महाभिषेक करेंगे। आगामी रविवार, 20 जुलाई को यहां द्वादश ज्योतिर्लिंग का पूजन और रूद्राभिषेक का भव्य आयोजन होगा। श्रद्धालु आराध्य देव के दर्शन के साथ-साथ आशुतोष भगवान का पूजन और अभिषेक का पुण्य लाभ भी उठा सकेंगे। मंदिर महंत अंजन कुमार गोस्वामी के सान्निध्य में बुधवार को ठाकुर राधा गोविंद देवजी के श्रीचरणों में आयोजन का पोस्टर अर्पित किया। इससे पूर्व प्रथम पूज्य मोतीडूंगरी गणेशजी मंदिर में आयोजन के निर्विघ्न रूप से संपन्न होने की प्रार्थना की।

इस मौके पर मोतीडूंगरी गणेश मंदिर के महंत कैलाश शर्मा, गायत्री परिवार राजस्थान के समन्वयक ओमप्रकाश अग्रवाल, सनातन बोर्ड संघर्ष समिति राजस्थान के संयोजक राहुल द्विवेदी, गुर्जर समाज युवा अध्यक्ष गौरव गुर्जर, कुलदीप सुलोनिया और रवि मीणा ने आयोजन के पोस्टर का विमोचन किया।

रणनीति से सिलिकॉन तक: सप्त शक्ति टेक सेमिनार का शुभारंभ

जयपुर। सप्त शक्ति कमान द्वारा बहुप्रतीक्षित तकनीकी सेमिनार ''नेक्स्ट जनरेशन कॉम्बैट - शेपिंग टूमारोज मिलिट्री टुडे'' का शुभारंभ आज जयपुर मिलिट्री स्टेशन में सेंटर फॉर लैण्ड वॉरफेयर स्टडीज़ और सोसायटी ऑफ़ इंडियन डिफ़ेंस मैन्युफैक्चरस के सहयोग से हुआ। इस आयोजन की परिकल्पना लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदरसिंह, जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, साउथ वेस्टर्न कमांड द्वारा की गई थी। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी की ''विकसित भारत'' के निर्माण में परिवर्तनकारी भूमिका पर एक प्रेरक उद्घाटन भाषण दिया।

यह सेमिनार अग्रणी विशेषज्ञों, सैन्य रणनीतिकारों और रक्षा क्षेत्र के नवोन्मेषकों को एक मंच पर लेकर आई, जहाँ बदलते युद्ध परिदृश्य और निर्णायक बढ़त बनाए रखने के लिए आवश्यक तकनीकी उन्नितयों पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदरसिंह(बीच में) ने सेमिनार ''नेक्स्ट जनरेशन कॉम्बैट - शेपिंग टूमारोज मिलिट्री टुडे'' का शुभारंभ किया।

अपने उद्घाटन भाषण में, लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदरसिंह ने इस बात पर बल दिया कि भारतीय सेना को आधुनिक और भविष्य के युद्धों की बहुआयामी चुनौतियों का सामना करने के लिए तेजी से अनुकूलन और नवाचार अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने ग्रे ज़ोन युद्ध की जटिलताओं को रेखांकित किया और इस बात पर जोर दिया कि हाइब्रिड खतरों का मुकाबला करने के लिए परिष्कृत क्षमताओं का विकास अत्यंत आवश्यक है,जो युद्ध और शांति की रेखाओं को धुंधला कर देते हैं। उन्होंने ऑपरेशन ''सिंदूर'' की सफलता में उन्नत प्रणालियों, सटीक आयुध, खुफिया, निगरानी और टोही क्षमताओं, विशेष रूप से ड्रोन की प्रभावी तैनाती की भूमिका को रेखांकित किया।

उन्होंने निर्णय लेने की क्षमता को बेहतर बनाने, संसाधनों के अनुकूल उपयोग और संचालन की गति एवं सटीकता बढ़ाने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अपार संभावनाओं की सराहना की। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि घातक स्वायत्त हथियार प्रणालियों के विकास और तैनाती में मजबूत नैतिक ढांचे, मानवीय निगरानी और अंतरराष्ट्रीय मानवतावादी कानूनों का पालन अत्यावश्यक है। उन्होंने साउथ वेस्टर्न कमांड और मालवीया नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के बीच रक्षा प्रौद्योगिकी के संयुक्त स्वदेशीकरण, अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने के लिए समझौता ज्ञापन की सराहना की।

कार्यालय पुलिस अधीक्षक जिला सवाई माधोपुर (राजस्थान)
क्रमांक-6029-49 दिनांक-16.07.2025
नीलामी सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि जिला सवाई माधोपुर के थाना मानटाउन के द्वारा 38 पुलिस एक्ट में जब्त एवं राजसात किये गये वाहन 21 वाहन (19 मोटर साईकिल, 01 स्कूटर व 01 ट्रक) को स्वामी/मालिकों द्वारा निर्धारित अवधि में मुक्त नहीं कराने के कारण जिस स्थिति में है दिनांक 31.07.2025 को प्रात 12.00 बजे गठित समिति द्वारा थाना मानटाउन के परिसर में नीलाम किया जावेगा। अत इच्छुक खरीददार/बोलीदाता को जरिये विज्ञप्ति सूचित किया जाता है कि निर्धारित तिथि एवं समय पर उपस्थित होकर बोली लगा सकते है। नीलामी की शर्ते किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय में उपस्थित होकर देखी जा सकती है।
पुलिस अधीक्षक,
जिला सवाई माधोपुर

OFFICE THE GRAM PANCHAYAT DIVRALA PS. AJITGARH (SIKAR)
No. Eproc/2025-26/317 Date: 14.07.2025
E-Tender Notice No. 03/2025-26
Bids for open tender of procurement of Works Including Door-To-Door (Residential And Commercial) Waste Collection And Segregation. Road And Dram Cleaning, And Community Sanitation Premises Cleaning in All Villages of The Gram Pnchyat DIVRALA Panchayat Samiti Ajitgarh (Sikar) are invited from Firms/Suppliers Registered Under the GST act 2017. up to 6.00 PM of 21.07.2025. Other particulars of the bid may be visited on the procurement Portal http://sppp.raj.nic.in and http://eproc.rajasthan.gov.in) of the state and at Gram Panchyat DIVRALA Office in all working days.
UBN NO. PAJ2526GLRC00078
(रामावतार सैनी)
प्रशासक, ग्राम पंचायत दिवराला
पं.स. अजीतगढ
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत दिवराला
पं.स. अजीतगढ (सीकर) राज.

मुझे हमेशा से मोटरसाइकिल और ऑफ-रोडिंग का शौक रहा है। जब मैंने देखा कि आईएसआरएल विश्वस्तरीय प्रतिभाओं को एक साथ ला रहा है, घरेलू एथलीटों का समर्थन कर रहा है। मैं इसका हिस्सा बनना चाहता हूं।
- सलमान खान

बॉलीवुड स्टार, आईएसआरएल के दूसरे सीजन के अनावरण पर।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ सुनील छेत्री

भारतीय फुटबॉल टीम के स्टार खिलाड़ी और कप्तान सुनील छेत्री ने भारतीय फुटबॉल की वर्तमान स्थिति पर चिंता जताई है। हालांकि, उन्हें उसमें सुधार की उम्मीद भी दिख रही है। बता दें कि, शीर्ष स्तर के फुटबॉल टूर्नामेंट इंडियन सुपर लीग यानी को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित किए जाने से खेल जगत चिंतित, आहत और डरा हुआ है। लीग में बेंगलुरु एफसी की ओर से खेलने वाले छेत्री ने कहा कि, उन्हें देश में इस खेल के भविष्य को लेकर आशंकाएं व्यक्त करने वाले फोन कॉल और संदेशों की बाढ़ आ गई है।

क्या आप जानते हैं ?... रंजीता ने वर्ष 2021 में चंडीगढ़ में आयोजित ओपन नेशनल जूडो टूर्नामेंट में 40 किलोग्राम वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए अपनी खेल यात्रा की प्रभावशाली शुरुआत की।

पंत का रन आउट और करुण का आउट होना भारत की हार के दो अहम पल रहे : शास्त्री

लंदन, 16 जुलाई। लॉर्ड्स में खेला गया तीसरा टेस्ट मैच इंग्लैंड और भारत के बीच एक जबरदस्त मुकाबला रहा, जिसमें ज्यादातर समय दोनों टीमों के बीच कोई ख़ास फर्क नहीं पड़ा। लेकिन आखिरकार मेजबान टीम ने बढ़त हासिल कर ली और कड़े मुकाबले में जीत हासिल की।

जोफ्रा आर्चर और बेन स्टोक्स की अगुवाई में इंग्लैंड के गेंदबाजों ने चौथे दिन के आखिरी और पांचवें दिन के शुरुआती सत्र में नाटकीय रूप से भारतीय टीम को धराशायी कर दिया और 193 रनों के लक्ष्य का पीछा कर रही भारत की टीम को 170 रनों पर समेट दिया। हालांकि आईसीसी के नंबर 1 टेस्ट ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने जबरदस्त वापसी की। एक रोमांचक टेस्ट मैच में, जो लगातार आगे-पीछे होता रहा, शास्त्री ने उन अहम पलों की ओर इशारा किया जिन्होंने पलड़ा इंग्लैंड के पक्ष में झुका दिया, ठीक उस समय जब भारत का पलड़ा भारी लग रहा था।

रवि शास्त्री ने आईसीसी रिव्यू के नवीनतम संस्करण में कहा, इस टेस्ट मैच में मेरे लिए टर्निंग पॉइंट, सबसे पहले, पहली पारी में ऋषभ पंत का आउट होना था। बेन स्टोक्स, लंच के समय दाहिने छोर पर हिट करने और उसे सफलतापूर्वक आउट करने के लिए अद्भुत सूझबूझ का परिचय देते हैं। क्योंकि भारत बढ़त बना सकता था और वे ड्राइवर सीट पर थे।

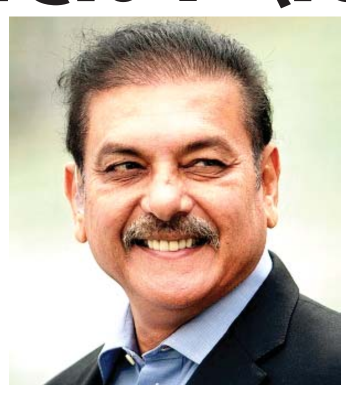

भारतीय उप-कप्तान पंत 74 रन बनाकर खेल रहे थे, लेकिन स्टोक्स की शानदार फील्डिंग ने उन्हें तीसरे दिन लंच के समय ड्रेसिंग रूम वापस भेज दिया।

शास्त्री ने कहा, यह कहने के बाद, दूसरी पारी में एक बार फिर 40/1 के स्कोर पर, मुझे लगा कि करुण नायर की एकाग्रता में बहुत बड़ी चूक थी, एक सीधी गेंद, एक न चलने वाली गेंद, को छोड़ देना और इंग्लैंड के लिए रास्ता खोल देना। मुझे लगता है कि उस आउट होने के समय ने स्थिति बदल दी।

उन्होंने कहा, क्योंकि आपने देखा होगा कि जब सिराज ने बल्लेबाजी की, जब बुमराह ने बल्लेबाजी की, जब जडेजा ने बल्लेबाजी की, एक बार जब गेंद 40 ओवर पुरानी हो गई, तो उन्होंने मुश्किल से कोई गलती की।

शास्त्री ने कहा, उनका डिफेंस मजबूत था और लंच के बाद इंग्लैंड को उस लक्ष्य हासिल करने के लिए, आपको लगता था कि अगले 10 मिनट में यह काम पूरा हो जाएगा। लेकिन उस 82 या 83 रनों को 22 रनों पर लाना एक बड़ी उपलब्धि थी। उन्होंने कहा, इससे पता चलता है कि अगर चौथे दिन, अंत में, शीर्ष क्रम थोड़ा और मजबूत और मानसिक रूप से मजबूत होता, तो यह मैच भारत का होता। शास्त्री का मानना है कि मैच के कुछ चरणों में भारत शीर्ष पर था, लेकिन इंग्लैंड को जरूरी मौकों का फायदा उठाने के लिए पूरा श्रेय दिया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा, इंग्लैंड की तारीफ करनी होगी। जब हालात मुश्किल हुए, तो उन्होंने उन मौकों का पूरा फायदा उठाया। और जब उन्हें कोई रास्ता दिखाई दिया, तो उन्होंने उसे पूरी तरह से तोड़ दिया। उन्होंने कहा, उस पिच पर मुश्किल से ही कुछ था, और अगर आपने पिछले दिन दो विकेट कम खोए होते, तो मुझे लगता है कि भारत उस लक्ष्य का पीछा कर लेता। लॉर्ड्स टेस्ट एक क्लासिक मैच था, जिसमें दोनों टीमों ने पहली पारी में 387 रन बनाए थे, लेकिन चौथे दिन वाशिंगटन सुंदर की चार विकेट की शानदार गेंदबाजी ने इंग्लैंड को 192 रन पर ढेर कर दिया।

शास्त्री ने 2021 में उसी मैदान पर पिछली बार भारत की रोमांचक जीत से तुलना की, जब वह उस समय मुख्य कोच थे। उन्होंने कहा, इसने मुझे 2021 के टेस्ट मैच की बहुत याद दिला दी। सिर्फ उस मौके पर भारत ने पहले बल्लेबाजी की थी। स्कोरलाइन बहुत समान थी, 300, 300 और फिर दूसरी पारी में पतन। उस समय भारत जीता था। इस बार इंग्लैंड जीता।

शास्त्री ने कहा, लेकिन यह एक रोमांचक सीरीज है और दो और मैच बाकी हैं। कुछ भी हो सकता है। भारत तुरंत वापसी कर सकता है और अगर ऐसा होता है, तो ओवल (अंतिम टेस्ट) एक रोमांचक मुकाबला होगा। सीरीज के पंद्रह दिन रोमांचक रहे हैं। और कई बार, मुझे लगता है कि भारत 3-0 से आगे हो सकता था। थोड़ी सी किस्मत के साथ, भारत 3-0 से आगे हो सकता था।

शास्त्री ने इंग्लैंड के कप्तान की अथक मेहनत की तारीफ की, जिससे उन्हें तीन बड़े विकेट मिले। शास्त्री ने कहा, स्टोक्स जब वे स्पैल फेंक रहे थे, तो मुझे पता था कि एजबेस्टन में कुछ होने वाला है क्योंकि उनके पास कुछ खास था। शास्त्री ने कहा, वह लॉर्ड्स में लिए जोश से भरे थे और उन्होंने आखिरी दिन यह कर दिखाया। आठ ओवर, नौ ओवर के स्पैल। एक समय तो इंग्लैंड के लिए जीत हासिल करने के लिए अंत में 10 ओवर ही काफी थे। अब दोनों टीमें पांच मैचों की आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप सीरीज के चौथे मुकाबले के लिए मैनचेस्टर रवाना होंगी, जहां इंग्लैंड 2-1 से आगे है।

भारत की अंडर-19 और इंग्लैंड के बीच खेला गया पहला यूथ टेस्ट रहा ड्रॉ

बेकेनहम, 16 जुलाई। हमजा शेख (112) की शतकीय और राल्फी एल्बर्ट और जैक होम की जुझारू पारियों की बदौलत इंग्लैंड की अंडर-19 टीम भारत के खिलाफ खेले गये पहले यूथ टेस्ट मैच को आखिरी दिन ड्रॉ कराने में सफल रही। 350 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंग्लैंड मैच के आखिरी दिन मंगलवार को दूसरी पारी में सात विकेट पर 270 रन ही बना सकी। भारत की अंडर-19 टीम ने दूसरी पारी में विहान मल्होत्रा के (63) और आरएस अम्ब्रिश के (53) रनों की बदौलत इंग्लैंड को 63 ओवर में 350 रनों का लक्ष्य दिया था। आर्ची वॉन ने इंग्लैंड के लिए 84 रन देकर छह विकेट लिए।

इंग्लैंड, तीन विकेट जल्दी गंवाने के बाद हमजा शेख और बेन मेयस के बीच 119 रनों की साझेदारी हुई। मेयस 51 रन बनाकर आउट हुए। वहीं शेख 112 रनों की पारी खेलकर रनआउट हुये। जब रियू 50 रन बनाने के बाद आउट हुए तो भारत को जीत की उम्मीद जगी लेकिन अंत में राल्फी एल्बर्ट और जैक होम ने 11.5 ओवर तक बल्लेबाजी करते हुए ड्रॉ सुनिश्चित किया।

इससे पहले भारत ने आखिरी दिन की शुरुआत 229 रनों की बढ़त और सात विकेट हाथ में के साथ की। जहां मल्होत्रा 34 और अभिज्ञान कुंडु क्रीज पर थे। मल्होत्रा को अपने अर्धशतक तक पहुंचने में केवल 15 मिनट लगे जब उन्होंने वॉन की गेंद पर कवर ड्राइव लगाते हुए चौका लगाया, लेकिन कुछ ही देर बाद वह रियू की गेंद पर आउट भी हो गए। बारिश के बाद जब मैच दोबारा शुरू हुआ तो रियू ने लंच से पहले भारत के दो और विकेट झटक लिये। कुंडु 11 रनों पर प्रीन के हाथों लपके गए और राहुल कुमार हुक के प्रयास में विकेट के पीछे जेम्स मिंटो के द्वारा लपके गए। वॉन ने मोहम्मद इनान को पांच और हेनिल पटेल को रॉकी फ्लिंटॉफ के द्वारा कैच कराकर अपना पांचवां विकेट लिए। इससे लंच तक भारत का स्कोर 8 विकेट पर 209 रन था। इसके बाद भारतीय टीम 57.4 ओवर में 248 रन पर सिमट गई। अब इंग्लैंड को जीत के लिए 350 रनों का

लक्ष्य मिला। दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी इंग्लैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने सलामी बल्लेबाज ए वॉन मात्र तीन रन बनाकर देवेंद्रन की गेंद पर विकेट के पीछे कैच आउट हो गए। इसके बाद जेडन डेनली ने अम्ब्रिश को हुक करने की कोशिश की और वैभव सूर्यवंशी ने 19 रन पर बाउंड्री पर कैच पकड़ लिया। जबकि फ्लिंटॉफ ने सिंह को ड्राइव करने की कोशिश की और 11 रन पर चावड़ा ने लांग ऑन पर कैच पकड़ा। फिर भी मेयस जब सात रन पर थे तब देवेंद्रन के हाथों उन्हें जीवनदान मिला। चायकाल तक इंग्लैंड का स्कोर 3 विकेट पर 83 रन था और उस समय भी लक्ष्य का पीछा जारी था।

शेख ने सिंह की गेंद पर छक्का लगाकर अपना अर्धशतक पूरा किया, लेकिन इंग्लैंड को एक बड़ा झटका तब लगा जब दोनों बल्लेबाज विकेटकीपर छोर पर थे और भारत ने गलत स्टंप पर गेंद फेंकी, जिससे मेयस को सुरक्षित वापसी का मौका मिल गया। उन्होंने एक शानदार स्वीप शॉट लगाकर अपना अर्धशतक पूरा किया। मेयर (51) अम्ब्रिश की गेंद कैच आउट हुए। रियू के आने और तुरंत आक्रामक होने के बाद, दोनों टीमों के बीच हाथ मिलाने की आशंकाएं ख़त्म हो गईं।

लॉर्ड्स में धीमी ओवर गति के लिए इंग्लैंड पर जुर्माना, डब्ल्यूटीसी अंक भी कटे

दुबई, 16 जुलाई। लॉर्ड्स टेस्ट में धीमी ओवर गति के कारण इंग्लैंड के विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में दो अंक काटे गए हैं, साथ ही उन पर जुर्माना भी लगा है। इसकी वजह से इंग्लैंड के अब डब्ल्यूटीसी तालिका में 24 की जगह 22 हो गए हैं और उनका अंक प्रतिशत भी 66.67 से 61.11 हो गया है। इस कारण से अब वे ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका के बाद दूसरे से तीसरे स्थान पर खिसक गए हैं। इंग्लैंड पर मैच फीस का 10 प्रतिशत जुर्माना भी लगाया गया है। डब्ल्यूटीसी खेल शर्तों के अनुच्छेद 16.11.2 के अनुसार, समय को ध्यान में रखने के बाद प्रत्येक ओवर के लिए एक अंक का दंड दिया जाता है। इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने अपनी गलती मानी है, जिसके बाद कोई आधिकारिक सुनवाई की जरूरत नहीं पड़ी। तीसरे टेस्ट को जीतकर इंग्लैंड ने सीरीज में 2-1 की बढ़त बना ली। यह एक उच्च दबाव और रोमांच वाला मैच रहा, जिसमें खिलाड़ियों के बीच गर्मागर्मी भी देखी गई। व्यक्तिगत प्रदर्शन में जोफ्रा आर्चर का सबसे तेज स्पैल, जो रूट और केएल राहुल का शतक और जसप्रीत बुमराह का पांच विकेट शामिल रहा। मैच की तीव्रता जल्द ही बढ़ गई जब दोनों टीमें पहली पारी में 387 के समान स्कोर पर रह गई, जिससे टेस्ट दूसरी पारी में भी बराबरी पर आ गया।

जडेजा इंग्लैंड में 1000 रन पूरे करने के करीब

लंदन, 16 जुलाई। दुनिया के नंबर एक आलराउंडर भारत के रवींद्र जडेजा इंग्लैंड में 1000 रन पूरा करने के करीब पहुंच गए हैं। जडेजा ने लॉर्ड्स में इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट में भारत की दूसरी पारी में नाबाद 61 रन बनाये लेकिन भारत यह मुकाबला 22 रन से हार गया। जडेजा का यह लगातार चौथा अर्धशतक था। उन्होंने बर्मिंघम और लॉर्ड्स दोनों में जुड़वां फिफ्टी लगाईं। उनसे पहले इंग्लैंड में लगातार चार 50 स्कोर बनाने वाले केवल दो भारतीय बल्लेबाज हैं – सौरव गांगुली (2002) और ऋषभ पंत (2022 और 2025)। लॉर्ड्स में आखिरी दिन उनकी नाबाद 61 रन की पारी टेस्ट की चौथी पारी में उनका पहला 50 स्कोर था।

इंग्लैंड में जडेजा ने टेस्ट में नंबर 6 या उससे नीचे बल्लेबाजी करते हुए 942 रन बनाए हैं। इस लिस्ट में मेहमान बल्लेबाजों में उनसे ज्यादा रन सिर्फ गैरी सोबर्स (1097) ने बनाए हैं। इंग्लैंड में उनके नाम एक शतक और सात अर्धशतक हैं, गैरी सोबर्स (9) के बाद दूसरे स्थान पर हैं।

भारत ने सोमवार को सातवां विकेट गिरने के बाद जितनी गेंदें (301) खेलीं। यह टेस्ट की चौथी पारी में आखिरी तीन साझेदारियों में खेली गई सबसे अधिक गेंदें हैं। इससे पहले रिकॉर्ड 294 गेंदों का था, जो इंग्लैंड ने 2015 में दुबई में पाकिस्तान के खिलाफ बनाया था (नोट: गेंदों का डेटा 1998 से उपलब्ध है)। जडेजा और जसप्रीत बुमराह ने 22 ओवर तक साझेदारी निभाई। यह पिछले दस वर्षों में भारत के लिए 9वें या 10वें विकेट के लिए सबसे लंबी साझेदारी है।

कर्नाटक हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को आरसीबी भगदड़ रिपोर्ट सार्वजनिक करने का आदेश दिया

बेंगलुरु, 16 जुलाई। कर्नाटक हाई कोर्ट ने राज्य सरकार को आदेश दिया है कि वह चार जून को हुई भगदड़ की घटना पर अपनी स्थिति रिपोर्ट सार्वजनिक करे, जिसने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की एम चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर हुई आईपीएल जीत के जश्न को गहरा धक्का पहुंचाया था। इस त्रासदी में 11 लोगों की मौत हुई थी और 50 से अधिक लोग घायल हुए थे। राज्य सरकार ने हाई कोर्ट से इस रिपोर्ट को गोपनीय रखने का अनुरोध किया था, लेकिन कोर्ट ने सोमवार, 14 जुलाई को स्पष्ट रूप से कहा कि इस तरह की गोपनीयता के लिए कोई कानूनी आधार नहीं है, और ये केवल सरकार की दृष्टि में तथ्यों की प्रस्तुति है। कोर्ट ने सरकार को यह रिपोर्ट मामले के अन्य पक्षों – आरसीबी, कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) और डीएनए एंटरटेनमेंट नेटवर्क्स, जो फ्रेंचाइजी के इवेंट पार्टनर हैं – को सौंपने का भी निर्देश दिया है। इस बीच फ्रेंचाइजी एक विस्तृत सीआईडी जांच और केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण (सीएटी) की दो सदस्यीय पीठ की रिपोर्ट का इंतजार कर रही है। यह पीठ सरकारी और सार्वजनिक सेवकों से जुड़े मामलों की जांच करने वाला अर्ध-न्यायिक निकाय है। आरसीबी और डीएनए के वरिष्ठ अधिकारियों ने पिछले एक महीने में अपने बयान जमा कराए हैं। फैसले की कोई तय तारीख अभी सार्वजनिक नहीं की गई है।

लुंगी ने डेन स्टेन को पछाड़ा, ऐसा करने वाले द. अफ्रीका के तीसरे गेंदबाज बने

हरारे, 16 जुलाई। साउथ अफ्रीका के तेज गेंदबाज लुंगी एनगिडी ने हमवतन दिग्गज डेन स्टेन को पछाड़ दिया है। वह साउथ अफ्रीका के लिए सबसे ज्यादा टी20 विकेट लेने वाले तीसरे गेंदबाज बन गए हैं। न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले टी20 मैच के दौरान एनगिडी ने ये खास उपलब्धि हासिल की। जिम्बाब्वे, साउथ अफ्रीका और न्यूजीलैंड के बीच त्रिकोणीय टी20 सीरीज आयोजित की गई है। हरारे क्रिकेट ग्राउंड पर पहले मुकाबले में न्यूजीलैंड और साउथ अफ्रीका आमने-सामने हैं। साउथ अफ्रीका ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। लुंगी एनगिडी ने टिम सीफर्ट का विकेट लेकर एक खास उपलब्धि हासिल की। एनगिडी, डेल स्टेन को पीछे छोड़ते हुए टी20 सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले तीसरे साउथ अफ्रीकी गेंदबाज बन गए हैं। पूर्व अफ्रीकी तेज गेंदबाज डेल स्टेन ने 47 टी20 मैच में 64 विकेट लिए थे।

लक्ष्य सेन, सात्विक-चिराग जापान ओपन के राउंड-ऑफ-16 में

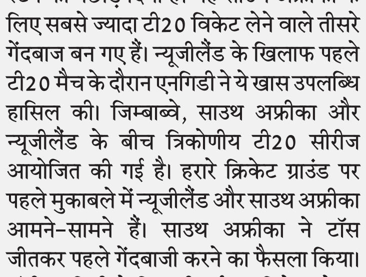

टोक्यो, 16 जुलाई। लक्ष्य सेन और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी तथा चिराग शेट्टी की भारतीय जोड़ी ने बुधवार को अपने-अपने मुकाबलों में जीत दर्ज कर जापान ओपन 2025 के अगले दौर में जगह बना ली है। सेन ने संयमित प्रदर्शन करते हुए चीन के वांग झेंग जिंग को 21-11, 21-18 से हराया। सेन का दूसरे दौर में जापान के स्टार खिलाड़ी कोडाई नाराओका से मुकाबला होगा। वहीं पुरुष युगल के मुकाबले में, सात्विक और चिराग ने अपने अभियान की शानदार शुरुआत की और दक्षिण कोरिया के कांग मिन-ह्युक और की डोंग-जू की जोड़ी को 21-18, 21-10 से हराकर अंतिम 16 में प्रवेश किया। पीवी सिंधु और उन्नित हुड्डा महिला एकल ड्रॉ के पहले दौर में ही हारकर बाहर हो गईं।

विराट और रोहित अब सिर्फ वनडे मैच खेलते हुए दिखेंगे : बीसीसीआई

नई दिल्ली, 16 जुलाई। पहले टी20 और फिर टेस्ट से संन्यास के बाद अब टीम इंडिया के दो दिग्गज विराट कोहली और रोहित शर्मा अब सिर्फ वनडे मैच खेलते हुए दिखेंगे। लेकिन सवाल ये है कि, ये दोनों दिग्गज क्या अभी वनडे अंतर्राष्ट्रीय मैचों में भारत की तरफ से खेलते दिखेंगे? हालांकि, माना ये भी जा रहा है कि, दोनों का लक्ष्य 2027 का एकदिवसीय वर्ल्ड कप खेलने और भारत को फिर चैंपियन बनाने का है। फिर भी क्या वे तब तक खेल पाएंगे? ये सवाल तो बाद में आएगा, अभी तो सवाल यही है कि क्या वे वनडे में दिखेंगे इसे लेकर अब बीसीसीआई ने बड़ा अपडेट दिया है।

दरअसल, बीसीसीआई के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने विराट और रोहित के वनडे भविष्य पर अनिश्चितता के छंटे बादलों को साफ कर दिया है। शुक्ला ने न्यूज एजेंसी एएनआई से बातचीत में दो टूक कहा कि टेस्ट और टी20 से संन्यास ले चुके हैं ये दोनों दिग्गज एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैचों के लिए उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने कहा कि, मैं इसे एकदम से स्पष्ट कर देना चाहता हूं।

शुक्ला ने न्यूज एजेंसी एएनआई से बातचीत में दो टूक कहा कि टेस्ट और टी20 से संन्यास ले चुके ये दोनों दिग्गज एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैचों के लिए उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने कहा कि, मैं इसे एकदम से स्पष्ट कर देना चाहता हूं।

राजीव शुक्ला ने विराट कोहली और रोहित शर्मा को लेकर कहा कि, हमें उनकी कमी हमेशा खलेगी, वो महान बल्लेबाज हैं और हमारे लिए अच्छी बात है कि वनडे के लिए वो सब उपलब्ध हैं। उन्होंने आगे कहा कि दो टूक के बाद अब इस बात की उम्मीद बढ़ गई है कि विराट कोहली और रोहित शर्मा 2027 में दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे में होने वाले वनडे वर्ल्ड कप में दिख सकते हैं।

फिलहाल, भारतीय टीम अभी इंग्लैंड के दौरे पर है जहां देशों के बीच 5 टेस्ट मैच की सीरीज चल रही है। 3 टेस्ट हो चुके हैं जिनमें भारत को एक में जीत और 2 में हार मिली है। सीरीज का अगला टेस्ट 23 जुलाई से मैनचेस्टर में खेला जाएगा। आखिरी और पांचवां मैच 31 जुलाई से 4 अगस्त तक खेला जाएगा।

रूट ने फिर हासिल की नंबर 1 टेस्ट बल्लेबाज रैंकिंग

दुबई, 16 जुलाई। इंग्लैंड के जो रूट ने अपने शानदार प्रदर्शन की बदौलत लॉर्ड्स में भारत पर 22 रनों की जीत के साथ आईसीसी पुरुष टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष स्थान हासिल कर लिया है। रूट (888 रेटिंग अंक) ने 104 और 40 रनों की पारी की बदौलत हमवतन हैरी ब्रूक (862) को पछाड़कर नंबर 1 स्थान हासिल किया, जिससे मेजबान टीम ने पांच मैचों की सीरीज में 2-1 की बढ़त बना ली। रूट का यह आठवां शीर्ष स्थान है और 34 साल की उम्र में, वह दिसंबर 2014 में 37 वर्षीय कुमार संगकारा के बाद से नंबर 1 पर पहुंचने वाले सबसे उम्रदराज बल्लेबाज हैं। ऑस्ट्रेलियाई स्टीव स्मिथ (816) भी जमैका में वेस्टइंडीज के खिलाफ कम स्कोर वाले मैच में किए गए शानदार प्रदर्शन की बदौलत शीर्ष 10 में एक स्थान ऊपर चढ़े हैं। स्मिथ ने मेहमान टीम की जीत में 48 रन बनाए, जबकि उनके साथी कैमरन ग्रीन 46 और 42 रन की पारी की बदौलत 16 स्थान की छलांग लगाकर 29वें (619) स्थान पर पहुंच गए।

न्यूजीलैंड ने दक्षिण अफ्रीका को 21 रनों से हराया

हरारे, 16 जुलाई। टिम रॉबिंसन (नाबाद 75) और बेवन जैकब्स (नाबाद 44) की शानदार पारियों के बाद जेकब डफी और मैट हेनरी (तीन-तीन विकेट) की दमदार गेंदबाजी की बदौलत न्यूजीलैंड ने त्रिकोणीय श्रृंखला के दूसरे टी-20 मुकाबले में बुधवार को दक्षिण अफ्रीका को 21 रनों से हरा दिया।

176 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका के लिए लुआन-द्रे प्रेटोरियस और रीजा हेंड्रिक्स की सलामी जोड़ी ने पहले विकेट के लिए 34 रन जोड़े। चौथे ओवर में मैट हेनरी ने लुआन-द्रे प्रेटोरियस 17 गेंदों में (27) को आउटकर न्यूजीलैंड को पहली सफलता दिलाई। अगले ही ओवर में जेकब डफी ने रूबिन हरमन (एक) को आउटकर पवेलियन भेज दिया। मिचेल सैंटनर ने रीजा हेंड्रिक्स (16) को बोल्ड कर दक्षिण अफ्रीका को तीसरा झटका दिया।

सेनुरन मुथुसामी सात रन बनाकर ईश सोढ़ी का शिकार बने। कप्तान रासी वान डेर डुसेन (छह) रनआउट हुये। इसके बाद 12वें ओवर में मैट हेनरी ने डेवाल्ड ब्रेविस को आउटकर न्यूजीलैंड को छठी सफलता दिलाई। डेवाल्ड ब्रेविस ने 18 गेंदों में तीन छक्के और एक चौका लगाते हुए (35) रनों की पारी खेली। 14वें ओवर की पहली गेंद

पर सोढ़ी ने कॉर्बिन बॉश (आठ) को पगबाधा आउट किया। 18वें ओवर में जेबक डफी ने जॉर्ज लिंडे (30) को कॉन्वे के हाथों कैच आउट कराकर दक्षिण अफ्रीका को आठवां झटका दिया। इसक बाद वेन मफाका (शून्य) को डफी ने चलता कर दिया। 19वें ओवर की दूसरी गेंद पर मैट हेनरी ने गेराल्ड कोएत्जी (17) को आउट कर दक्षिण अफ्रीका की पारी का 152 के स्कोर पर अंत कर दिया।

ब्रिटेन की तारा पर डोपिंग मामले में 4 साल का प्रतिबंध

लंदन, 16 जुलाई। खेल पंचाट ने ब्रिटेन की महिला टेनिस खिलाड़ी तारा मूर पर डोपिंग अपराध के लिए चार साल का प्रतिबंध लगाया है। खेल पंचाट न्यायालय (कैस) ने अंतरराष्ट्रीय टेनिस इंटीग्रिटी एजेंसी (आईटीआईए) की अपील पर सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदर्शन बढ़ाने वाली दवाओं के सेवन के लिए मूर को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए। मूर पर चार साल का प्रतिबंध तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

उच्च न्यायालय जयपुर में एक रिट याचिका दायर

आरसीए की तदर्थ समिति के कन्वीनर के रूप में दीनदयाल कुमावत की नियुक्ति पूरी तरह अवैध : चौधरी

जयपुर, 16 जुलाई। जिला क्रिकेट संघ सवाई माधोपुर की विधिवत निर्वाचित कार्यकारिणी अध्यक्ष रामराज चौधरी, सचिव डॉ. सुमीत गर्ग, कोषाध्यक्ष कमलेश गुर्जर द्वारा उच्च न्यायालय, जयपुर में एक रिट याचिका दायर की गई है। इस याचिका में यह अपील की गई है कि राजस्थान क्रिकेट संघ की तदर्थ समिति के कन्वीनर के रूप में दीनदयाल कुमावत की नियुक्ति पूरी तरह अवैध, असंवैधानिक और न्यायालय के पूर्व आदेशों के प्रतिकूल है, क्योंकि दीनदयाल कुमावत नाम का व्यक्ति वर्तमान में जिला क्रिकेट संघ सवाई माधोपुर की विधिक मान्यता प्राप्त कार्यकारिणी का प्राइमरी सदस्य भी नहीं है। जिला क्रिकेट संघ सवाई माधोपुर की वैध कार्यकारिणी को पूर्व में न्यायालय व अपीलीय प्राधिकारी द्वारा अंतिम आदेशों में मान्यता दी जा चुकी है, जिन पर अब तक किसी भी उच्च न्यायालय द्वारा कोई रोक नहीं लगाई गई है। ऐसे व्यक्ति को कन्वीनर नियुक्त करना न्यायालयों के आदेशों की अवमानना

और खेल संघों की स्वायत्तता पर सीधा प्रहार है। अत: रिट याचिका में उच्च न्यायालय से अनुरोध किया गया है कि दीनदयाल कुमावत की नियुक्ति को तुरंत प्रभाव से निरस्त किया जाए, जिससे जिला क्रिकेट संघ सवाई माधोपुर की वैधानिक और लोकतांत्रिक ढंग से निर्वाचित कार्यकारिणी के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप रोका जा सके। जिला क्रिकेट संघ सवाई माधोपुर यह स्पष्ट करता है कि वह न्यायालय के आदेशों और खेल संघों की लोकतांत्रिक व्यवस्था का सम्मान करता है और किसी भी प्रकार की अवैध नियुक्ति या हस्तक्षेप का पूरी मजबूती से विरोध करता रहेगा।

वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स 2025 में भारतीय महिला बास्केटबॉल टीम का हिस्सा बनेगी

जयपुर, 16 जुलाई। राजस्थान ने बास्केटबॉल में भारत का नाम रोशन किया है। लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान, ग्वालियर की दो राजस्थानी खिलाड़ी मानवी श्रीवास्तव, जयपुर और सोनल महला, सीकर राजस्थान और महाराष्ट्र की संजना पिंटो, वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स 2025 में भारतीय महिला बास्केटबॉल टीम का हिस्सा बनेंगी। यह प्रतियोगिता 16 जुलाई से 27 जुलाई तक जर्मनी के राइन-रुहर में आयोजित हो रही है। तीनों खिलाड़ी आज जर्मनी के लिए रवाना हुईं, भारत का प्रतिनिधित्व करने का सपना लिए हुए। राजस्थान की दो बेटियों का चयन, राज्य के लिए गर्व की बात है और यह दर्शाता है कि प्रदेश खेलों, विशेषकर बास्केटबॉल, में नई ऊंचाइयों को छू रहा है। यह सफलता खिलाड़ियों की मेहनत और एलएनआईपीई के उत्कृष्ट प्रशिक्षण का परिणाम है।

आरसीए एडहॉक कमेटी मीटिंग आज आयोजित होगी

जयपुर 16 जुलाई। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत ने बताया कि राजस्थान क्रिकेट संघ एडहॉक कमेटी मीटिंग कल दिनांक 17 जुलाई को दोपहर 4 बजे आरसीए ऑफिस, आरसीए अकादमी, सवाई मान सिंह स्टेडियम पर आयोजित की जाएगी।

एसएमएस स्टेडियम में डोपिंग रोधी शिक्षा एवं जागरूकता सेमीनार 18 को नाडा के विकास त्यागी और ओपी शर्मा करेंगे खिलाड़ियों को जागरूक

जयपुर, 16 जुलाई। राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा डोपिंग रोधी शिक्षा एवं जागरूक्ता सेमीनार का आयोजन 18 जुलाई को प्रात: 11 बजे से सवाई मानसिंह इंडोर स्टेडियम में किया जायेगा। राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने बताया कि राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी (नाडा) ने खेल परिषद के प्रशिक्षको और खिलाडियों के लिए शुक्रवार को एक सेमीनार का आयोजन किया है। इस सेमीनार का मुख्य उद्देश्य खेलों में स्वच्छ वातावरण तैयार करने और डोप-मुक्त वातावरण बनाना है। साथ ही शिक्षा, परीक्षण और प्रवर्तन के माध्यम से डोपिंग को रोककर खेलों की अखंडता और एथलीटों के स्वास्थ्य की रक्षा करना है। उन्होने बताया कि इन सब चीजो के दुष्प्रभावों से प्रशिक्षको व खिलाडियों को जागृत किया जायेगा।

उन्होने बताया कि इस सेमीनार के द्वारा खिलाडियों को नशीली दवाईओं व इंजेक्शन आदि के दुष्प्रभावें के बारे में गाईड किया जायेगा, जिससे वे आने वाले समय में इन सभी से दूर रहें। सेमीनार में नाडा के डोप कन्ट्रोल ऑफिसर कम एजुकेटर विकास त्यागी खिलाडियों व प्रशिक्षको को नाडा के बारे में बताएंगे साथ ही ओपी शर्मा, डोप कन्ट्रोल ऑफिसर कम एजुकेटर भी सेमीनार में अपने विचार व्यक्त करेगें। राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने बताया कि सेमीनार में एथलीटों और सभी संबंधित प्रशिक्षको, अभिभावक, फिजियोथेरेपिस्ट, टीम मैनेजर और पोषण विशेषज्ञो का भाग लेना अनिवार्य है। इसमें खेल परिषद के संविदा प्रशिक्षको सहित सभी प्रशिक्षक व संबंधित खेलो के खिलाडी भाग लेंगे।

मुख्य खेल अधिकारी व द्रोणाचार्य पुरस्कार विजेता वीरेन्द्र पूनिया ने बताया कि डोपिंग से खिलाडियों का न केवल खेल करियर प्रभावित होता है, बल्कि उनके स्वास्थ्य पर भी विपरित प्रभाव पडता है। इस लिए उन्होने एथलीटो को इन चीजो से दूर रहने की सलाह दी।

'अगर भारत, ब्राज़ील और चीन ने रूस से तेल खरीदना जारी रखा तो आर्थिक प्रतिबंध लगाए जाएंगे'

ट्रंप के बाद अब नाटो के महासचिव ने भी खुली धमकी दी

वॉशिंगटन, 16 जुलाई। नाटो के महासचिव मार्क रुटे ने बुधवार, 15 जुलाई को चेतावनी दी कि अगर ब्राजील, चीन और भारत जैसे देश रूस के साथ अपना व्यापार करना जारी रखते हैं तो उन पर भी आर्थिक प्रतिबंध (सेकेंडरी सैंक्शंस के रूप में) लगाए जा सकते हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक दिन पहले ही यूक्रेन के लिए नाटो के माध्यम से नए हथियारों की घोषणा की थी और साथ में 50 दिनों में शांति समझौता नहीं होने की स्थिति में रूस से सामान खरीदने वाले देशों पर 100 प्रतिशत के सेकेंडरी टैरिफ लगाने की धमकी भी दी थी। ट्रंप के इस ऐलान के अगले दिन नाटो महासचिव अमेरिकी कांग्रेस में सीनेटरों के साथ बैठक को संबोधित कर रहे थे और यहीं पर उन्होंने ब्राजील, चीन और भारत जैसे देशों को यह धमकी दी।

■ नाटो चीफ ने पत्रकारों से कहा कि, पुतिन को फोन कर शांति वार्ता में गंभीर होने को कहें नहीं तो भारत, चीन और ब्राज़ील को इसकी उलटी मार झेलनी होगी।

रुटे ने सोमवार को राष्ट्रपति ट्रंप से मुलाकात की थी। उन्होंने बुधवार को पत्रकारों से कहा, इन तीन देशों को मेरा परामर्श, विशेष रूप से यह है कि यदि आप अभी बीजिंग में रहते हैं, या दिल्ली में हैं, या आप ब्राजील के राष्ट्रपति हैं, तो आप शायद इस पर गौर करना चाहेंगे, क्योंकि यह आपको बहुत भारी पड़ सकता है।

रुटे ने कहा, "तो कृपया व्लादिमीर पुतिन को फोन करें और उन्हें बताएं कि उन्हें शांति वार्ता के बारे में गंभीर होना होगा, नहीं तो इसकी उलटी मार ब्राजील, भारत और चीन को बड़े पैमाने पर झेलनी होगी।"

रिपब्लिकन अमेरिकी सीनेटर थॉम टिलिस ने इन कदमों की घोषणा के लिए ट्रंप की तारीफ की, लेकिन कहा कि 50 दिन की देरी उन्हें "चिंतित" करती है।

उन्होंने कहा कि उन्हें चिंता है कि पुतिन युद्ध जीतने के लिए 50 दिनों का उपयोग करने की कोशिश करेंगे, या हत्या करने और संभावित रूप से बातचीत के आधार के रूप में अधिक जमीन हथियाने के बाद शांति समझौते पर बातचीत करने के लिए बेहतर स्थिति में होंगे।

उन्होंने कहा, "इसलिए हमें आज यूक्रेन की वर्तमान स्थिति को देखना चाहिए और कहना चाहिए, चाहे आप अगले 50 दिनों में कुछ भी करें, आपका कोई फायदा होने नहीं जा रहा है।"

स्वर्ण मंदिर को लगातार तीसरे दिन बम की धमकी

अमृतसर, 16 जुलाई। अमृतसर स्थित स्वर्ण मंदिर को एक बार फिर बम से उड़ाने की धमकी मिली है। ये लगातार तीसरा दिन है, जब इस तरह की धमकी फिर दी गई है।

इस धमकी को लेकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) ने पुलिस को इसकी शिकायत दी है। कमेटी ने पुलिस से पूरे मामले की जांच करके धमकी देने वालों पर तुरंत एक्शन लिए जाने की मांग की है। एसजीपीसी के अध्यक्ष हरजिंदर सिंह धामी ने कहा कि दरबार साहिब के संबंध में लगातार धमकियाँ मिल रही हैं। बीते लंबे समय से मैं देख रहा हूं कि समूची मानवता के आस्था के केन्द्र दरबार साहिब पर समय-समय पर हमले भी हुए और इसे नुकसान भी पहुंचाया जाता रहा है। 1984 में भी बहुत बड़ा नुकसान किया गया था। 14 जुलाई से लगातार धमकियां मिल रही हैं।

■ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने पुलिस में शिकायत कर जल्द ही एक्शन लेने की मांग की है।

चाहो तो साथ आ जाओ, फड़नवीस ने उद्धव ठाकरे को दिया ऑफर

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस के इस ऑफर से महाराष्ट्र की राजनीति में खलबली मच गई है

पुणे, 16 जुलाई। महाराष्ट्र की राजनीति में एक बार फिर हलचल मच गई है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने विधानसभा में बड़ा बयान देते हुए कहा कि 2029 तक भाजपा या उनका गठबंधन विपक्ष में जाने वाला नहीं है। उन्होंने शिवसेना (उद्धव गुट) प्रमुख उद्धव ठाकरे को इशारों में सत्ता पक्ष में शामिल होने का ऑफर भी दिया। यह बयान उस वक्त आया है जब बृहन्मुंबई महानगरपालिका चुनाव नजदीक हैं और राजनीतिक समीकरण तेजी से बदल रहे हैं।

भाजपा की यह रणनीति बीएमसी चुनाव से पहले शिवसेना (उद्धव गुट) की स्थिति को कमजोर करने का प्रयास भी हो सकती है।

विधान परिषद सत्र के दौरान बोलते हुए देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि कम से कम 2029 तक हमारे विपक्ष में जाने की कोई संभावना नहीं है। भरी विधान परिषद में उन्होंने कि उद्धव जी चाहें तो इस तरफ आने के बारे में सोच सकते हैं।

■ फड़नवीस ने कहा कि महायुति गठबंधन 2029 तक तो सत्ता में ही रहेगा।

कम से कम 2029 तक तो हम विपक्ष में नहीं आएंगे। इस बयान के बाद अब एक और संभावित गठबंधन की अटकलें तेज हो गई हैं। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि यह विचार एक अलग तरीके से किया जा सकता है, जिससे यह बयान और ज्यादा सियासी मायनों से भर गया है।

पिछली बार बीएमसी में शिवसेना और भाजपा के बीच कांटे की टक्कर थी। बीएमसी फिलहाल उद्धव ठाकरे गुट के नियंत्रण में है। भाजपा चाहती है कि इस बार वह बीएमसी पर कब्जा करे और इसके लिए वह सभी राजनीतिक समीकरण साधने में जुट गई है।

एसीबी केस ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

क्रमोन्नत करने के लिए जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में आवेदन किया था। अभियुक्त कनिष्ठ लेखाकार शीशराम ने मान्यता से पहले निरीक्षण करने को कहा। बाद में 3 मई, 2008 को फोन कर 8 मई को समस्त रिकॉर्ड एवं खर्चे के नाम पर छः हजार रुपए लेकर आने को कहा। एसीबी ने 12 मई, 2008 को शीशराम को पांच हजार रुपए लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया था।

दादिया में गुरुवार...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

संबंध में विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को आमजन के लिए जरूरी सुविधाएं एवं बारिश के मौसम को ध्यान में रखते हुए उचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया।

कार्यक्रम की तैयारी के लिए जहां राज्य सरकार पूरी तरह से लगी हुई है, वहीं, उसके साथ भाजपा की ओर से भी तैयारी की जा रही है। प्रशासन द्वारा दादिया में बड़ा सभा स्थल तैयार किया गया है, जिसमें प्रदेश के करीब 1 लाख लोग शामिल होंगे। इसके लिए दादिया में रिंग रोड पर स्थित सभा स्थल में तीन डोम बनाए गए हैं। इन तीनों डोम में लगभग एक लाख लोगों के बैठने की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा सहकार उत्सव व रोजगार मेले का भी आयोजन किया जाएगा, जिसमें अलग-अलग स्टॉल लगाई जाएंगी। सभा स्थल पर एक मंच तैयार किया गया है और तीन डोम, पार्किंग एवं सारी व्यवस्थाएं की गई है।

सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, सांसद मदन राठौड़, सीपी जोशी, मुख्य सचिव सुधांश पंत, पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा सहित, संबंधित उच्चाधिकारी मुख्यमंत्री के साथ थे।

हाईकोर्ट ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रार्थी के पक्ष में स्टे दे रखा था। वहीं, शिकायतकर्ता ने उसके खिलाफ 2022 में एफआईआर दर्ज कराई थी। पुलिस ने इस एफआईआर पर कार्रवाई करते हुए 28 मई 2025 को प्रार्थी को अचानक ही अवैध रुप से गिरफ्तार कर लिया। इस कार्रवाई से पहले पुलिस ने न तो उसे कोई नोटिस दिया और न ही गिरफ्तारी का कोई कारण बताया, जबकि सुप्रीम कोर्ट कह चुका है कि गिरफ्तारी से पहले आरोपी को नोटिस देना और इसका कारण लिखित में बताना जरूरी है। इस प्रकार प्रार्थी के संवैधानिक अधिकारों के साथ-साथ, सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का भी उल्लंघन हुआ है।

आतंकियों ने पहलगाम में पर्यटकों की हत्या करने के बाद जश्न मनाया था

एक चश्मदीद गवाह ने एनआईए को दिए बयान में कहा कि आतंकियों ने हवा में गोलियां दागी थीं

श्रीनगर, 16 जुलाई। पहलगाम बैसरन में 26 निर्दोष नागरिकों की हत्या का आतंकियों ने जश्न मनाते हुए हवा में गोलियां भी दागी थीं। इसके बाद वे वहां से अपने किसी सुरक्षित ठिकाने की तरफ निकल गए।

यह जानकारी इस जघन्य कांड की जांच कर रही राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने जम्मू कश्मीर पुलिस की मदद से चिन्हित किए गए एक स्थानीय गवाह से हासिल की है। इसी गवाह ने आतंकियों के पकड़े गए दो मददगारों परवेज अहमद जोथड़ और बशीर अहमद जोथड़ को वहीं पास में एक पहाड़ी पर कुछ सामान के साथ देखा था।

आपको बता दें कि 22 अप्रैल 2025 को लश्कर-ए-तैयबा के आतंकियों ने, जिनकी संख्या पहले पांच तक बताई जा रही थी तथा अब तीन बताई जाती है, ने बैसरन पहलगाम में 25 पर्यटकों और एक स्थानीय घोड़ेवाले की हत्या की थी। इस जघन्य कांड को अंजाम देने वाले आतंकी अभी तक सुरक्षाबलों की पकड़ से दूर हैं।

एनआइए ने अभी तक इस मामले में उनके दो स्थानीय मददगारों परवेज अहमद जोथड़ और बशीर अहमद जोथड़ को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। इसके अलावा एनआइए ने एक स्थानीय नागरिक का भी पता लगाया है, जिसे आतंकियों ने बैसरन से निकलते हुए रोका था।

एनआइए से जुड़े सूत्रों के अनुसार, इस मामले में अभी तक जिन गवाहों के बयान दर्ज किए हैं, उनमें सबसे अहम यही एक स्थानीय गवाह है। एनआइए ने इसे जम्मू कश्मीर पुलिस की मदद से चिन्हित किया है। पूछताछ में इसने बताया कि मौत का नंगा नाच खेलने के बाद आतंकी जब बैसरन से निकल रहे थे तो वहीं रास्ते में उसका सामना आतंकियों से हुआ था। आतंकी तीन ही थे।

■ एनआईए, जो पहलगाम हमले की जांच कर रही है, ने उक्त गवाह को "स्टार प्रोटैक्टेड" श्रेणी में रखा है।

■ गवाह ने बताया कि आतंकी तीन ही थे, दो तो उनके स्थानीय मददगार थे, गवाह ने उन दोनों की पहचान की है।

उन्होंने पहले उसे भी पर्यटक समझा, लेकिन जब उसने कहा कि वह पर्यटक नहीं, स्थानीय नागरिक है, तो पहले उन्होंने उससे उसका नाम पूछा और फिर उसे कलमा पढ़ ने को कहा। उसने अपना नाम बताया और कलमा भी पढ़ ा। इससे आतंकियों को उसके मुस्लिम व स्थानीय कश्मीरी होने का यकीन हो गया। उन्होंने उसे छोड़ दिया और फिर वहीं उसी समय हवा में ऐसे गोलियां दागी, जैसे वे किसी जीत का जश्न मना रहे हों।

उक्त गवाह के अनुसार, उसने वहीं कुछ ही दूरी पर परवेज और बशीर को भी खड़े देखा था। उनके पास कोई सामान था। वे दोनों पहले से ही आतंकियों का इंतजार कर रहे थे। उक्त गवाह के अनुसार, वह स्थानीय होने के कारण इन दोनों को अच्छी तरह से पहचानता है। उसने हमलावर आतंकियों में सुलेमान उर्फ सुलेमानी उर्फ हाशिम के शामिल होने की भी पुष्टि की है।

एनआइए ने उक्त गवाह को स्टार प्रोटेक्टिड की श्रेणी में रखा है। उसने जिस जगह आतंकियों के साथ आमना, सामना होने की जानकारी दी है, एनआइए ने वहां से कुछ चले हुए कारतूस भी बरामद किए हैं।

कांग्रेस शासन में लगे सरकारी वकीलों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नियुक्त हुए थे। याचिकाकर्ताओं के कार्यकाल को 5 अगस्त, 2024 को, नए वकीलों की नियुक्ति नहीं होने के आधार पर, बढ़ाया गया था। फिर गत 3 जुलाई को उन्हें इस पद से रिलीव कर दिया गया और उनके पद का कार्यभार दूसरे सरकारी वकीलों को दे दिया। याचिका में कहा गया कि पांच अगस्त के आदेश के बाद से अब तक परिस्थितियों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। याचिकाकर्ताओं के स्थान पर नई नियुक्ति नहीं की गई और दूसरे सरकारी वकीलों को ही अतिरिक्त कार्यभार दिया गया है। याचिका में कहा गया कि राज्य सरकार ने उन्हें राजनीतिक कारणों के चलते मनमानी से रिलीव किया है। ऐसे में रिलीव करने के आदेश को रद्द किया जाए।

मामले की सुनवाई करते हुए, एकलपीठ ने रिलीव आदेशों की क्रियान्विति पर अंतरिम रोक लगाते हुए संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

'न्यायिक सेवा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

है कि इस अनिवार्यता से दिव्यांगों एवं ट्रांसजेन्डर उम्मीदवार भी नुकसान में रहेंगे, क्योंकि उन्हें अदालतों तथा लॉ चैम्बर्स में समावेशी इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी प्रभावित करेगी।

याचिका में बार काउंसिल ऑफ इंडिया पर भी सवाल उठाए गए हैं कि वह, लिटिगेशन के दौरान, छात्रों के हितों की रक्षा में विफल रही है। इसमें कहा गया है कि बीसीआई न तो उच्च फीस, न ही अनियमित कानून कॉलेजों, और न ही वकीलों को समय पर पंजीकरण देने जैसी समस्याओं का समाधान कर सकी है।

कुल मिलाकर, बीसीआई की नियामक निष्क्रियता, खराब जवाबदेही तथा पारदर्शिता के अभाव के कारण न केवल कानूनी शिक्षा की गुणवत्ता में कमी आई है, बल्कि न्यायिक संकट में भी इसका योगदान रहा है, जिसका बोझ अभ्यर्थियों, खासतौर से वंचित वर्ग तथा कानून-संबंधी पृष्ठभूमि से रहित अभ्यर्थियों पर पड़ रहा है। अगर मुद्दा क्षमता एवं तैयारी का है, तो इसका मूल कारण केवल वकालत के अनुभव की कमी में नहीं, बल्कि संबंधित सिस्टम की असफलता में निहित है, क्योंकि बीसीआई इन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकी है तथा इस प्रकरण में बीसीआई की खामोशी और भी ज्यादा चिंताजनक है। पुनर्विचार याचिका में मांग की गई है कि मई 2025 के फैसले पर रोक लगाई जाये, इस नियम को 2026 बैच से लागू किया जाये, प्रभावित होने वाले उम्मीदवारों को अधिकतम उम्र सीमा में छूट दी जाये तथा इस नियम के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए विशेषज्ञ आयोग का गठन किया जाये। याचिका में अदालत से यह भी अनुरोध किया गया है कि बीसीआई को नामांकन और कॉलेज मान्यता प्रणाली में सुधार के निर्देश दिये जाये। इससे पहले, अधिवक्ता चंद्र सेन यादव ने भी एक याचिका दायर की थी, जिसमें इस नियम (तीन वर्ष की अनिवार्य वकालत) को संविधान के अनुच्छेद 14 और 16 के तहत मौलिक अधिकारों का उल्लंघन बताया गया था। सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय आलोचना का विषय बन गया है, विशेषकर इस कारण कि यह महिलाओं को न्यायिक सेवा की ओर बढ़ने से रोक सकता है या उनकी न्यायिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा होने में देरी कर सकता है।

चंद्रबाबू...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर्दे के पीछे, 2027 के संभावित राजनीतिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए गंभीर पुनर्विचार की प्रक्रिया चल रही है।

भारतीय सेना ने आकाश प्राइम एयर डिफेंस सिस्टम का सफल परीक्षण किया

परीक्षण लद्दाख में 15,000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर किया गया

नई दिल्ली, 16 जुलाई। भारतीय सेना ने बुधवार को स्वदेशी रूप से विकसित किए गए आकाश प्राइम एयर डिफेंस सिस्टम का सफल परीक्षण किया। यह परीक्षण लद्दाख क्षेत्र में 15,000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर किया गया। परीक्षण सेना ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में हुआ, जिन्होंने इस प्रणाली को विकसित किया है।

परीक्षण के दौरान सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों ने बहुत तेज गति से उड़ रहे हवाई लक्ष्यों पर सीधा प्रहार किया। यह परीक्षण बहुत अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्र में किया गया।आकाश प्राइम सिस्टम अब भारतीय सेना की हवाई सुरक्षा की तीसरी और चौथी यूनिट (रेजिमेंट) का हिस्सा बनेगा। इसका मतलब है कि अब यह नई प्रणाली सेना की और दो टुकड़ियों में शामिल की जाएगी ताकि दुश्मन के हवाई हमलों से और बेहतर तरीके से रक्षा की जा सके।

रक्षा अधिकारियों के अनुसार, इस प्रणाली ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भी बहुत अच्छा प्रदर्शन किया था। उस समय पाकिस्तान की सेना द्वारा चीनी विमानों और तुर्किये के ड्रोन से किए गए हवाई हमलों को इस प्रणाली ने सफलतापूर्वक नाकाम किया था। आकाश प्राइम सिस्टम भारत की रक्षा तकनीक में आत्मनिर्भर बनने की बड़ी कोशिश का हिस्सा है, खासकर वायु सुरक्षा जैसे अहम क्षेत्र में।

■ रक्षा अधिकारियों ने बताया कि इस सिस्टम ने ऑपरेशन सिंदूर में भी शानदार प्रदर्शन किया था।

सुप्रीम कोर्ट ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कहा कि इस मामले में फिल्म डायरेक्टर के साथ कन्हैयालाल के बेटे को भी जान से मारने की धमकी मिल रही है। इस पर कोर्ट ने निर्देश दिए कि इस मामले में संबंधित कमीशन और एसपी इसका आंकलन करें।

इंडिगो फ्लाइट की मुंबई में इमरजैंसी लैंडिंग

नई दिल्ली, 16 जुलाई। दिल्ली से गोवा जा रही इंडिगो फ्लाइट को मुंबई में इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी क्योंकि विमान का एक इंजन फेल हो गया था। मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर इंडिगो फ्लाइट को इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी।

इंडिगो प्रवक्ता ने कहा कि दिल्ली से मनोहर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे, गोवा के लिए उड़ान भरते समय उड़ान संख्या 6ई 6271 में तकनीकी खराबी का पता चला। प्रक्रियाओं का पालन करते हुए, विमान को दूसरी दिशा में मोड़ दिया गया और मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतारा गया।

■ दिल्ली से गोवा जा रही फ्लाइट का एक इंजन फेल हो गया था।

सूत्रों ने बताया कि एयरबस ए320एनईओ से संचालित इस उड़ान की रात 9.52 बजे आपातकालीन लैंडिंग हुई। उड़ान में सवार लोगों की संख्या का तुरंत पता नहीं चल सका है।

इंडिगो ने बयान जारी कर कहा कि विमान यात्रा पूरी करने के लिए एक वैकल्पिक विमान की व्यवस्था की गई है।

भारत को "फिफ्थ जैनरेशन"...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हेलीकॉप्टर 2015 में अमेरिका और बोइंग के साथ हुए समझौते के तहत मिले थे। इस बार जो छह अपाचे मिल रहे हैं, वे 2020 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की भारत यात्रा के दौरान हुए 600 मिलियन डॉलर के सौदे का हिस्सा हैं, और इन्हें भारतीय सेना को दिया जाएगा।

अपाचे के साथ-साथ, भारत के घरेलू फाइटर जेट प्रोग्राम एएमसीए को भी बड़ा प्रोत्साहन मिला है। सरकार ने इसके "एग्ज़ीक्युटिव मॉडल" को मंजूरी दे दी है। यह फाइटर जेट पूरी तरह से भारत में बनेगा और 5वीं पीढ़ी का स्टैल्थ फाइटर होगा, जिसमें गहराई तक घुसकर हमला करने की क्षमता होगी। यह भारत को अमेरिका, रुस व चीन के समकक्ष पहुंचा देगा, जिनके पास उनके देश में ही बने पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान हैं।

इस प्रोजेक्ट का नेतृत्व डीआरडीओ और एरोनॉटिकल डेवलपमेंट एजेंसी (एडीए) कर रही हैं, और इसमें एचएएल (हिन्दुस्तान एटोनॉटिकल लिमिटेड) भी सहयोग कर रहा है। यह दो इंजन वाला मल्टी-रोल फाइटर होगा, जिसमें स्टैल्थ, सुपरक्रूज़, इंटरनल वेपन बे, और एडवांस इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सिस्टम जैसी खूबियाँ होंगी। इसे भविष्य में अपग्रेड करने के लिए मॉड्यूलर डिज़ाइन में बनाया जाएगा, जिसमें बिना पायलट के उड़ान की क्षमता भी शामिल हो सकेगी।

सरकारी मंजूरी के बाद, अब दो टैक्नॉलजी डैमोंस्ट्रेटर और पांच लिमिटेड सीरीज़ प्रोडक्शन यूनिट बनाए जाएंगे। इसका पहला उड़ान परीक्षण अभी वर्षों दूर है और माना जा रहा है यह 2030 के आसपास काम करने लगेगा। लेकिन यह कदम भारत की 'आत्मनिर्भर भारत' योजना के तहत रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक मजबूत इशारा है। इस समय भारतीय वायुसेना एसयू-30 एमकेएल और राफेल जैसे चौथी पीढ़ी के विमानों पर निर्भर है। जब तक एएमसीए पूरी तरह तैयार नहीं होता, भारत 5वीं पीढ़ी के कुछ विमान बाहर से खरीदना जारी रख सकता है। लेकिन डिज़ाइन, निर्माण और रक्षा निर्यात क्षमता की दिशा में एएमसीए भारत की दीर्घकालिक सोच है।

अपाचे हेलीकॉप्टरों की तैनाती और एएमसीए प्रोजेक्ट की मंजूरी भारत की दोहरी रणनीति को दर्शाती है। एक ओर, अभी के लिए क्षमता की कमी को पूरा करना, और दूसरी ओर, भविष्य के लिए स्वदेशी रक्षा ढांचा खड़ा करना। एक तरफ अपाचे जांचा परखा "अजेय उड़न दुर्ग" है, और दूसरी ओर एएमसीए तकनीकी संप्रभुता की एक साहसी योजना है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा। आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908